# जीनोम मैपिंग

## (४५० ए.डी. सँ २००९ ए.डी.)

## – मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

खण्ड १ - ३

( डिजिटल इमेजिंग, मिथिलाक्षर अंकन, देवनागरी लिप्यंतरण आ सम्पादन )

गजेन्द्र ठाकुर
नागेन्द्र कुमार झा
पञ्जीकार विद्यानन्द झा

**श्रुति प्रकाशन**
दिल्ली

# अनुक्रम

0.93 - 0.183

खण्ड - १ : प्राचीन पञ्जी 1.1 - 1.337

1.1 - 1.337

खण्ड - २ : उपटीप 2.1 - 2.147

2.1 - 2.147

खण्ड - ३ : नगराम 3.1 - 3.316

3.1 - 3.316

# जीनोम मैपिंग

**(४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.) - मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध**

पञ्जी प्रबन्ध पूर्व मध्य कालमे ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय वर्गक जाति शुद्धताक हेतु निर्मित कएल गेल । कोनो ब्राह्मणक जाति शुद्धताक हेतु उतेढ़ जानब आवश्यक छल।उतेढ़ छल सात पुरुषक परिचय, जाहि हेतु एहि बत्तीस कुलक परिचय आवश्यक छल- पिता एवं माताक पितामह एवं पितामही आ मातामह एवं मातामही केर पितामह एवं पितामही आ माता एवं मातामही केर पिता। आ एहि बत्तीस पूर्वजसँ विवाहयोग्य व्यक्ति सातम पड़बाक चाही।एहि क्रममे श्रोत्रिय,योग्य आ पञ्जीबद्ध श्रेणीक विभाजन गेल। जे पञ्जीबद्ध नहि छलाह से जएबार भेलाह। उतेढ़मे श्रोत्रिय मातृपक्षमे पाँच पीढ़ी आ पितृपक्षमे सात पीढ़ी त्यागि विवाह करैत छलाह।पञ्जीबद्ध लोकनि जिनका वंशज सेहो कहल जाइत अछि,मातृ पक्षमे पाँच आ पितृ-पक्षमे छः पीढ़ी त्यागि कय विवाह करैत छलाह। सम्प्रति धर्मशास्त्रसँ श्रोत्रिय-योग्य-पञ्जीबद्ध आ तथाकथित जएवार सभहिक हेतु एकहि व्यवस्था अछि, भिन्न किछु नहि।२० प्रकारक गोत्र १६७ प्रकारक मूल आ अनेक प्रकारक मूलग्राममे ई सभ विभक्त छल। पुनः कर्मकाण्डक आधार पर सामवेदी आ शुक्ल यजुर्वेदी ब्राह्मणक दू गोट उर्ध्वाधर विभाजन क्रमशः छन्दोग्य आ वाजसनेय ब्राह्मणक रूपमे बनले रहल।२० गोट गोत्र आ १६७ मूल ग्राममे मुख्य मूल ३४ टा निर्धारित कएल गेल। एहि १६७ मूलसँ सेहो ई सभ विभिन्न क्षेत्र आ ग्राममे पसरलाह। *परवर्ती कालमे फनन्दह मूलक खनाम शाखा ३५म मूलक रूपमे तथाकथित उच्च वंशक मध्य परिगणित भेल।*

२० गोट गोत्र निम्न प्रकारे अछि: १. शाण्डिल्य २. वत्स ३. सावर्ण ४. काश्यप ५. पराशर ६. भारद्वाज ७. कात्यायन ८. गर्ग ९. कौशिक १०. अलाम्बुकाक्ष ११. कृष्णात्रेय १२. गौतम १३. मौदगल्य १४. वशिष्ठ १५. कौण्डिन्य १६. उपमन्यु १७. कपिल १८. विष्णुवृद्धि १९. तण्डी आ जातुकर्ण।

मुख्य ३५ (३४+ *फनन्दह मूलक खनाम शाखा)* मूल सेहो तीन श्रेणीमे विभक्त अछि।

अयान्त श्रेष्ठ- प्रथम श्रेणीमे १. खड़ौरय, २. खौआड़य, ३. बुधबाड़य, ४. मड़रय, ५. दरिहरय, ६. घुसौतय, ७. तिसौतय, ८. करमहय, ९. नरौनय, १०. वभनियामय, ११. हरिअम्मय, १२. सरिसवय, १३. सोदरपुरिये।

द्वितीय श्रेणीमे १. गंगोलिवार, २. पवौलिवार, ३. कुजौलिवार, ४. अलेवार, ५. वहिड़वार, ६. सकड़िवार, ७. पलिवार, ८. विसेवार, ९. फनेवार, १०. उचितवार, ११. पंडुलवार, १२. कटैवार, १३. तिलैवार।

मध्यम मूल- १. दिघवे, २. बेलौंचै, ३. एकहरे, ४. पंचोभे, ५. वलियासे, ६. जजिवाल, ७. टकवाल, ८. पण्डुए।

प्रवर:मैथिल ब्राह्मणक मध्य २ वर्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।

एहि प्रकारेँ गोत्रानुसारे प्रवर निम्न प्रकार भेल:-

त्रिप्रवर- १.शाण्डिल्य, २.काश्यप,३. पराशर, ४. भारद्वाज, ५. कात्यायन, ६. कौशिक, ७. अलाम्बुकाक्ष, ८. कृष्णात्रेय, ९. गौतम, १०. मौदगल्य, ११. वशिष्ठ, १२. कौण्डिन्य, १३. उपमन्यु, १४. कपिल, १५. विष्णुवृद्धि, १६. तण्डी।

पंचप्रवर- १. वत्स, २. सावर्ण, ३. गर्ग।

प्रवरक विस्तृत विवरण निम्न प्रकारेँ अछि-

१. शाण्डिल्य- शाण्डिल्य, असित आ देवल। २. वत्स-ओर्व, च्यवन,भार्गव,जामदगन्य आ आप्लवान। ३. सावर्ण- ओर्व, च्यवन, भार्गव, जामदगन्य आ आप्लवान। ४. काश्यप-काश्यप, अवत्सार आ नैघ्रूव। ५. पराशर-शक्ति, वशिष्ठ आ पराशर। ६. भारद्वाज-भारद्वाज, आंगिरस आ बार्हस्पत्य। ७. कात्यायन-कात्यायन, विष्णु आ आंगिरस। ८. गर्ग-गार्ग्य, घृत, वैशम्पायन, कौशिक आ माण्डव्याथर्वन। ९. कौशिक- कौशिक, अत्रि आ जमदग्नि. १०. अलाम्बुकाक्ष-गर्ग, गौतम आ वशिष्ठ. ११. कृष्णात्रेय-कृष्णात्रेय, आप्ल्वान आ सारस्वत. १२. गौतम-अंगिरा, वशिष्ठ आ बार्हस्पत. १३. मौदगल्य-मौदगल्य, आंगिरस आ बार्हस्पत्य. १४. वशिष्ठ-वशिष्ठ,अत्रि आ सांकृति. १५. कौण्डिन्य-आस्तिक,कौशिक आ कौण्डिन्य. १६. उपमन्यु-उपमन्यु, आंगिरस आ बार्हस्पत्य। १७. कपिल-शातातप, कौण्डिल्य आ कपिल. १८. विष्णुवृद्धि-विष्णुवृद्धि, कौरपुच्छ आ त्रसदस्य १९. तण्डी-तण्डी, सांख्य आ अंगीरस २०. जातुकर्ण- जातुकर्ण, आंगीरस आ भारद्वाज।

एहिमे सावर्ण आ वत्सक पूर्वज एके छथि ताहि हेतु दू गोत्र होइतो हिनका बीच विवाह नहि होइत छन्हि। छानदोग्य आ वाजसनेयक वैदिक युगीन उर्ध्वाधर विभाजन एकर संग रहबे कएल आ यज्ञोपवीत मंत्र/ विवाह विधि दुनूक भिन्न-भिन्न अछि। फेर यज्ञोपवीतमे तीन प्रवर आकि पाँच प्रवर देल जाय ताहि हेतु उपरका सूचीक प्रयोग कएल जाइछ।

भारतीय इतिहासक वेत्ता ओ जातीय व्यवस्थाक मर्मज्ञ लोकनि जनैत छथि, जे भारतवर्षक ब्राह्मण लोकनि सर्वप्रथम वेदक आधार पर विभिन्न वर्गमे विभाजित रहथि। जेना- सामवेदी, यजुर्वेदी, आदि कहाबथि। मुदा समयक प्रभावमे भिन्न क्षेत्र-प्रक्षेत्रमे रहनिहार ब्राह्मण लोकनि भिन्न-भिन्न संस्कृतिसँ प्रभावित भए गेलाह। क्षेत्रीय संस्कृतिसँ प्रभावित होएबाक मुख्य कारण छल विशिष्ट क्षेत्रक विशिष्ट जलवायु, क्षेत्र विशेषक भाषा-विशेष, भिन्न-भिन्न क्षेत्रक भिन्न-भिन्न आहार एवम भेष-भूषा आ एक क्षेत्र सँ दोसर क्षेत्र जयबाक हेतु आवागमनक असुविधा आदि। फलतः क्षेत्र-विशेषक ब्राह्मण समुदाय, क्षेत्र विशेषक आचार-विचार, खान-पान, वेश-भूषा, भाव-भाषा ओ सभ्यता संस्कृतिसँ प्रभावित भय गेलाह।

उपरोक्त कारणे पुरानक युग अबैत-अबैत भारत वर्षक ब्राह्मण समाज भिन्न-भिन्न क्षेत्रक आधार पर विभिन्न वर्गमे विभाजित भए गेलाह। पुरानक सम्मतिये भारत-वर्षक समस्त ब्राह्मण समाजकेँ दस(१०) वर्गमे विभाजित कएल गेल। ब्राह्मणक ई दसो वर्ग थीक-उत्कल,कान्यकुब्ज,गौड़,मैथिल,सारस्वत, कार्णाट,गुर्जर, तैलंग,द्रविड़ ओ महाराष्ट्रीय। स्थूल रूपेँ पूर्वोक्त पाँच केँ पञ्च गौड़ आ अपर पाँचकेँ पञ्च द्रविड़ कहल जाइत अछि। एकर सीमांकन भेल विन्ध्याचल पर्वतक उत्तर पञ्च गौड़ ओ विन्ध्याचल पर्वतक दक्षिण पञ्च द्रविड़।

मैथिल ब्राह्मण: पञ्च गौड़ वर्गक मैथिल ब्राहमण लोकनि पुस्ति-दर-पुस्त सँ मिथिलामे रहबाक कारणेँ मिथिलाक विशिष्ट संस्कृतिसँ प्रभावित भए गेलाह, तँय अहि कारणेँ पुराणक युगमे मैथिल ब्राह्मण कहाए सुप्रसिद्ध भेलाह। मिथिला वस्तुतः प्राचीन विदेह राजवंशक राजधानी रहए। मुदा पश्चातक युगमे विदेह राजवंशक समस्त प्रशासित क्षेत्र अथवा जनपद मिथिला कहाए सुप्रसिद्ध भेल आ एहि जनपदक रहनिहार ब्राह्मण लोकनि मैथिल ब्राह्मण कहओलन्हि। ई मिथिला आइ नेपाल ओ बंगलादेशक सीमा सँ सटैत अनुवर्त्तमान अछि, जे राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिसँ अपन एक विशिष्ट स्थान रखैत अछि।

मैथिल ब्राह्मण लोकनि मूलतः दुइए गोट वेदक अनुयायी थिकाह। एक वर्ग यजुर्वेदक माध्यान्दिन शाखाक अनुयायी थिकाह तँ दोसर सामवेदक कौथुम शाखाक अनुगमन करैत छथि। यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखाक अनुयायी “वाजसनेयी” कहबैत छथि, एहिना सामवेदक कौथुम शाखाक अनुयायी छन्दोग कहबैत छथि।दुहुक संस्कारमे किछु स्थूल अन्तरो अछि। छन्दोगक उपनयनमे चारि गोट संस्कार- नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन ओ समावर्त्तन, मुदा वाजसनेयीक ई चारू संस्कार थिक, चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ ओ समावर्त्तन। एहिना छन्दोग विवाह मुख्यतः दू खण्डमे सम्पन्न होइत अछि, पूर्व विवाह आओर उत्तर विवाह। उत्तर विवाह सूर्यास्तक बाद तारा (अरुन्धती) देखि कए होइत अछि। मुदा वाजसनेयी विवाहमे एहन कोनो विभाजन नहि अछि। एकहि क्रममे दिन अथवा रातिमे कखनहुँ भए सकैत अछि। वाजसनेयी ओ छन्दोगक धार्मिक संस्कारमे तँ सूक्ष्म अंतर कतौक अछि।

पुनश्च सप्तसिन्धु सँ प्राच्याभिमुखी यायावर ऋषि लोकनि गंगा ओ हिमालयक मध्यक सुभूमि मिथिलामे जाहि आर्यसंस्कृतिक बीज-वपन कएल, तकर मूल छल धर्म, धर्मक मूल छल जाति, ई जाति होयत एहि जन्मक विशुद्धिसँ, जन्मसँ विशुद्ध संतान होइत अछि!!

तखन जखन विवाहक अधिकार जाहि कन्यासँ हो तकरहिसँ विवाह कएला उत्तर प्राप्त संतान आर्य जातिक विवाहक नियम सभ सर्वप्रथम निबंधित भेल विभिन्न स्मृति सभमे। स्मृतिकार मनु ओ याज्ञवल्क्यक अनुसार ओहि कन्यासँ विवाहक अधिकार हो जे- १. समान गोत्रक नहि होथि, २. समान प्रवरक नहि होथि, ३. माइक सपिण्ड नहि होथि, ४. पिताक सपिण्ड नहि होथि, ५. पितामह अथवा मातामहक संतान नहि होथि, ६. कठमामक संतान नहि होथि।

एहि वैवाहिक अधिकारक निष्पादनार्थ कमसँ कम मनु ओ याज्ञवल्क्यक समयसँ तँ निश्चये लोक अपन ‘यावतो परिचय’ स्वयं अपनहि रखैत आबि रहल छल, मुदा पश्चातक युगमे ई प्रवृत्ति समाप्तप्राय भऽ गेल। विवाहक हेतु वर ओ कन्याक सम्पूर्ण परिचय तँ आवश्यके छल, जे आनहु धार्मिक संस्कारक हेतु सपिण्डत्वक विचार विवाहक अतिरिक्त श्राद्ध ओ अशौच प्रभृतिअहुमे आवश्यक होइत छल, एहि कारणेँ प्रागैतिहासिक कालहिसँ लोक अपन सांगोपांग परिचय रखैत छल। ओ ओकरहि अनुसार अपन धार्मिक क्रियाक निष्पादन करैत रहए। ई नियम सभ हमरा लोकनिक प्राचीनतम धर्मग्रंथ सभमे उपलब्ध अछि। स्मृति सभमे कहल गेल अछि, जे जनिकासँ विवाहक अधिकार नहि हो से स्वजना भेलीह। स्वजनासँ विवाहोपरांत प्राप्त संतान चाण्डाल बूझल जाइत छल। ओ आर्यत्वक मर्यादासँ बहिष्कृत मानल जाइत छल!! (एकर सए सँ बेशी अपवाद नीचाँ देल गेल अछि-आर बहुत रास भीतर पोथीमे भेटत।) अतः विवाहक पहिल चरण अधिकारक निर्णय रहल होयत। वर पक्ष ओ कन्या पक्षक लोक परस्पर बैसि अपन-अपन परिचयक आधार पर निर्णय करैत छल होएताह, जे ‘अमुक’ कन्यासँ ‘अमुक’ वरक विवाह हो वा नहि। मुदा परिचय रखबाक प्रवृत्तिक ह्रासक कारणेँ अधिकार-निर्णयक हेतु प्रत्येक परिवारक सुयोग्य ओ आस्थावान व्यक्ति अपन यावतो परिचय(३२ मूलक उल्लेख) लिखि कए राखय लगलाह। सातम शताब्दीसँ पूर्वहि एहि लिखित कौलिक परिचय ‘समूह लेख्य’ क उल्लेख सर्वप्रथम विद्वद्वरैण्य कुमारिल भट्ट रचित ‘तंत्र वार्त्तिक’मे भेल अछि, जे मीमांसा दर्शनक जैमिनी सूत्रक शबर द्वारा कएल भाष्यक गद्यात्मक ‘वार्त्तिक’ थीक। तंत्रवार्त्तिक दर्शनक ग्रंथ थीक जाहिमे यथार्थ वस्तुस्थितिक वर्णनसँ जातिक विशुद्धि सिद्ध कएल गेल अछि, जाहि आधार पर धर्मक

निरूपण भए सकैत। कुमारिल भट्टक कहब छलन्हि जे “बड़का कुलीन लोक बड़ विशेष प्रयत्नसँ अपन जातिक रक्षा करैत छथि। तँहि तऽ क्षत्रिय ओ ब्राह्मण अपन पिता-पितामहादिक परम्परा बिसरि नहि जाए तेँ समूह-लेख्य चलौलन्हि। ओ प्रत्येक कुलमे गुण आ दोष देखि ओहि अनुरूप सम्बंध करबामे प्रवृत्त होइत छथि”।

“विशिष्टैनैव हि प्रयत्नेन महाकुलीनाः परिक्षन्ति आत्मानम्  अनेनैव हि हेतुना राजाभिर्ब्राह्मणैश्च स्व पितृ-पितामहादि पारम्पर्‌या-विस्मर्णार्थं समूहलेख्यानिप्रवर्तितानि तथा च प्रतिकुलं गुण-दोष स्मर्णांतदनुरूपाः प्रभृति-निवृतयो दृश्यते”।(तंत्रवार्त्तिक, अध्याय १, पाद-२, सूत्र-२क वार्त्तिक)

मुदा तेरहम शताब्दीक उत्तरार्‌ध होइत-होइत साधारण लोकक कोन कथा पण्डित लोकनि सेहो समूह लेख्य राखब छोड़ि देलन्हि। एकर परिणाम ई भेल जे पं हरिनाथ उपाध्याय (धर्म-शास्त्रक महान ज्ञाता) “स्मृतिसार” सन धर्मशास्त्रक विषयक ग्रंथकर्त्ता ओ महापंडितक परिचयक अभावमे विवाह कए लेल, स्वजनमे अनधिकारमे अपन साक्षात पितयौत भाइक दौहित्रीमे। फलतः चौदहम शताब्दीक तृतीय दशक होइत-होइत एहि कौलिक परिचयकेँ विशिष्ट पण्डितक अधीन कए देबाक आवश्यकताक अनुभव कएल जे विवाहक समय अधिकारक निर्णय कए सकथि। मिथिलाक तत्कालीन शासक राजा हरिसिंहदेवक प्रेरणासँ मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे निर्णय कएलन्हि, जे “परिचय राखब लोककेँ अपना पर नहि छोड़ल जाय, प्रत्युत ओकरा संगृहित कए विशिष्ट पण्डितजनक जिम्मा कए देल जाए, ओ ई राजकीय एक गोट विभाग बना देल जाए, जाहिसँ पण्डित राजाज्ञासँ नियुक्त होथि, सैह संगृहित परिचय राखथि। प्रत्येक विवाह तखनहि स्थिर हो जखन नियुक्त पंडित (पञ्जीकार) अधिकार जाँचि कए लिखिकऽ देथि, जे अमुक कन्या ओ अमुक वर ‘स्वजना’ नहि छथि। अर्थात् शास्त्रीयनियमानुसार कन्याक संग वरकेँ वैवाहिक अधिकार छन्हि। इयैह पत्र ‘अस्वजन पत्र’ वा ‘सिद्धांत पत्र’ कहौलक। आइयो कन्या वरक विवाह पूर्व अधिकार जँचाए सिद्धांत पत्र लेब आवश्यक बूझल जाइत अछि। पञ्जी-प्रबंधमे इएह सभसँ प्रधान नियम भेल जे बिनु सिद्धांत भेने विवाह अशास्त्रीय मानल जायत। ‘अस्वजन पत्र’ देनिहार राजाज्ञासँ नियुक्त इएह पण्डित पञ्जीकार कहओलाह। संगृहित परिचय जाहिमे प्रत्येक नव जन्म ओ विवाह जोड़ल जाय लागल से भेल पञ्जी। जिनकर पञ्जीमे नाम आएल से भेलाह पञ्जीबद्ध।

महाराज हरिसिंहदेव ओ तत्कालीन पण्डितक संयुक्त निर्णय अनुसार परिचेता लोकनिक नियुक्ति कए समस्त मैथिल ब्राह्मणक सम्पूर्ण परिचय संगृहित कएल गेल। परिचेता लोकनि घुमि-घुमि प्रत्येक परिवारक मुख्य व्यक्तिसँ हुनक परिचय पुछि लिखि लेल करथि। सामान्य रूँपे छओ पुरुषक परिचय सभ जनैत रहथि। किछु गोटा एहिसँ बहुतो अधिक परिचय जनैत रहथि। एहिना किछु गोटए मात्र दू वा तीन पुरुषाक ज्ञान रखैत छलाह। जे जतबा जनैत रहथि हुनकासँ ओतबहि संग्रह कए हुनकर पूर्वजक वास-स्थान, गोत्र, प्रवर तथा हुनक वेद ओ शाखाक सूचना लिखि लेल जाइत रहए। एहि संग्रहसँ एकहि कुलक अनेक शाखा जे विभिन्न ग्राममे बसैत छलाह, तकर परिचय एकत्र भए गेल। एहि रूपेँ गोत्रक अनुसार भिन्न-भिन्न कुलक सम्पूर्ण परिचय प्राप्त भए गेल। एहि परिचय संकलनक समय सभसँ प्रमुख मानल गेल बीजी पुरुष ओ मूल ग्रामकेँ। कारण कौलिक परिचयक हेतु सर्वाधिक उपयोगी इयैह सूत्र भेल। विभिन्न गाममे बसैत एकहि कुलक विभिन्न व्यक्तिक कौलिक परिचय एहि मूल ग्रामक आधार पर संगृहित कएल गेल रहए। एहि कारणे पञ्जीमे अनिवार्य रूपसँ मूल ग्रामक उल्लेख भेल अछि। पञ्जी-प्रबंधक समय जे व्यक्ति जतए बसैत रहथि से हुनक भावी संतानक ग्राम कहाओल ओ परिचय लिखौनिहार अपन पूर्वजक प्राचीनतम वास स्थानक जे नाम कहल से ओहि व्यक्तिक मूल भेल। एहिना प्रत्येक कुलक प्राचीनतम ज्ञात पूर्वज ओहि कुलक बीजी पुरुष कहाओल। एकर प्रमाणमे एक गोट उदाहरण देखल जाए सकैत अछि। काश्यप गोत्रीय एक महाकुल जकर चौहत्तरि शाखा मिथिलामे अनुवर्त्तमान अछि, संगृहित परिचयक आधार पर मूलतः माण्डर ग्रामक वासी सिद्ध भेलाह। मुदा पञ्जी-प्रबंधसँ बहुत पहिनहि, एकर दू गोट शाखा स्पष्टतः प्रमाणित भए गेल। एक मँगरौनी गामक आ दोसर गढ़-गामक। अतः पञ्जीमे आदिअहिसँ माण्डरक संग-संग गढ़ ओ मँगरौनी विशेषण जोड़ल जाए लागल। मुदा उपलब्ध परिचयक आधार पर दुनू एकहि कुलक दू शाखा सिद्ध भेल। तँय दुनू कुलक मूल एकहि भेल ओ बीजी पुरुष सेहो एकहि भेलाह।

गोत्र एना कहल जाइत अछि जे सकल गोत्रक समस्त जन समुदाय एकहि प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक वंशज थिकाह। ईएह प्राचीनतम ज्ञात महापुरुष गोत्र कहाए सुविख्यात छथि। श्री एम.पी. चिंतालाल राव महोदय चारि हजार गोत्रक सूची तैयार कएने छथि। “अमरकोष”मे गोत्रक हेतु तीन अर्थ देल गेल अछि- पर्वत, वंश आ नाम। “वाचस्पत्य” कोषमे गोत्रक एगारह अर्थ देल गेल अछि- पर्वत, नाम ,ज्ञान, जंगल,खेत,क्षत्र,संघ,धन, मार्ग, वृद्धि आ मुनि लोकनिक वंश। प्राचीन संस्कृत साहित्यमे गोत्र शब्दक प्रयोग प्रायः वंश वा पिताक नामक लेल भेल अछि। छान्दोग्य उपनिषद (४/४) मे जीवन गुरु सत्यकामसँ गोत्र पुछैत छथि तँ हुनक अभिप्राय सत्यकामक कुल अथवा पिताक नामसँ छन्हि। मुदा ऋगवेदमे गोत्रक उल्लेख चारि ठाम मेघ अथवा पहाड़क लेल आ दू ठाम पशु समूह अथवा जनसमुदाय अथवा पशु रक्षक रूपमे भेल अछि। अंततः वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्र शब्दक प्रयोग पश्चातक प्रयोग थिक। वंश अथवा परिवारक अर्थमे गोत्रक प्रयोग सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषदमे भेल अछि।

मैथिल ब्राह्मण समाजमे गोत्र वंश-बोधक थीक। मैथिल ब्राह्मणक समस्त गोत्र पितृ प्रधान थीक- अर्थात् प्रत्येक गोत्र अपन-अपन वंशक प्राचीनतम ज्ञात महापुरुषक नाम थीक। मैथिल ब्राह्मणमे सभ मिलाए २० गोट गोत्र अछि। मैथिल ब्राह्मणमे सात गोट गोत्रक कुल व्यवस्थित, सुपरिचित  ओ बहुसंख्यक अछि। ई सात गोट गोत्र थीक- १. शाण्डिल्य २. वत्स ३. काश्यप ४. सावर्ण ५. पराशर ६. भारद्वाज ७. कात्यायन। शेष १३ गोट गोत्र थीक- १. गर्ग २. कौशिक

३. अलाम्बुकाक्ष ४. कृष्णात्रेय ५. गौतम ६. मौदगल्य ७. वशिष्ठ ८. कौण्डिन्य ९. उपमन्यु १०. कपिल ११. विष्णुवृद्धि १२. तण्डि १३. जातुकर्ण।

प्रत्येक गोत्रमे कतौक मूल अछि। मिथिलामे १६७ मूलक ब्राह्मणक परिचय प्राप्त होइत अछि।कतैक मूल एहन अछि, जे एकसँ अधिक गोत्रमे पाओल जाइत अछि।'ब्रह्मपुरा' एकटा एहने मूल थिक। एहि मूलक ब्राह्मण- शाण्डिल्य,वत्स,काश्यप,अलाम्बुकाक्ष,गौतम ओ गर्ग गोत्रमे पाओल जाइत छथि।

प्रवर- प्रवरक उल्लेख वैदिक युगमे दर्श ओ पौर्णमास नामक इष्टिमे भेटैत अछि। ई इष्टि सभ आन सभ प्रकारक यज्ञक आधार थीक। अतः एहिमे प्रवरक पाठ होइत अछि। एहि पाठक प्रयोजन तखनहि होइत अछि जाहि क्षण यज्ञाग्नि उद्दिप्त करएबाली (सामधेनी) ऋचाक पाठक अनंतर अध्वर्यु ओहि अग्नि पर आज्य(घृत) दैत छन्हि। एकर निहितार्थ अछि जे प्रवर, यज्ञमे अग्निकेँ बजएबाक प्रार्थना थीक। प्रवरकेँ बादमे 'आर्षेय' सेहो कहल गेल अछि- जकर अर्थ थिक ऋषिसँ संबंध राखए बला (ऋग्वेद-०९/९७/५१)। शोनक ऋषिक सुविख्यात पूर्वज लोकनि मैथिल ब्राह्मण मध्य प्रवर कहबैत छथि, अर्थात् ऋगवेदक ऋचाक प्रणेता लोकनि प्रवर थिकाह।मैथिल ब्राह्मणक मध्य २ वर्गक प्रवर परिवार होइत अछि- त्रिप्रवर आ पाँच प्रवर। जाहि गोत्रक तीन गोट पूर्वज ऋगवेदक सूक्तिक रचना कएल से त्रिप्रवर आ जाहि गोत्रक पाँच गोट पूर्वज लोकनि ऋगवेदक सूक्तक रचना कएल से पाँच प्रवर कहबैत छथि।

**गोत्र आ मूल:-**

१. शाण्डिल्य- दिर्घोष(दिघवे), सरिसब, महुआ, पर्वपल्ली (पवौली), खण्डबला, गंगोली, यमुशाम, करिअन, मोहरी, सझुआल, मड़ार, पण्डोली, जजिवाल, दहिभत, तिलय, माहब, सिम्मुआल, सिंहाश्रम, सोदरपुर, कड़रिया, अल्लारि, होइयार, तल्हनपुर, परिसरा, परसड़ा, वीरनाम, उत्तमपुर, कोदरिया, छतिमन, वरेवा, मछेआल, गंगौर, भटोर, बुधौरा, ब्रह्मपुरा, कोइआर, केरहिवार, गंगुआल, घोषियाम, छतौनी, भिगुआल, ननौती, तपनपुर।

२. वत्स- पल्ली(पाली), हरिअम्ब, तिसुरी, राउढ़, टकवाल, घुसौत, जजिवाल, पहद्दी, जल्लकी(जालय), भन्दवाल, कोइयार, केरहिवार, ननौर, डढ़ार, करमहा, बुधवाल, मड़ार, लाही, सौनी, सकौना, फनन्दह, मोहरी, वंठवाल, तिसउँत, बरुआली, पण्डौली, बहेराढ़ी, बरैवा, अलय, भण्डारिसमय, बभनियाम, उचति, तपनपुर, विठुआल, नरवाल, चित्रपल्ली, जरहटिया,रतवाल, ब्रह्मपुरा, सरौनी।

३. काश्यप- ओइनि, खौआल, संकराढ़ी, जगति, दरिहरा, माण्डर, वलियास, पचाउट, कटाइ, सतलखा, पण्डुआ, मालिछ, मेरन्दी, भदुआल, पकलिया, बुधवाल, पिभूया, मौरी, भूतहरी, छादन, विस्फी, थरिया, दोस्ती, भरेहा, कुसुम्बाल, नरवाल, लगुरदह।

४. सावर्ण- सोन्दपुर, पनिचोभ, बरेबा, नन्दोर, मेरन्दी।

५. पराशर- नरौन, सुरगन, सकुरी, सुइरी, सम्मूआल, पिहवाल, नदाम, महेशारि, सकरहोन, सोइनि, तिलय, बरेबा।

६. भारद्वाज- एकहरा, विल्वपञ्चक (बेलौँच), देयाम, कलिगाम, भूतहरी, गोढ़ार, गोधूलि।

७. कात्यायन- कुजौली, ननौती, जल्लकी, वतिगाम।

८. अलाम्बुकाक्ष- बसाम,कटाइ, ब्रह्मपुरा।

९. गर्ग- बसहा, बसाम, ब्रह्मपुरा, सुरौर, वुधौर, उरौर।

१०. कौशिक- निखूति

११. कृष्नात्रेय- लोहना, बुसवन, पोदौनी।

१२. मौद्गल्य- रतवाल, मालिछ, दिर्घौष, कपिञ्जल, जल्लकी।

१३. गौतम- ब्रह्मपुरा, उंतिमपुर, कोइयार।

१४. वशिष्ठ- कोथुआ।

१५. कौंडिल्य- एकहरा, परौन।

१६. जातुकर्ण- देवहार।

१७. तण्डि- कटाई।

१८. विष्णुवृद्धि- वुसवन।

१९. उपमन्यु।

२०. कपिल।

मिथिलाधीश कार्णाट वंशीय क्षत्रिय महाराज हरिसिंहदेव जी सभामे उपस्थित सभ्य लोकनिक समक्ष महिन्द्रपुर पण्डुआ मूलक सदुपाध्याय गुणाकर झाकेँ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी प्रबन्धक भार देलन्हि।

नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके) तच्छ्रावणस्य धवले मुनितिथ्यधस्तात। स्वाती शनैश्चर दिने सुपूजित लग्ने श्री नान्यदेव नृपतिर्ढ़धीत वास्तं॥१॥ शास्तानान्द पतिर्व्वभूव नृपतिः श्री गंगदेवो नृपस्तत् सूनू(पुत्र) नरसिंहदेव विजयी श्री शक्ति सिंह सुतः तत् सूनू खलू राम सिंह विजयी भूपालवंत सुतो जातः श्री हरिसिंह देव नृपतिः कार्णाट चूड़ामणि ॥२॥ श्रीमंतं गुणवन्त मुत्तम कुलस्नाया विशुद्धाशयँ सञ्जातानु गवेषणोत्सुक यातः सर्वानुव्यक्तिक्षमां चातुर्यश्चतुराननः प्रतिनिधिंकृत्वा च्त्तुर्द्धामिमां पंचादित्यकुलांबिता विवजया दित्यै ददौ पञ्जिकाम्॥३॥भूपालवनि मौलि रत्न मुकुटोलंकार हिरांकुर ज्योत्सोज्वाल यटाल भाल शशिनिः लीलञ्च चञ्चलस्तवः शोभा भाजि गुणाकरे गुणवतां मानन्द कन्दोदरे दृष्ट्वात्मा हरिसिंह देव नृपतिः पाणौ ददौ पञ्जिकाम॥४॥ दृष्ट्वा सभां श्री हरिसिंहदेव विचार्य चिंते गुणिणी सहिष्णौ॥ गुणाकरे मैथिल वंश जाते पञ्जी ददौ धर्म विवेचणार्थम॥

श्रोत्रिय ब्राह्मण आठ श्रेणीमे क्रमबद्ध छथि आ योग्य एवम् वंशज पन्द्रह श्रेणीमे। पाँजिकक संख्या १८५ अछि, जाहिमे ३२ पाँजि श्रोत्रिय आ १५३ पाँजि योग्य आ वंशजक अछि।

पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भ राजा हरसिंहदेवक कालमे शुरू भेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह।

आइ काल्हि पञ्जी-प्रबंध मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थक मध्य विद्यमान अछि। मुदा प्रारम्भमे ई क्षत्रिय (गंधवरिया राजपूत) केर मध्य सेहो छल।

वर्णरत्नाकरमे ७२ राजपूत कुलक मध्य ६४ केर वर्णन अछि, जाहिमे बएस आ पमार दोहराओल अछि। दोसर ठाम ३६ राजपूत कुलक वर्णन अछि। २० टा नामक पूर्वहुमे चर्च अछि। विद्यापतिक लिखनावलीमे, जे प्रायः हुनकर नेपाल प्रवासक क्रममे लिखल गेल छल, चन्देल आ चौहानक वर्णन अछि। गाहनवार वा मिथिलाक गंधवरिया राजपूतक दू टा शखा मिथिलामे छल, भीठ भगवानपुर आ पंचमहला(सहर्सा, पूर्णियाँ)। गंधवरिया,पमार,विशेवार,कंचिवाल, चौहान आदि मिथिलाक महत्त्वपूर्ण राजपूत मे। मुदा गंधवरिया मिथिलामे महत्त्वपूर्ण मे आ एखनहु मधुबनीसँ सहरसा-पूर्णियाँ धरि छथि।

वर्णरत्नाकरक राजपूत कुलवर्णनक निम्न लगभग ६२ टा कुल अछि। सोमवंश,सूर्यवंश, डोडा, चौसी, चोला, सेन, पाल, यादव, पामार, नन्द, निकुम्भ, पुष्पभूति, श्रिंगार, अरहान, गुपझरझार, सुरुकि, शिखर, बायेकवार, गान्हवार,सुरवार, मेदा, महार, वात, कूल, कछवाह, वायेश, करम्बा, हेयाना, छेवारक, छुरियिज, भोन्ड, भीम, विन्हा, पुन्डीरयन, चौहान, छिन्द, छिकोर, चन्देल, चनुकी, कंचिवाल, रान्चकान्ट, मुंडौट, बिकौत, गुलहौत, चांगल, छहेला, भाटी, मनदत्ता, सिंहवीरभाह्मा, खाती,रघुवंश, पनिहार, सुरभांच, गुमात, गांधार, वर्धन, वह्होम, विशिश्ठ, गुटिया, भाद्र, खुरसाम, वहत्तरी आदि। एखनो गंगा दियारामे राजपूत आ यादव दुनूक मध्य 'बनौत' होइत छथि आ दुनूमे बहुत घनिष्ठता अछि। आइ काल्हि राजपूत मध्य पञ्जी विलुप्त अछि, मुदा तकर निवारण ओ सभ गामकेँ बारि (विवाहक लेल) करैत छथि, जेना दादाक मातृकक गाम छोड़ि कऽ विवाह करब।

पर्वतमे रहनिहार आ वनमे रहनिहारक वर्णन सेहो अछि वर्ण रत्नाकरमे। जनक राजाक विरुद जन (कबीला) सँ बनल प्रतीत होइत अछि।

पहिने सभ क्यो अपन-अपन पुरखाक आ वैवाहिक संबंधक लेखा स्वयं रखैत रहथि। हरसिंहदेवजी एहि हेतु एक गोट संस्थाक प्रारम्भ कलन्हि। मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक पञ्जी वैज्ञानिक आधार बला छल आ शुद्ध रूपेँ वंशावली परिचय छल। सभ ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय अपन-अपन जातिक पञ्जीमे बराबर छलाह। मुदा महाराज माधव सिंहक समयमे शाखा पञ्जीक प्रारम्भ भेल आ श्रोत्रिय आदि विभाजन आ क्रमानुसारे छोट-पैघक आ ओहिसँ उपजल सामाजिक कुरीतिक प्रारम्भ भेल।

कर्ण कायस्थमे एकेटा गोत्र काश्यप अछि। मात्र मूलक अनुसारेँ उतेढ़ होइत अछि, मध्यम दर्जाक गृहस्थ कहल जाइत अछि।

मूलसँ गोत्रक सामान्यतः पता चलि जाइत अछि। किछु अपवादो छैक। जेना: ब्रह्मपुरा मूल, काश्यप/गौतम/वत्स/वशिष्ठ।(७टा)

करमहा- शाण्डिल्य (गाउल शाखा)/ बाकी सभ वत्स गोत्री।दुनू करमहामे विवाह संभव।

श्रोत्रिय लोकनिकेँ पुबारिपार आ शेषकेँ पछबारिपार सेहो कहल जाइत अछि।श्रोत्रियक पाँजि चौगाला(श्रेणी) मे विभक्त अछि। श्रोत्रिय पाँजिकेँ लौकित कहल जाइत अछि। कुल ८ टा चौगोल श्रेणी अछि।३२ टा पाँजि अछि। पाँजि आ पानि अधोगामी होइत अछि। निम्न कुलमे विवाह संबंधक कारणे समय

बीतला पर उच्चादि श्रेणी समाप्त होइत जाइत अछि। प्रथम श्रेणी आ द्वितीय श्रेणी ताहि कारणसँ समाप्त भऽ गेल अछि।

शेष ब्राह्मण पछबारिपार कहबैत छथि। एहि मे १५ गोट श्रेणी अछि।१५३ टा पञ्जी अछि। एकरा नामसँ जेना नरपति झा पाँजि इत्यादि संबोधित कएल जाइत अछि।पछबारिपारहुमे सम्प्रति महादेव झा सँ उपरका पाँजि अनुपलब्ध जकाँ भए गेल अछि।

कालक प्रभावे क्षत्रिय लोकनिमे पञ्जी समाप्त भए गेल आ ताहि द्वारे हुनका लोकनिमे पूरा गामेकेँ छोड़ि देल जाइत अछि, जाहिसँ सिद्धांतमे भाङठ नहि होए।

पञ्जी-पुस्तकक रक्षणक हेतु एकटा श्लोक अछि- जलात् रक्ष तैलात् रक्ष रक्ष स्थूल बन्धनात् माने पुस्तककेँ जलसँ तेलसँ आ स्थूल बन्धनसँ बचाऊ।संगहि सूर्य जखन सिंह राशिमे (मोटा-मोटी १६ अगस्त सँ १५ सितम्बर धरि) रहए तखन एकरा सुखाऊ- एहि समयमे सभसँ बेशी कड़गर रौद रहैत अछि।

उतेढ- सिद्धांत लिखबासँ पहिने वर ओ कन्या पक्षक अधिकार ताकल जाइत अछि।कन्याक विवाहक ५-१० वर्ष पूर्व कन्याक पिता पञ्जीकारसँ अधिकार माला बनबैत छथि, जाहिमे संभावित आ उपलब्ध वरक सूची रहैत छैक। पञ्जीकार एहि हेतु उतेढ बनबैत छथि।वर कन्या दुनू पक्षक पितृ कुलक ६ पुस्त आ मातृकुलक ५ पुरखाक यावतो परिचय देल जाइत अछि। यावतो परिचयक अर्थ भेल ३२ मूलक उतेढ़ जे अधिकार तकबामे प्रयोजनीय थीक। कोनो कन्या वा वर मातृ वा पितृ पुरखा कुलमे १६ व्यक्तिसँ छठम स्थानमे रहैत छथि। एहि १६ मे सँ १६ वा एको व्यक्ति वरक पितृपक्षमे छठम स्थानक अभ्यन्ता अओथिन्ह तँ ओहि कन्या वरक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत।ज्यौँ ओ १६ व्यक्ति वा एको व्यक्ति मातृ पक्ष (वरक) मे अओथिन्ह तँ अधिकार भए जायत।

मुदा एहिमे ई सेहो देखबाक थीक जे वर कन्या समान गोत्र आ समान प्रवरक नहि होथि। ई सेहो देखए पड़त जे कन्या वरक विमाताक भाइक सन्तान नहि होए।

पञ्जी सात प्रकारक होइत आछि-मूल,शाखा,गोत्र,पत्र,दूषण उतेढ़ आ अस्वाजन्यपत्र पञ्जी।

दरभंगा नरेश माधव सिंह शाखा प्रणयन पुस्तकक आदेश देलन्हि।एहिसँ पहिने मूल पञ्जी सभक समान रूपेँ बनैत छल। आब सोति, जोग आ पञ्जीबद्धक हेतु फराक शाखा पञ्जी बनाओल जाए लागल।

गोत्र पञ्जीमे सभ गोत्र आ तकर प्राचीन मूल रहैत अछि।

पत्र पञ्जी लगभग ५०० वर्ष पूर्वसँ प्रचलनमे अछि। एहिमे मूलग्रामक उल्लेख रहए लागल।

दूषण पञ्जीमे वंशमे आएल क्षरणक उल्लेख रहैत अछि। बहुत बादमे एकर चर्च संभव होइत अछि, जाहिसँ सम्बन्धित वंश एकर दुष्परिणामसँ बाँचल रहए।

उतेढ़ पञ्जीमे सपिण्डक निवृत्तिक ज्ञान होइत अछि- छह पुरखाक उल्लेख प्राप्त होइत अछि। मात्र रसाढ़-अररियाक पञ्जीमे स्त्रीगणकक नामक उल्लेख पञ्जीमे भेटैत अछि।

**वैवाहिक अधिकार निर्णय:-**

नियम १. कोनो कन्या वा वर अपन १६ पुरुषा (पितृकुल आ मातृकुल मिलाकेँ) सँ छठम स्थानमे रहैत छथि- जिनका छठि कहल जाइत छन्हि।

एहि छठिक निर्धारण निम्न प्रकारसँ होइत अछि।

१. कन्याक (वृद्ध प्रपितामह) प्रपितामहक पितामह प्रथम छठि

२. कन्याक (वृद्ध पितामहक स्वसुर) प्रपितामहक मातामह द्वितीय छठि

३. कन्याक पितामहक मातामहक पिता तृतीय छठि

४. कन्याक पितामहक मातामहक स्वसुर चतुर्थ छठि

५. कन्याक पितामहीक प्रपितामह पञ्चम छठि

६. कन्याक पिताक मातामहक मातामह छठम छठि

७. कन्याक पितामहीक प्रमातामह सातम छठि

८. कन्याक पितामहीक मातृमातामह आठम छठि

९. कन्याक मातामहक प्रपितामह नवम छठि

१०. कन्याक प्रमातामहक मातामह दसम छठि

११. कन्याक मातामहक प्रमातामह एगारहम छठि

१२. कन्याक मातामहक मातृमातामह बारहम छठि

१३. कन्याक मातामहीक प्रपितामह तेरहम छठि

१४. कन्याक मातामहीक पितृ मातामह चौदहम छठि

१५. कन्याक मातामहीक प्रमातामह पन्द्रहम छठि

१६. कन्याक मातामहीक मातृ मातामह सोलहम छठि

उपरोक्त समस्त छठिक समान महत्व अछि। एहिमे सँ कोनो छठि वरक पितृ पक्षमे अएला पर उक्त वर कन्याक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत। ओ छठि यदि वरक मातृकुलमे अबैत छथि तँ अधिकार होएत।उपरोक्त नियम समान रूपेँ वर ओ कन्यापर लागू होइत अछि। जहिना वरक लेल कहल गेल जे मातृतः पंचमी त्यक्त्वा पितृतः सप्तमी भजेत तहिना कन्या लेल कहल गेल जे असपिण्डा च या मातु – असपिण्डा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने।

नियम२. वर कन्याक गोत्र एक नहि होए।

नियम ३. वर कन्याक प्रवर एक नहि होए।

नियम ४. वरक विमाताक भायक सन्तान कन्या नहि होए।

मातृतः पञ्चमीं त्यक्त्तवा पितृतः सप्तमीं भजेत्- मनुस्मृति

असपिण्डाच या मातुः असपिण्डा च या पितुः सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने।

पञ्चमात् सप्तमात् उर्ध्वं मातृतः पितृस्तथा।

सपिण्डा निवर्तेत कर्तुम् व्यतितिक्षम्।

संस्कृत श्लोकक अर्थ एहि प्रकारे अछि-

*वरक मातृकुलक पुरुषसँ कन्या पाँचम पीढ़ी धरिक सन्तान नहि होथि।वरक पितृकुलक सातम पीढ़ी (संशोधित रूपेँ छः पीढ़ी) धरिक सन्तान नहि होथि।

*जे कन्या वरक मातृ कुल ओ पितृकुलक सपिण्ड नहि होथि से द्विजाति वरक हेतु उद्वाह कर्मक लेल प्रशस्त।

*मातृकुलमे पाँच आ पितृकुलमे सात पीढ़ी धरि सपिण्ड रहैछ।परञ्च म.म.महाराज महेश ठाकुर पितृपक्षमे सातम पुस्तकेँ विवाहक हेतुएँ ग्राह्य मानलन्हि आ हुनक देल व्यवस्था समाजकेँ मान्य भेल।

कोनो कन्याक छठिक अन्वेषण हेतु ३२ मूलक उतेढ बनाबए पड़ैत छैक। ताहिमे सर्वप्रथम उतेढ़क वाम भागमे कन्याक ग्राम, मूल ग्राम लिखल जाइत छैक। तहिसँ अव्यवहित दहिन भागमे मूल आ तकर नीचाँ कन्याक अति वृद्ध प्रपितामह, वृद्ध प्रपितामह, वृद्ध पितामह, प्रपितामह, पितामह आ तखन पिताक नामोल्लेख अवरोही क्रमसँ लिखल जाइत छैक। एहि मध्य वृद्ध प्रपितामह पहिल छठि कहओताह, जनिकासँ कन्या छठम स्थानमे पड़ैत छैक। प्रस्तुत उदाहरणमे करमहा मूलक बेहट मूलग्रामक विट्ठो ग्रामवासी (दरभंगा) पीताम्बर झाक पौत्री श्री शशिनाथ झाक पुत्री भौर ग्रामवासी खण्डबला मूलक भौर मूलग्रामक नारायणदत्त ठाकुरक दौहित्री- धरमपुर दरभंगा- क अधिकार दरिहरा मूलक रतौली मूलग्रामक लोहनावासी गोपीनन्द झाक पौत्र श्री कृष्णानन्द झाक बालक करमहा मूलक बेहट मूल ग्रामक बिट्ठो निवासी कन्हैय्या झाक दौहित्रसँ जँचबाक अछि।

प्रथम छठि- करमहा बेहट मूलक शंकरदत्त सुत विश्वनाथ भेलाह- १.हुनक पुत्र राधानाथ, २.तनिक पुत्र कन्टिर प्र. रेवतीनाथ, ३.हुनक बालक-पीताम्बर,

४.तनिक पुत्र शशिनाथ, ५.आ हुनक पुत्री कन्या ६.अस्तु, विश्वनाथ झा पहिल छठि।

द्वितीय छठि-वृद्ध पितामह राधानाथ झाक श्वसुर माड़रि वलियास मूलक इन्द्रपति झाक बालक धनपति झा होएताह से एहि प्रकारे गणना – धनपति-=१, जमाय = राधानाथ = २, तनिक बालक कंटीर=३ पीताम्बर = ४, शशिनाथ-५, कन्या = ६

तृतीय छठि-कन्याक प्रपितामहक श्वसुरक – जेना माण्डर मूलक सिहौली मूलग्रामक १.रघुबर झा पुत्र २.फेकू झा तनिक जमाए ३.कंटीर झा, तनिक पुत्र ४.पीताम्बर झा तनिक पुत्र ५.शशिनाथ झा ६.कन्या। एहि मध्य माण्डर सिहौली रघुवर झासँ कन्या छठि छथि।

चारिम छठि- फेकू झाक श्वसुर- पाली महिषी मूलक हर्षी झा, यथा (१) हर्षी झा- (२)जामाता-फेकू झा (३) जामाता कंटीर झा (४)पुत्र-पीताम्बर (५) शशिनाथ (६) कन्या। एहि तरहेँ कन्या हर्षी झासँ छठम स्थानमे छथि तँय हेतु ई चारिम छठि भेल।

पाँचम छठि- कन्याक पितामहक श्वसुरक पितामहसँ कन्या छठम स्थान-जेना सकराढ़ी मूलक परहट मूलग्रामवाला (१) ब्रजनाथ झा (२) हुनक बालक हर्षनाथ झा (३) हिनक बालक सिद्धिनाथ झा (४) हिनक जमाय पीताम्बर झा (५) तनिक बालक शशिनाथ झा (६) हिनक कन्या- अस्तु, सकराढ़ी परहट ब्रजनाथ झा पाँचम छठि कहौताह।

६म छठि:- परहट सकराढ़ी मूलक हर्षनाथ झाक श्वसुर खण्डबला भौर मूलक श्यामनाथ ठाकुरक बालक महेश्वर ठाकुरसँ कन्या छठम स्थानमे छथि- तँ (१) महेश्वर ठाकुर (२) हर्षनाथ झा (३) सिद्धिनाथ झा (४) पीताम्बर झा (५) शशिनाथ झा (६) कन्या- एहि तरहेँ खण्डबला भौर मूलक महेश्वर ठाकुर छठम छठि कहौताह।

७म छठि- कन्याक पिताक मातामहीक पितामह- यथा हरिअम मूलक बलिराजपुर मूल ग्रामक सेवानाथ मिश्रक पौत्री, बालमुकुन्द मिश्रक पुत्री कन्याक पिता शशिनाथ झाक मातामही छथि, तँय (१) सेवानाथ मिश्र-पुत्र(२)बालमुकुन्द मिश्र (३)जामाता-सिद्धिनाथ झा (४) जामाता-पीताम्बर झा (५) पुत्र शशिनाथ झा (६) पुत्री-कन्या, अस्तु, हरिअम बलिराजपुर सेवानाथ मिश्र ७म छठि भेलाह।

८म छठि- कन्याक पितामहीक मातृ मातामह-यथा- सोदरपुर मूलक सरिसब मूल ग्राम वाला (१) गदाधर मिश्र-जामाता (२) बालमुकुन्द मिश्र-जामाता (३)सिद्धिनाथ झा(४)जामाता पीताम्बर झा- पुत्र(५) शशिनाथ झा (६) कन्या। ताहि हेतु सोदरपुर सरिसव गदाधर मिश्र आठम छठि छथि।

९म छठि- कन्याक मातामहक प्रपितामह- खण्डबला मूलक भौर मूलग्राम (१)धर्मनाथ ठाकुर-पुत्र (२) योगनाथ ठाकुर-पुत्र (३)दुर्गानाथ ठाकुर-पुत्र (४) नारायणदत्त ठाकुर-जामाता (५) शशिनाथ झा-तनिक (६) कन्या- अर्थात् धर्मनाथ ठाकुरसँ कन्या- ६म स्थानमे छथि। तँय धर्मनाथ ठाकुर नवम् छठि भेलाह।

१०म छठि- कन्याक प्रमातामह (दुर्गानाथ ठाकुरक) मातामह- बभनियाम मूलक कड़राइन मूलग्रामक सन्तलाल झासँ कन्या छठम स्थानमे छथि- यथा (१) सन्तलाल झा- हिनक जमाय, (२)योगनाथ ठाकुर (३)पुत्र दुर्गानाथ ठाकुर पुत्र(४) नारायणदत्त (५) जमाय- शशिनाथ झा तनिक पुत्री (६) कन्या। एहि हेतुए बभनियाम मूलक सन्तलाल झा १०म छठि।

११म छठि करमहा मूलक नड़ुआर मूलग्रामक बछरण झासँ कन्या- छठम् स्थानमे छथि- यथा

(१) बछरण- पुत्र (२) खेली- जमाय-(३) दुर्गानाथ ठाकुर (४) तनिक पुत्र- नारायणदत्त ठाकुर- जमाय (५) शशिनाथ (६) पुत्री-कन्या- अस्तु बछरण झा ११म छठि।

१२म छठि- कन्याक मातामहक मातृमातामह खण्डवला मूलक भौर मूलग्रामक जीख्खन ठाकुर-सँ कन्या छठम स्थानपर, क्रम- (१)जीख्खन ठाकुर (२) खेली झा जमाय (३) दुर्गानाथ ठाकुर (४) पुत्र- नारायणदत्त- जमाय (५) शशिनाथ-पुत्री (६) कन्या।

१३म छठि- कन्याक मातामहीक प्रपितामह हरिअम मूलक बलिराजपुर मूलग्रामक योगीलाल मिश्र। यथा- (१)योगीलाल –पुत्र (२) कमलनाथ मिश्र (३) पुत्र-शक्तिनाथ मिश्र (४) जमाय- नारायणदत्त ठाकुर- जमाय (५) शशिनाथ-पुत्रे (६)कन्या।

१४म छठि- कन्याक मातामहीक पितृमातामह अर्थात् सोदापुर मूलक दिगउन्ध मूलग्रामक कौशिल्यानन्द मिश्र- यथा- (१) कौशिल्यानन्द मिश्र- तनिक जमाय (२) कमलनाथ मिश्र तनिक (३)पुत्र शक्तिनाथ मिश्र, तनिक जमाय (४) नारायण दत्त ठाकुर तनिक (५) जमाय शशिनाथ झा- तनिक पुत्री (६) कन्या।

१५म छठि- कन्याक मातामहीक प्रमातामह अर्थात् खण्डवला मूलक भौर मूलग्रामक महाराज कुमार बाबू गुणेश्वर सिंह यथा- (१) बाबू गुणेश्वर सिंह- पुत्र (२) बाबू ललितेश्वर सिंह (३) जमाय- शक्तिनाथ मिश्र- तनिक जमाय (४) नारायणदत्त ठाकुर (५) तनिक जमाय- शशिनाथ झा- तनिक पुत्री (६) कन्या।

१६म छठि- कन्याक मातामहीक मातृमहीक मातृमातामह अर्थात् खौआल मूलक सिमरवाड़ मूलग्रामक- पद्मनाथ झासँ कन्या छठम् स्थानमे छथि- यथा- (१)

पद्मनाथ-जमाय (२) बाबू ललितेश्वर सिंह (३) जमाय शक्तिनाथ (४) जमाय-नारायणदत्त (५) जमाय-शशिनाथ, (६) पुत्री-कन्या।

उपरोक्त प्रकारे कन्याक सोलह छठि प्राप्त भेल।

| बेहटसँ विठ्ठो | बेहट करमहा शंकरदत्त | वलियास | माण्डर | पाली | परहट सकराढ़ी | खण्डबला | हरिअम |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पीताम्बरसुत शशिनाथसुता खण्डवलासँ नारायणदत्त दौ | (१) विश्वनाथ राधानाथ रेवतीनाथ (कन्टिर) पीताम्बर शशिनाथ (कन्या) | इन्द्रपति धनपति (२) | हृदयदत्त रघुवर (३) फेकू | लक्ष्मीदत्त हर्षी (४) | वैद्यनाथ (५) हर्षनाथ सिद्धिनाथ | श्यामनाथ महेश्वर (६) | महिनाथ सेवानाथ (७) बालमुकुन्द |

| सोदरपुर | खण्डवला | वभनियाम | करमहा | खण्डवला | वलिराजपुर हरिअम | दिगउँन्ध सोदरपुर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वेदधर गदाधर(८) | धर्मनाथ(९) योगनाथ दुर्गानाथ नारायणदत्त | रूदी सन्तलाल(१०) | हेमनारायण बछरण(११) खेली | थोथी जीरक्खन(१२) | हर्षमणि योगीलाल(१३) कमलानाथ शक्तिनाथ | कारी कौशिल्यानन्द(१४) |

| खण्डवला | खौआम |
|---|---|
| रुद्र सिंह गुणेश्वर सिंह(१५) ललितेश्वर सिंह | भवनाथ पद्मनाथ(१६) |
| | |

समान रूपेँ वरक उतेढ़ बनाओल जाएत- एहि पोथीक तीनू खण्ड देखि कए। निर्णय देबाक हेतु धर्मशास्त्रक सूत्र देखू।

**वरपक्ष:** कन्यहिँ सदृश वरहुकेँ उत्तेढ़ (बत्तीस) मूलक बनाओल जाइत छैक। एहि मध्य दू-प्रकारक परिचय रहैत छैक- (१)वरक पिता-पितामहादि तथा हुनका लोकनिक मातृकुलक जे वरक हेतु पितृकुल भेल, दोसर दिस वरक मायक पितृकुलक जाहि मध्य वरक मातामहादि तथा हुनका लोकनिक मातृकुलक

परिचय।

वरक पितृपक्ष

| रतौलीसँ लोहना | १ दरिहरा | २ हरिअम | ३ वुधवाल | ४ खण्डवला | ५ नरउन |
|---|---|---|---|---|---|
| कृष्णानन्द सुत(वाचा)<br>बेहट करमहेसँ (चंचल)<br>मुकुन्द सुत कन्हैया दौ | वै.नित्यानन्द<br>गरीबानन्द<br>लीलानन्द<br>जीवानन्द<br>गोपीनन्द<br>कृष्णानन्द | सचल | जयनाथ<br>मोहन | बाबू कीर्ति सिंह | गंगादत्त<br>एकनाथ<br>जगन्नाथ |
| | | | | | |

| ६ पाली | ७ खण्डवला | ८ माण्डर | ९ करमहा | १० पवौलि | ११ खण्डवला |
|---|---|---|---|---|---|
| लक्ष्मीदत्त | श्यामनाथ<br>महेश्वर | श्यामू | केशव<br>लान्हि<br>दिगम्बर<br>वैदनाथ | धर्मानन्द | धर्मपति सिंह<br>मार्कण्डेय सिंह |
| | | | | | |

| १२ नरउन | १३ वलियास | १४ घुसौत | १५ सोदरपुर | १६ करमहा |
|---|---|---|---|---|
| | धर्मपति<br>उमापति<br>जनार्दन | हर्षमणि | कारी<br>कोशिल्यानन्द | गोपीनाथ |
| | | | | |

**वरक मातृपक्ष**

| १७ बेहट करमहा | १८ सरिसव | १९ पवौलि | २० दरिहरा | २१ खण्डवला | २२ कुजौली |
|---|---|---|---|---|---|
| नन्दलाल<br>कन्हैयालाल<br>गणेशदत्त<br>मुकुन्द<br>कन्हैया | धरापति | धर्मानन्द<br>जनार्दन | घनानन्द | म. रुद्रसिंह<br>म. रुद्रेश्वर सिंह<br>म. रामेश्वर सिंह | टीकानाथ |

| २३ करमहा | २४ सोदरपुर | २५ खण्डबला | २६ तिसउँत | २७ दरिहरा | २८ कुजौली |
|---|---|---|---|---|---|
| हलधर<br>गोवर्द्धन | बाबूलाल | जगत सिंह<br>दामोदर<br>गोपीनाथ सिंह<br>रुचिनाथ सिंह | गिरधारी | --<br>पुष्पनाथ | हरिनन्दन |

| २९ करमहा | ३० माण्डर | ३१ नरउन | ३२ सोदरपुर |
|---|---|---|---|
| कृष्णदत्त<br>हेमदत्त<br>वित्तू | बच्ची | मनमोहन | भूवन्धर |

एहि प्रकारसँ हम सभ देखैत छी जे कन्याक जे १४म छठि दिगउन्ध सोदरपुर मूलक कारी सुत कौशिल्यानन्द मिश्र छथि से वरक पितृकुलमे अबैत छथिन्ह। जतऽ धर्मशास्त्र कहैत अछि जे ६(७) तक त्याग करबाक अछि। परञ्च कन्या छठमे स्थानमे छथि। अस्तु एहि चर्चित वर-कन्याक मध्य वैवाहिक अधिकार नहि होएत।

कोनहु कथा जँचबाक हेतु पञ्जीकार सभसँ पहिने कन्याक छठिक निर्धारण कए लैत छथि। ततःपर वरक उतेढ बनबैत छथि। तखन देखबाक रहैत छन्हि जे कन्या जिनकासँ छठि छथि से तऽ वरक परिचयमे नहि पवैत छथि। जँ से कोनो छठि भेट गेलाह, तँ देखबाक रहैछ जे वरक कोन पक्ष (पितृ-मातृ)केँ अएलाह। मातृ-पक्ष रहने अधिकार हो आओर पितृ-पक्षमे रहने नहि हो, से वचन पूर्वमे कहि आएल छी। वरक पक्षक पितृकुलमे ६ तक त्याज्य ओ सातमकेँ ग्राह्य आओर मातृकुलमे पाँचम तक त्याज्य आ छठम ग्राह्य।

एतए ईहो देखबामे अबैत अछि जे ई सभ वैज्ञानिक दृष्टिकोण तखन ताखपर राखल रहि जाइत अछि जखन बाल विवाह आ बहु-विवाहक कुरीति एहि मध्य पैसैत अछि। से कतोक गोटे एक दिससँ ससुर जमाए भए जाइत छथि तँ दोसर दिससँ साढ़ू। आ एतए पञ्जीकार विवश भए जाइत छथि कारण नियमतः एहन अनर्गल विवाह शास्त्र विहित भए जाइत अछि।

शाखा पञ्जीक विशेषता :शाखा पञ्जी एक अभूतपूर्व पुस्तक छी। एहि तरहक पुस्तक संसारक कोनो देश कोनो सम्प्रदाय वा कोनो वर्गमे नहि पाओल गेल अछि। यद्यपि ई वर्ग विशेषक पुस्तक थिक, परञ्च एहि प्रकारक पुस्तक कोनो सम्प्रदाय वा कोनो वर्गक लेल शुरू कएल जा सकैत छैक। मिथिलाक ई अद्वितीय अछि जाहिमे १००० वर्षसँ परिचयक जाल जकाँ निर्मित कएल गेल अछि। जेना कवि कोकिल विद्यापति ठाकुरक परिचय हुनक पुरुषाक उल्लेख ७ पीढ़ी पहिनेसँ लऽकेँ विद्यापतिक वंशधर वर्तमान धरि, सभक साङ्गोपाङ्ग (विद्या, उपाधि, विशिष्टता, कार्य परिवर्तन, मातृकुलक परिचय) परिचय भेटत। एहन परिचय मात्र विद्यापतिये नहि समस्त मैथिल ब्राह्मणक भेटत, एहि प्रकारक आधारपर विभिन्न विद्वान ब्राह्मणक काल निर्धारण सेहो कएल जा सकैछ।

पञ्जीशास्त्र मार्त्तण्ड धौत परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान पाबि महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक हाथें दोशाला पओनिहार स्वनाम धन्य पञ्जीकार मोदानन्द झा आ हुनक मौखिक परीक्षाक मुख्य परीक्षक छलाह महामहोपाध्याय डॉ सर गङ्गानाथ झा। पञ्जी प्रबन्धक जे इतिहास अछि ताहिमे वर्णित अछि जे पञ्जी प्रबंधक वर्तमान स्वरूपक प्रणेता छलाह सदुपाध्याय गुणाकर झा, जनिक अठारहम पीढ़ीमे मोदानन्द झा आ उन्नैसम पीढ़ीमे विद्यानन्द झा मोहनजी अबैत छथि। आइसँ उन्नैस पुस्त पहिने जे मैथिलक वंशावलीक संकलन संवर्द्धन ओ संरक्षणक व्रत दृढ़ निष्ठासँ सदुपाध्याय गुणाकर झा लेलन्हि वा तत्कालीन विद्वत वर्ग द्वारा विश्वासपूर्वक देल गेलन्हि, से अद्यावधि निष्ठापूर्वक सुरक्षित ओ संवर्द्धित अछि।

पञ्जीक समस्त पुस्तक मिथिलाक लिपि तिरहुतामे लिखित अछि/ लिखल जा रहल अछि। आ बुझू तँ तिरहुता लिपिक प्राणाधार थिक पञ्जी प्रबन्ध।

पञ्जी-शास्त्रसँ सम्बद्ध पक्ष एहि लिपिक ज्ञानक अभावमे सामने बैसियौकऽ विषय वस्तुसँ अनभिज्ञ रहि जाइत छथि। फलस्वरूप एकर संरक्षणक प्रति सहयोग घटल जा रहल छैक।

एहिना स्थितिमे तालपत्र/ बसहापत्रपर लिखल पञ्जीक मिथिलाक्षरमे संगणकपर अंकन आ ओकर देवनागरी लिप्यंतरण आवश्यक छल जाहिसँ एकर विनाशसँ पूर्व संरक्षण भऽ सकए।

वैवाहिक अधिकार तकएवा हेतु वा सिद्धांत (अस्वजनपत्र) लिखएवा हेतु जे क्यो अभ्यागत अबैत छथि ताहि मे अधिकांशक माँग होएत छन्हि जे सिद्धांत पत्रक एक प्रति देवनागरी मे सेहों लिख दिअ।

कि विचार अछि तिरहुता लिपि नष्ट भऽ जाए। विज्ञानक चमत्कार सँ मनुष्य गण चन्द्रमा धरिक यात्रा कएलक परञ्च सामर्थ्य छैक जे एकटा लिपिक आविष्कार करत आ ओ लिपि सर्वजन संवैद्य ओ ग्राहि होएत। अपन धरोहर कें नष्ट करबाक लेल कियैक तुलायल छी? परंतु कालांतर मे विचार आयल जे समाजक विचार कियैक नहि स्वीकार कएल जाए। पाञ्जिक समस्त पोथी तिरहुता लिपि मे निबद्ध अछि। तिरहुता लिपिक ज्ञानक आभाव मे समाज पोथिक विवरण सँ अनभिज्ञ रहैत अछि। तँय निरपेक्ष सेहो। तखन समाजक भावना कैँ देखैत जे कोनो कथ्य तँ अनैक लिपि मे लिखल जाए सकैत अछि आ पढि सकबाक कारणें समाजक जिज्ञासा शांत भऽ सकैत अछि।

पाँ रघुदेव झा (आइसँ नौ पीढ़ी ऊपर) आ हुनक लिखल माण्डर मुलक पुस्तक(१६९०-१७१०ई.) जे तालपत्र पर अंकित अछि, सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ पञ्जीकार पाँ 'देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झाक' लिखल शाखा पुस्तक (१७७० ई.सँ १७८० ई.) जे तालपत्र पर लिखल अछि, अद्यावधि उपलब्ध अछि। तकर अतिरिक्त हर्षानन्द झाक शाखा पुस्तक, भिखिया झाक शाखा पुस्तक, झुलानन्द झाक शाखा पुस्तक, मोदानन्द झा 'पञ्जिशास्त्र मार्तण्ड'(मैथिली अकादमी, बिहार सरकार द्वारा प्रदत्त उपाधि), 'लब्ध धौत' (मिथिलेश महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह सँ प्राप्त उपाधि), वाला शाखा पुस्तक, 'उप-टीप'(सोतिपुरा), नगराम(पछिवारि पार), गोत्र पञ्जी, पत्र पञ्जी ई सभ एहि पोथीमे मिथिलाक्षरमे अंकित अछि। ताहि सभक अंकन आ लिप्यंतरण प्राचीन पञ्जीक संग करबाक काज सन २००० ई. क चैत मास सँ प्रारंभ कएल गेल। गोत्र पञ्जी मध्य गोत्र व मूलक विवरण, पत्र पञ्जी मध्य अपत्यक ज्ञान तथा दूषण पञ्जी मध्य वंश मे आएल दोषक ज्ञान होइत अछि। प्राचीन पुस्तक मध्य ४५० ई. सँ अद्यावधि प्रचलित शैक्षणिक उपाधि सबंधक ज्ञान होइत अछि। लिप्यंतरण करबाक अवधि मे अनुभव भेल जे मिथिलाक इतिहास बोध कतैक उच्च प्रकारक रहल अछि। पञ्जिक पुस्तक मात्र अधिकारै तकबाक लेल प्रारंभ नहि भेल, अपितु मिथिलाक लोक अभाव ग्रस्त रहितौ, तत्तकालिन शासकक वक्र दृष्टि सहितो मिथिलाक शैक्षणिक स्थिति, धर्म शास्त्रिय विवेचनाक क्षमता, साहित्यिक रचनाक योग्यता कलाकौशलक प्रवीणता कोन प्रकारक छल एहि सभ पर प्रकाश देखल। लिप्यन्तरण भेला संता वर्तमान कालिन दुनिया, जे भूमण्डलीकरणक दौर मे अछि, जानि सकत जे मिथिलांचलक सांस्कृतिक विविधता कि छल इतिहास बोध कोन प्रकारक छल- एहि सभ वस्तु कैँ दुनियाक पटल पर राखल जाए। दुनियाक कोनो समाज मे एतैक विस्तृत भुभाग मे पसरल मनुष्यक वंशावली १५०० वर्ष सँ अधिके समय सँ एहि तरहें सांगोपांग नहि लिखल गेल अछि जाहि तरहें मिथिलाक लोक विपन्न रहितो परिचय संग्रह करैत रहलाह, ईमानदारी पूर्वक अपन पुरूषाक शिक्षा, तथाकथित क्षरण आ सबन्धक विवरण कलाबोध प्रवास-आप्रवासक संचित करैत रहलाह, से अद्भूते अछि।

आब पञ्जीक पुस्तकमे कएक पीढी सँ यावतो परिचय संगृहित भए गेल अछि तँ फेर श्रोत्रियादित्रय लोकनिक शाखा वाचन हो आ तथा कथित जयवार लोकनिक नहि (परिचय उपलब्ध रहितौ) तकर की अर्थ? वंश परिचय संगृहित करबाक स्वरूप मे अनेक पड़ाव आएल अछि, पूर्व मे स्मृति सँ - बाद मे (कुमारिल भट्टक समय मे समूह लेख्य)। पुनः वर्तमान स्वरूप मे (पञ्जीकार लोकनि द्वारा) मिथिलेश महाराज माधव सिंहक (१७६० ई.) समयमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि अपन चाटुकारितासँ शाखा पुस्तकक प्रणयन महाराजक आदेशसँ पञ्जीकारसँ करबओलन्हि। आचारण वृत्ति हेतु तोता-रटंत प्रारंभ भेल। पहिने तऽ मूलहि टाक पुस्तक छल जे वैवाहिक अधिकार निरूपण हेतु यथेष्ट छल- अछि- रहत। उत्तेढक प्रारूप एहि तथ्य कें सिद्ध कए रहल अछि, धर्म शास्त्रक वचन तकरा पुष्ट करैत अछि। जखन पञ्जीकारक अवधारणा नहि छल धर्मशास्त्रज्ञ लोकनि प्रयोजन वाला व्यक्ति सँ हुनक देल वंश परिचय पर अधिकार हो वा नहि तकर निरूपण करैत छलाह तखन ओ उत्तेढक प्रारूप सँ इतर कोन तरहें विचार करैत छलाह, की ओ लोकनि धर्म विरूद्ध आचरण करैत छलाह?

अस्तु, पञ्जीकार अपन अज्ञानताक भार सँ समाज कैँ दलमलित करबाक विचारक परित्याग करूथु ओ आर्ष वचनक निर्वाह प्राण-प्रण सँ करूथु अपन गढल सूत्रक नहि।प्रत्येक कन्या वा वर जाहि-जाहि व्यक्ति सँ छठम स्थान मे रहैत छथि ओ समस्त छठि समान अधिकारक (सत्ताक) होइछ , मात्र पक्ष देखबाक निर्देश अछि- पितृ कुल वा- मातृ कुल। कोनो छठिकैँ विशेषाधिकार शास्त्रक वचन सँ नहि अछि। तखन ई कहबाक की अभिप्राय जे कन्या जाहि मूल-ग्रामक

होथि – वरक मातामहक मूल ओ मूल ग्राम सैह हो तँ मातृ सापिण्ड्य आठम पीढी मे (सातम पुस्तक बाद) निवृत होएत, सर्वथा भ्रान्त धारणा। एकर समर्थनमे धर्मशास्त्रक कोनहुँटा वचन नहि अछि। जँ अछि तँ लिखित विचारक सप्रमाण खण्डन करू (गल्पसँ नहि)। प्रातः स्मरणिय म.म. प. महेश ठाकुरक देल व्यवस्था संप्रमी त्यजेत सँ ...भजैत.. समाज सहर्ष स्वीकार कएलक तँ मान्य। अंततः एकटा विषय इहो अछि जे पञ्जीकर्म सँ जुड़ल व्यक्ति, समाजक धर्मक रक्षा लेल नियुक्त छथि, जे किछु विदाई वा पारिश्रमिक भेटैत छन्हि से प्रसाद स्वरूप ग्रहण करूथु नहि कि एकै तरहक पाँच टा कार्य लेल एक ठाम सँ दोसर ठाम जएबा हेतु पाँचो व्यक्तिसँ मार्ग व्यय लेल जाय, पाइ बिनु अग्रिम भेटने अधिकार नहि ताकी, ई तँ घोर अनैतिकता थीक। पञ्जीकार संस्कृतिक रक्षकक होथि, गरकट व्यापारी नहि। भावी पीढीक हेतु समय पर शिष्य तैयार करब पञ्जीकारक दायित्व थिकन्हि- पाइये टा कमायब अभिष्ट नहि होयबाक चाही। नहि सम्हरैत छन्हि तँ समय पर समाजकें एतत रूपक सूचना करथु , जे समाज- नव नव व्यक्तिकें दायित्व निर्वहण करैक हेतु तैयार करथि। सम्बद्ध व्यक्तिक अनुपस्थित होएबाक प्रातहि नव पञ्जीकारक प्रयोजन होएत, ताहि हेतु के विचार करताह?

अस्तु, से जँ अधिसंख्य लोकक मध्य प्रचलित लिपि मे ई नहि होएत तँ मिथिलाक विशिष्टता सँ दुनियाँ परिचित कोना होएत। ख्रीष्टाब्दक दशम शताब्दी सँ लऽ कें देशक स्वतंत्रता प्राप्तिक काल धरि मिथिला मे कोनो प्रकारक गमना-गमनक सुविधा नहि छल, लेखन कला सँ विज्ञ रहितौ लेखन सामग्रीक अभाव मे कागजक स्थान पर तालपत्रक व्यवहार होएत छल जे सुविधा सँ नहि प्राप्त छल तखनहुँ मैथिल समाज अपन वाङ्गमयक रक्षाक हेतु येन-केन प्रकारेण ताल-पत्र उपलब्ध करथि, छाहरिमे सुखाबथि, १४ नाम औ १.५ सै २ चाकर ताल पत्र काटि-छटि कऽ तैयार करथि। पातक वाम भाग मे १.५ भीतर गोलाकार छीद्र कए सुतरी वा कपासक मोट धागासँ पैसाकऽ गाँठ देथि। ई पुस्तक- ५००-६०० पातक बनैत छल जकर दूनु दिस काष्ठक गत्ता देल जाए आओर डोरी मे गाँठ दए पुस्तक बान्हथि। बान्ह सक्कत पड़ैत छल। पुस्तक ब्रह्मपत्री शैली मे बनाओल जाइत छल। प्रत्येक गुरू अपन शिष्य कें बतावथि जँ- पुस्तकी वदति, स्याहीक हेतु जंगली जडी-बूटी ओ लेखनीक हेतु खद्धहीक व्यवहार करैत छलाह। जलात् रक्ष तैलात् रक्ष, रक्ष स्थूल बन्धनात्- इयैह-सूत्र पाञ्जिक विद्यार्थीकँ सेहो सिखाओल जाइन्ह। अभावग्रस्त समाज एतैक कठिनताक सामना करितहुँ पञ्जीकर्म सँ जुड़ल लोक अपन आश्रितक बिनु चिंता कएने, सैद-पानि बसात सहैत- गामहि-गाम भ्रमण करैत इच्छित विवरण एकत्र करैत छलाह। पुनः समय-समय पर गाम आबि तकर सम्पादन करथि- एहि तरहेँ कार्य शत-शत वर्ष चलल। – समाज सँ सहयोग ओ सम्मान भेटन्हि परञ्च कोनो प्रकारक राजकीय संरक्षण हुनका लोकनि कैँ कहियो नहि रहलन्हि। सम्पादन कार्य त्रुटि रहित करैत छलाह। अजुका सरकारी कर्मचारी जकाँ, जे घरहि बैसल वेतन ओ सुविधा भोगैत नागरिकता प्रमाण पत्र मे परिचयक स्थान मँ किछु सँ किछु भरैत जाइत छथि, नहि वरन् , पञ्जीकार लोकनि द्वारा संगृहित सूचनासँ समाजक बहुआयामी प्रयोजनक पूर्ति होइत रहल अछि- यथा सपिण्डताक निर्धारण- अशोंचदिक हेतु, वैवाहिक स्वीकृति हेतु, पिण्डदानक हेतु पुरूषाक नामक ज्ञान, विवाहक हेतु अधिकार तकौनाई, वंशक शैक्षणिक, भौगोलिक ज्ञान, आदि-आदि। उपरोक्त सभ पुस्तक कें प्रत्यक्ष राखि ७ वर्ष धरि निरंतर लिप्यंतरण (Transliteration) क कार्य सम्पन्न भेल। पाञ्जिक पुस्तक मे अंक निर्धारणक बड्ड महत्व होइत छैक अंकहि पर आधारित होइत अछि- शाखा पुस्तक। ई कार्य जँ गड़बड़ा गेल तँ बुझु जे धारमे भसिया जएबावाला स्थिति भए जाएत।प्राचीन पञ्जीसँ एकर सूत्र टूटि जाएत। अस्तु अंकन अशुद्ध नहि हो ताहि लेल एकाग्र भए लेखन कार्य कएल गेल।

किछु शब्द पञ्जिकार लोकनिसँ- पञ्जीकार लोकनि सँ विनम्र निवेदन जे मिथिलाक संस्कृतिकेँ अक्षुण्ण रखवाक हेतु अपन अल्पज्ञता ओ संकुचित प्रवृतिकेँ दूर करथु। मात्र किरानीगिरी करब- अधिकार ताकब ओ सिद्धांत कराएब आ ताहि सँ द्रव्य कमा लेब, एतबे धरि पञ्जीकारक सोच नहि होएबाक चाही। पञ्जीकर्मसँ जुड़ल व्यक्ति समाजक हेतु बड़ पैघ दायित्व ग्रहण करैत छथि। समान पुरूषा(Common Person) सँ जँ वैवाहिक स्वस्ति हेतु कन्याक सापिण्डय निवृति अनिवार्य तँ ओहि तरहेँ जँ वर ओहि पुरूषा सँ सपिण्डताक परिधि पार कए लेने छथि परञ्च कन्या समान पुरूषा सँ सपिण्डताक परिधि मे छथि तथापि वैवाहिक सम्बन्धक स्वस्ति देलहिटा जाए। एकर विरूद्ध जे पञ्जीकार निर्णय दैत छथि ई विचारि कए जे कन्या तँ 'छठि मे पडैत छथि वर खाहे ओहि पुरूषा सँ सातम वा ताहि सँ अधिके दूरि पर रहथु- एकर की अर्थ भेल? अधिकार तकवाक प्रारूप (उत्तेढ-Format) आदि अदौ काल सँ पञ्जीकार लोकनिकें प्राप्त छन्हि, वैयाकरण लोकनि अर्थ स्पष्ट करथु। धर्मक रक्षा वा आर्ष वचनक प्रति श्रद्धा राखब एक अनिवार्य तथ्य थिक ओ तोता रटंतु जकाँ शाखा पुस्तक कण्ठस्थ करब दोसर गैर जरूरी बात। धर्म सूत्रक प्रणयन समस्त ब्राह्मण लेल अछि जाहि मे आवश्यक अछि ३२(बत्तीस) मूलक उत्तेढ बनायब (वर-पक्ष ओ कन्या-पक्ष दूनुक हेतु समान रूपें) जाहि मध्य १६टा छठिक निर्धारण- उद्देश्य सापिण्डय निवृतिक ज्ञान, अधिकार तकबा काल पञ्जीकारक समक्ष विषय (Subject) होइत अछि वर- ओ कन्या नहि की ओ समान पुरूषा(Common- Person)। जँ पहिल दोसरक सपिण्डता सँ वहिर्भूत भेल तँ दोसर कोन रूप मे वहिमूलक सपिण्डय निवृति प्राप्त कएलक तँ अधिकारक स्वस्ति परमावश्यक। वर्त्तमान विज्ञानक युग मे गुण सूत्रक (Chromosomes) निर्धारण एहि रूपक अछि आ हमरा लोकनिक पुरूषा (ऋषि लोकनि) तकरहि शास्त्रिय ढंगे पूर्वहि राखि गेलाह।

महाराजाक हेतु निहुछल कन्यासँ अपन पाँजिक रक्षार्थ कन्या चोराकेँ बियाह केलापर राजा द्वारा पञ्जीकार लोकनिकेँ बजाए हुनकर नाममे तस्कर उपाधि जोड़ब, नैय्यायिक गंगेश उपाध्यायक जन्म पिताक मृत्युक ५ सालक बाद होएब, महेशठाकुरक बहिनक विवाह कूच-बिहारक राजकुमारसँ होएब, कविशेखर

ज्योतिरीश्वरक उपाधिक संग उल्लेख (हुनकर पाण्डुलिपि नेपालक पुस्तकालयसँ प्राप्त होएबासँ पूर्व), ओकर अतिरिक्त ढेर रास ढाकाकवि आ कवि शेखर लोकनिक विवरण, मुस्लिम आ चर्मकारसँ विवाहक विवरण आ समाजमे ओहिसँ भेल सन्ततिक प्रति कोनो दुराग्रहक अभाव, ई सभ पञ्जीमे वर्णित अछि।आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी *त्रिनयनभट्ट: ए सुतो आर्यभट्ट:* ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या पारङ्गत महामहोपाध्या य: नरसिंह:।।

५८४(A)। *चैतन्य महाप्रभु:* रमापति उपाध्याय करमहे तरौनी मूलक छलाह। ओ बंगाल चलि गेलाह, हुकर शिष्य रहथि चैतन्य महाप्रभु।गंगेश उपाध्याय-छादन छादन, उदयनाचार्य-ननौतीवार ननौती (करियन, समस्तीपुर), महेश ठाकुरक मातृक काश्यप गोत्री सकराढ़ी मूलमे रुद झा। रमापति उपाध्याय प्रसिद्ध विष्णुपुरी, परमानन्दपुरी वत्सगोत्री करमहा मूलक तरौनी गामक चैतन्यक गुरु।बल्लाल सेनक समयमे हलायुध आ लक्ष्मणसेन-उद्योतकर। सिंहाश्रम मूलक म.म.हलायुधसँ १२ पुस्त पूर्व माण्डर मूलक बीजी म.म.त्रिनैन भट्ट (४०० ए.डी.लगभग) एहि पोथीक प्रस्थान बिन्दु अछि(पृष्ठ १८)। हलायुध आ नरसिंह समकालीन छलाह। नरसिंह (माण्डर मूल)सँ १२ पुस्त पूर्व त्रिनैन भट्ट मे।

पञ्जीमे उपलब्ध आधुनिक सामाजिक जीवन:

ब्राह्मण खाहे श्रोत्रिय होथु वा तथाकथित जैवार विशेषाधिकार, विशेष बंधन किनको हेतु नहि। जे समाज तथा कथित रूपें जयवारक संज्ञा सँ विभूषित मिथिलाक लोक प्राचीन कालहिं सँ भारतक आन-आन सभ्यता ओ संस्कृतिक अपेक्षा उदार माना ओ नमनशील रहल अछि, एहि ठाम कोनो प्रकारक धार्मिक कट्टरपन स्थाई भाव नहि। सुधारक गुंजाइश सतत् बनौने रखने अछि, एहि ठाम जँ कखन कोनो काल मे खाहे कोनो प्रकारक जातिक वंडर उठल हो परंच विद्वेष स्थाई भाव नहि रखल। अपन अपन कालक पैघ सँ पैध घटना कालातीत भए विस्मृत होइत रहल अछि, तकर प्रमाण थिक मिथिलाक पञ्जी उपांग-दूषण पञ्जी। कोनो कालक दलमलित करएबला घटना (Burning Question) थोड़बहि समयक बाद समाज ओ मस्तिष्क सँ हटि जाएत।

पाली मूलक-देवशर्म्मसुत कान्हक विवाह बुधवाल मूलक गोविन्द सुत दामूक विवाह सरिसब मूलक श्रीनाथ सुत चक्रपाणिक विवाह दरिहरा मूलक भीम सुत उमापतिक विवाह सोदरपुर मूलक श्रीहरि सुत हरिनाथक विवाह हरिअम वासदेव सुत कृष्णदेवक विवाह पनिचोभ मूलक मधुकरक विवाह- अज्ञात वंश ओ जातिमे।सरिसव मूलक भवनाथ पौत्र कमलनयन पुत्र किशाईक विवाह - वलियास चमरु सुत गंगाधरक कन्यामे। चमरूक अपन विवाह अज्ञात कन्यासँ। अर्थात किशाईक सासूक वंशक कोनो ठेकान नहि। एहि किशाईक सन्तान मिथिलाक अनेक गाम मे पसरल छथि। परंच आइ समाज ओहि तथ्य कैँ उचिते रूपैँ विस्मृत कए चुकल अछि। एहि रूपक अनेक घटना अछि- यथा बुधवाल मूलक माधवक पौत्री भीमक कन्याक विवाह, जाहि लागिसँ अनेक घर व्याप्त अछि। सतलखा रामनाथसुत जगन्नाथक मात्रिक घुसौत उधोरण सुत रतनूक मात्रिक, पाली होराई सुत रामक मातृक सकराढ़ी मूलक वेणी सुत राधवक मात्रिक, सोदरपुर मूलक पाँखू सुत चान्दक मात्रिक, अलय मूलक दिनकर सुत हरिकरक मात्रिक, तिलय मूलक श्रीपति सुत विदूक मात्रिक इत्यादि देवदाशी परम्पराक छलीह अस्तु अज्ञात मानल गेलीह परंच हुनका लोकनिक सन्तान आइ समाजमे समादृत छथि। एहि प्रकारक उदहारण पाँजि मे भरल पड़ल अछि जे आब कालातीत भेला पर कोनो वंश पर कुप्रभाव नहि पड़त अपितु एहिना स्थित मे की निर्णय लेबाक चाही तकरा लेल मार्गदर्शन होएत।

आर उदाहरण: टेबुलक (१-९७) क नीचाँमे एहिमेसँ किछु उदाहरणक विस्तृत व्याख्या अछि।

**१.**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरिसव<br>*१७८/१* | वलियास<br>चमरू<br>गंगाधरक<br>मातृक | सरिसव | सकराढी | पनिचोभ | दरिहरा | पाली | नरवाल |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भवनाथ | | नाथू | गांगू | कान्ह | हेलू | होराई | चान्द |
| कमलनयन किशाई | *अज्ञात २३८॥०५* | विशो | गोगे | रूद | चान्द | *रामक मातृक* | देवघर |

**२.**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वुधवाल | पबौली | सतलखा | *जगन्नाथक मातृक* | घुसौत | *रतनूक मातृक* | दरिहरा | पाली | *रामक मातृक* | नरवाल |
| जाटू | भीम | रामनाथ | | उधोरण | *(अज्ञात)* | हेलू | होराई | *(अज्ञात)* | चान्द |
| माधव भीमसुता *१७८/२* | लक्ष्मी | जगन्नाथ (*अज्ञात*) | | रतनू | | चान्द | राम | | देवधर |

**३.**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माण्डर | सोदरपुर | अलय | माण्डर | सुरगन | पचही | पकलिया | सिम्भुनाम |
| रतिपति चन्द्रपति | देवे | रत्नधर | लगाई | वंशधर | कान्ह | जयपति | दूवे |
| *गोढिसुता (निम्नकुल) ७१/१* | पाँखू | भवदत्त | नरसिंह | | | सुपे | राम |

**४.**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोदपुर *१७७/२* | वलियास | *गंगाधरक मातृक* | सरिसव | सकराढी | पनिचोभ | दरिहरा | पाली | *रामक मातृक* | नरवाल |
| मतिकर | भमरू | *अंतर्जातिय* | नाथू | गांगे | कान्ह | हेलू | *हेलू* | | चान्द |

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सरिसव *१८६* | करमहा | सकराढी | *राघवक मातृक* | सोदरपुर | अलय | माण्डर | सुरगन | पचही | पकलिया | सिम्भुनाम |
| नोने | नरहरि | वेनी | *(अज्ञात)* | देवे | रत्नधर | लगाई | वंशीधर | कान्ह | जयपति | दुवे |
| श्रीनाथ चक्रपाणि | मति | राघव | | पाँखू | भवदत्त | नरसिंह | | | सुपे | राम |

६

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पवौली भानुदत | एकहरा | जगति | सोदरपुर | *चान्दक मातृक* | अलय | माण्डर | सुरगन | पचही | पकलिया | सिम्भुनाम |
| सुधापति | सुरपति | नोने | पाँखू | *(अज्ञात)* | रत्नधर | लगाई | वंशीधर | कान्ह | जयपति | दुवे |
| केशव सुता *१९६/७* | लक्ष्मीनाथ | होरे | चान्द | | भवदत्त | नरसिंह | | | सुपे | राम |

७.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोदरपुर | करमहा | माण्डर | अलय | *हरिकरक मातृक* | दरिहरा | नीमा टकवाल | सुईरी | गदहा पंडोली |
| गदाधर | रामनाथ | केशव | दिनकर | *(अज्ञात)* | नरसिंह | दामोदर | परशुराम | अरविन्द |
| विशो | महेश | जगतू | हरिकर | | केशव | रविशर्म्म | गोरी | निधि |
| कुमरसुता *१८४/२* | | | | | | | | |

८.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हरिअम | उदनपुर | माण्डर | पचही | करही | राउड दरिहरा | लहण्डा |
| गांगू | दामू | सुरसर | स्थिति | अदितु | शुक्ल विशो | बुधाई |
| केशव | पागू | हरि | साहब | साठू | | |
| *दामूसुता अंतर्जातिय* | | | | | | |

९.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोचराज पत्नी | खण्डवला | खौआल | फनन्दह | वलियास | बहेराढी | माण्डर |
| *सोहागो २०८/१* | सुरपति | कोने | हरिनाथ | विभाकर | वराह | सागर |
| | दुवे | नोने | रविनाथ | गुणाकर | गुणाकर | स्थिति |
| | *चन्द्रपति सुता कोचराज पत्नी* | | | | | |

१०.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पवौली | घुसौत | दरिहरा | *धारूक मातृक* | वहेराढी | माण्डर |
| शिवदत्त | अमरू | नन्दन | *(अज्ञात)* | आंगू | सागर |
| रूपदत *२०८/२* | जीवाई | धारू | | रूद | स्थिति |
| वाशुदेवसुता | | | | | |

**११.**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पवौली | एकहरा | जगति | सोदरपुर | पाली | सतलखा | गंगोली | डगरक माता | नदाम | *यवनी* |
| भानुदत्त | सुरपति | नोने | पाँखू | दुवे | दिवाकर | डगर | *यवनी दौलतिजहाँ* | धनञ्जय | *दौलतिजहाँ ४३* |
| सुधापति | लक्ष्मीनाथ | होरे | चान्द | हरिकर | गौरीश्वर | गंगाधर | | | |
| केशवसुता *११६/७* | | | | | | हरिहर | | | |

**१२.**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुजौली | खौआल | महिन्द्रवाड पाली | *लाखूक मातृक* | गंगोली | *डगरक माता* | नदाम | *यवनी* |
| गोपाल *२१६/१* | गोविन्द | लाखू यशोधर | *दौलतिजहाँ* | डगर | *दौलति जहाँ* | धनञ्ज़य | *दौलतिजहाँ* |
| वंशवर्द्धन | विशो | | | गंगाधर | | | |
| वलभद्रसुता | | | | | | | |

**१३.**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खण्डवला | माण्डर | पाली | दरिहरा | बहेराढी | जमुनी | माण्डर | *धारेश्वरक माता* |
| चान्द/चन्द्रपति | काशी | नोने | गुणे | गुणे | राम | धारेश्वर | *(अज्ञात)* |
| महेश | भीम | बाटू | अनन्दू | अफेल | गोनू | माधव माने | |
| गोपाल | | | | | | | |

**१४.**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| *गोढिक* | सरिसव | घुसौत | गंगोर | वलहा | मधुकर |
| *सागर* | गांगू | रतिकांत | हारू | सुधाकर | संतति |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| *तनया २१६/२* | रत्नपाणि | गुणाकर | वरदत्त | | |
| | *रघुपाणिसुता (गोढिमाता)* | | | | |

**१५.**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दरिहरा | सोदरपुर | दरिहरा | घुसौत | तेरहुता | नरवाल | *रतिक माता* |
| भोला | शंकर | खाटू | दामोदर | लाखू | नोनाई | *(अज्ञात)* |
| मनसुख | गंगाधर | नरपति | हरि | | रति | |
| यशुसुता | | | | | | |

**१६**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोदरपुर | खौआल | सोदरपुर | दरिहरा | पनिचोभ | चान्दो | तिलय | खौआल | सोदरपुर |
| राघव | पूरखू | नागू | धारू | रतन | कामेश्वर | श्रीपति | नोने | हरिदत्त |
| रत्नपति *२१५/१* | *हरिहरक-माता (देवदासी)* | दुवे | राम | रामकर | माधव | *विदूक-माता* | ढोढे | देवदास |
| यदुनाथ | | | | | | *(अज्ञात)* | | |

**१७.** *जानिक देवदास*

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वुधवाल | खौआल | जलीवाल | माण्डर | कुरहनि | तिलय श्रीपति | खौआल | सोदरपुर |
| चान्द *२१५/२* | गीरू | जीवे | देवादित्य | गुणेश्वर | *विद्यापतिक-माता(देवदासी)* | नोने | हरिदत्त |
| भानू | हरखू | थेग | नाथू | | | ढोढे | |
| सुधापति | | | | | | | |

**१८.** *जानिक देवदास*

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सोदरपुर | पाली | सुरगन | दरिहरा | *जीवेक-माता* | तिलय-श्रीपति | खौआल | सोदरपुर |
| लाखन | ज्ञान | रवि | जीवे | *देवदासी* | *लाखूक-माता* | ढोढे | हरदत्त |
| जनार्दन *२१४/१* | वाटू | वाचस्पति | अमरू | | *देवदासी* | | |
| चतुर्भूजसुता *१०२/०१* | | | | | | | |

**१९.** *जानिक देवदास*

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सोदरपुर | माण्डर | हरिअम | माण्डर | करमहा | खौआल | सोदरपुर |
| पशुपति | यशोधर | सोनी | नन्दन | *पहकर जागेक माता(देवदास)* | ढोढे | हरदत्त |
| श्रीहरि *२१४/२* | दामू | देवनाथ | रघु | | *हारूक-माता* | |
| हरिनाथ | | | | | अज्ञात | |

**२०.**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *जानिक* | पवौली | वुधवाल | वलियास | वभनियाम | मताउन | रकवाल | तिलय- श्रीपति |
| *देवदास २१३/१* | सभापति | पराण | धारू | होरे | धर्मू | कामदेव | *विद्यापतिक-माता(देवदासी)* |
| | गोप | नारायण | *श्रीरामक-माता(देवदासी)* | मनसुख | हरिपति | उधे | |
| | रतिपति | | | | | | |

**२१.**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *जानिक* | दरिहरा | पवौली | बुधवाल | खौआल | जलिवाल | माण्डर | कुरहनि | तिलय-श्रीपति |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *देवदास २१३/२* | रामनाथ | विद्यानाथ | मानू | गीरू | जीवे | देवादित्य | गुणीश्वर | *विद्यापतिक-माता(देवदासी)* |
| | रघुनी | गुणपति | सुधापति | हरखू | थेघ | नाथू | विद्यापति | |
| | हरिदेव *४७/३* | | | | | | | |

**२२.**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *पश्चिम देश सँ* | माण्डर | करमहा | खौआल | सोदरपुर | वभनियाम | सकराढी | दरिहरा | यमुगाम | पुरहदी |
| *आगत २१२/१* | लटाउँ | रघु | मित्रकर | शक्तू | गहेश्वर | टूनी | लक्ष्मीनाथ | कीर्तिवास | मतिश्वर |
| | होराई | शिव | जीवे | उधोरण | होरे | | | | धृतिकर |
| | *मधुसुदन-सुता(अज्ञातकुल)* | | | | | | | | |

**२३.**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| *पश्चिम देश सँ* | माण्डर | खण्डवला | दरिहरा | बहेराढी | खौआल | जालय |
| *आगत* | चन्द्रपति | दीनू | भवे | वराह | हरिहर | रतिधर |
| *२१२/२* | गोढि | गुणाकर | मेधू | नोने | रति | *मतिकर(माता अज्ञात)* |
| | शिव | | | | | |

२४

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *चर्मकार* | तल्हनपुर | टकवाल | दरिहरा | पञ्चोभ | मेरन्दी | ब्रह्मपुर | *बैजूक-माता* |
| *आनन्दा २११/१* | गढवय | जीवधर | पाठक | जगन्नाथ | परभू | बैजू | *आनन्दा* |
| | रवि | गहाय | हरि | | | दिवाकर | |
| | *मितूसुता २५३/६* | | हरिहर | | | | |

२५

| | | | |
|---|---|---|---|
| सोदरपुर | माण्डर | फनदह | नदाम |
| अफेल | धारू | हारू | कान्हा |
| दिवाकर | *विश्वनाथक-माता आनन्दाक-पुत्री* | सोन | *जयकरक-माता आनन्दाक-पुत्री* |
| रघु *२११/११* | | | |

२६

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सतलखा बुद्दिकर | बुधवाल<br>मुथे | सोदरपुर | टकवाल | नदाम | सतलखा |
| *२०९/१* | *गोविन्द रघुनन्दनसुता-अज्ञात कुल* | पशुपति हरिहर | गणपति चान्द | कान्ह-विवाह वसाउन अज्ञात | बुद्धिकर |
| | | | | हरखू | |

२७

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| करमहा | सोदरपुर | माण्डर | गाउल करमहा | वलियास | मोनारी | पाली | कुरिसमा | केउटराम पण्डोलि |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गोविन्द | वेणी | मेघ | लागे | गणपति | रूद | समटू | श्रीकर | गणपति |
| नोने<br>*२०९/११* | जगन्नाथ | *बामन (माता) अज्ञात* | *शंकर* | दिनपति | | वंशी | रवि | चान्द |
| देवनाथ | | | | | | | | |

२८

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विधवा | सोदरपुर | माण्डर | गाउल | वलियास | मोनारी | पाली | कुरिसमा | केउटराम<br>पण्डोली |
| | वेणी<br>जगन्नाथ | *मेघ वामन-माता अज्ञात* | लागे<br>शंकर | गणपति<br>दिनपति | रुद | समटू<br>वंशी | श्रीकर<br>रवि | गणपति<br>चान्द |

२९

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२०७/१* | खण्डवला | बुधवाल | बुधवाल | माण्डर | टकवाल | वलियास | ब्रह्मपुरा | मेरन्दी | कोर्थुआ |
| रजक<br>धरम | महेश<br>गोपाल<br>माधव | गणपति<br>गोपी | *धीरू*<br>*माता-रजकी भवानीनाथ* | बुद्धिकर<br>भवनाथ | केशव<br>रविदत्त | केशव<br>गोपाल | माँगु<br>गाँगु | कान्ह<br>नरसिंह | जादू |

३०

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *२०७/११* | हरिअम | वलियास | नरवाल | सतलखा | सुरगन | त्रिलाढी | डीह दरिहरा |
| रजक<br>धरम<br>मानिकी | सोम<br>वासुदेव<br>ज्ञानी | *राम*<br>*गोविन्दक-माता रजकी* | पराउँ<br>उधे | कान्हा<br>विभू-मात्रिक रजक परम्परा | भगव<br>रघु | रत्नाकर | रुद्रानन्द<br>विद्यानिधि |

३१

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| *१७९/१* | सोदरपुर | दरिहरा | पाली | नरवाल |
| | रविनाथ<br>दूवे<br>मासे | हेलू<br>चान्द | होराई<br>*रामक-माता अज्ञात* | चान्द<br>देवधर |

३२

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| *१७९/II* | करमहा | सोदरपुर | दरिहरा | घुसौत | दरिहरा | पाली |
| | भानू<br>हरखू<br>राघव | विधुपति<br>रामेश्वर | *मतिकर*<br>*सभापति-माता अज्ञात* | धारू<br>उधोरन | हेलू<br>चान्द | होराई<br>रामक माता |

३३

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८०/I* | सोदरपुर | टकवाल | यमुगाग्म | टकवाल | सुइरी | गदहा पण्डोलि |
| | विदू<br>ओहरि<br>बाबू | भवदेव<br>गंगाधर-मातृक अज्ञात | गणपति<br>जूड़ाउन-माता अज्ञात | *रविशर्म*<br>*पराउँ-माता अज्ञात*<br>*सूयन* | परशुराम<br>गौरी | अरविन्द<br>निधि |

३४

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८०/II* | सोदरपुर | माण्डर | बेलउँच | खौआल | घोसियाम | गदहा पण्डोलि |
| | हाउँ<br>लाखन<br>जनार्दन | मेधाकर<br>पिताम्वर | महिधर<br>खखनू | दामोदर<br>रुद | *माँगनि*<br>*वागेक-माता (अज्ञात)* | अरविन्द<br>लान्हि<br>चान्द |

३५

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८१/I* | सोदरपुर | सतलखा | वभनियाम | माण्डर | यमुगाम | सकराढी | पाली | गदहापण्डोलि |
| | गदाधर<br>ध्रूवानन्द | काशी<br>रामचन्द्र | सुरपति<br>माने | विष्णुपति<br>दामू | रघुपति<br>ऊँमापति | चाँडो<br>हाल्लेश्वर | देवशर्म<br>कान्ह | *अरविन्द*<br>*निधि(निषिद्धकुल)* |

३६.

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८१/२* | वुधवाल | दरिहरा | पचही | कोरड़ा | गदहापण्डोलि | | |
| | रति | सीधू | रतनाकर | कान्ह | *अरविन्द-(निषिद्धकुल)* | | |
| | गोविन्द | राम | *शीरूक-माता* | गागे | हरिकर | | |
| | दामू | | | | | | |

३७.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८२/१* | सरिसव | करमहा | सकराढी | पनिचोभ | माण्डर | यमुगाम | नीमा | मुसरी | गदहापण्डोलि |
| | नोनी | नरहरि | वेणी | *हरिकरक-माता अज्ञात* | वागीश्वर | रघुपति | टकवाल | परशुराम | *अरविन्द निधि (निषिद्धकुल)* |
| | श्रीनाथ | मति | राघव | महथू | शीरू | | दामोदर | गौरी | |
| | चक्रवाणि | | | | | | रविशर्म्म | | |

३८.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८२/२* | सोदरपुर | माण्डर | हरिअम | माण्डर | वुधवाल | मताउन | गदहापण्डोलि | |
| | पशुपति | यशोधर | सोन्हि | नन्दन | राम | भीम | *अरविन्द-(निषिद्धकुल)* | |
| | श्रीहरि | दामू | देवनाथ | *रघुक-माता* | नाथू | उमापति | निधि | |
| | हरिनाथ | | | *(अज्ञात)* | | | शीरू | |

३९.

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८३/१* | सोदरपुर | पाली | माण्डर | पचही | माण्डर | गदहापण्डोलि | |
| | बसाउन | महाई | मांगु | रत्नाकर | कान्ह | अरविन्द | |
| | उमापति | माधव | रति | *अफेलक-माता* | *गांगे-माता* | *निधि-(निषिद्धकुल)* | |
| | बाँके | | | *(अज्ञात)* | *(अज्ञात)* | हरिकर | |

४०.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८३/२* | हरिअम | दरिहरा | वुधवाल | सकराढी | पनिचोभ | माण्डर | यमुगाम | नीमा टकवाल | गदहापण्डोलि |
| | सोम | दामू | रघु | महाइ | मधुकर | वागीश्वर | रघुपति | दामोदर रविशर्म्म | अरविन्द |
| | वासुदेव कृष्णदेव | कृष्णदाश | माधव | *मणीषक मातृक(अज्ञात)* | *हरिकरक माता* | शीरू | | | *निधि- (निषिद्धकुल)* |

४१.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८४/१* | हरिअम | उदनपुर | माण्डर | पचही | करही | राउढ़ | लहन्दा | शुदी |
| | गांगू | दामू | सुरसर | स्थिति | अदितू | दरिहरा | दुधाई | |
| | केशव | पागू | हरि | साहेब | साँचू | शुक्लविशो | | |
| | दामू | | | | | अंतर्जातिय | | |

४२.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८४/२* | सोदरपुर | करमहा | माण्डर | अलय | दरिहरा | नीमा | सदूरी | गदहापण्डोलि |
| | गदाधर | रामनाथ | केशव | दिनकर | उधोरण नरसिंह | टकवाल | परशुराम | अरविन्द |
| | विशो | महेश | जगतू | *हरिकरक- माता* | केशव | दामोदर | रवि | *निधि- (निषिद्धकुल)* |
| | कुमर | | | *(अज्ञात)* | | रविशर्म | | |

४३

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८६/१* | पवौली | एकहरा | जगति | सोदरपुर | अलय | माण्डर | सुरगन | पचही | पकलिया | सिम्भुनाम |
| | भानूदत्त | सुरपति | नोने | पाँखू | रत्नधर | लगाई | वंशीधर | कान्ह | जयपति | दूवे |
| | सुधापति | लक्ष्मीनाथ | होरे | *चान्दक- माता* | भवदत्त | नरसिंह | | | सूपे | राम |
| | केशव | | | *(अज्ञात)* | | | | | | |

**४४.**

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८६/२* | सरिसव | करमहा | सकराढी | सोदरपुर | अलय | माण्डर | सुरगन | पचही | पकलिया | सिम्भुनाम-करमहा |
| | नोने | नहरि | वेणी | देवे | रत्नधर | लगाई | वंशीधर | कान्ह | जयपति | दूवे |
| | श्रीनाथ | मति | *राघवक-माता* | पाँखू | भवदत्त | नरसिंह | | | सूपे | राम |
| | चक्रपाणि | | | | | | | | | |

**४५.**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८७/१* | सोदरपुर | पाली | सोदरपुर | खौआल | पवौली | वलियाम | गंगोली | *नवरंगा(अंतर्जातिय)* |
| | वसाउन | रघुपति | बाबू | रघुपति | सुपन | दूवे | वरदत्त | कोउयार |
| | पशुपति | जशाई | *शिवक-माता* | दूवे | देवदत्त | शक्ति | सोमदत्त | श्रीपति |
| | नरहरि | | *(अज्ञात)* | | | | | दहिमत वाशुदेव |

**४६.**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८७/२* | सोदरपुर | हरिअम | माण्डर | खण्डवला | वलियास | गंगोली | *नवरंगा* | दहिभत |
| | शंकर | वेणी | माचो | श्रीहरि | दूवे | वरदत्त | *कोइयार* | वाशुदेव |
| | गोविन्द | जूडाउन | *जोरक-माता* | *गुदहरिक-माता* | शक्ति | सोमदत | *श्रीपति* | |
| | रघुनन्दन | | *(अज्ञात)* | | | | *(अज्ञात)* | |

**४७.**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१७७/१* | सोदरपुर | वलियास | सरिसव | सकराढी | पनचोभ | दरिहरा | सुण्डिपार पाली | |
| | मतिकर | भमरू | नाथू | गोगे | कान्ह | हेलू | हेलू | |
| | भीम | *गंगाधरक-माता* | विशो | गागे | रूद | चान्द | *रामक-माता* | |
| | नाथ | *(अज्ञात)* | | | | | *(अज्ञात)* | |

४८.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| *१८८/१* | ताँतनी | सोदरपुर | सकराढी | जालय | खण्डवला | भराठी | जालय | खण्डवला | भदुआल पागू |
| | आझो | हलधर | गोविन्द | गिरपति | लान्हि | सकराढी | जयशर्म | नरदेव | कोइयार राम |
| | | धारू | *कल्याणक-माता (अज्ञात)* | मन्नु | *विभाकरक-माता* | नरसिंह | विष्णुशर्म | | |
| | | *श्रीनाथसुता ताँती जाति मे विवाह* | | | *(अज्ञात)* | भाष्कर | | | |

४९.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| *१८८/२* | चर्मकारिणी | माण्डर | वभनियाम | छादन | |
| तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश | छादनगंगेशक | नाँई | *रत्नाकरक-मातृक(अज्ञात)* | गंगेश | |
| | वल्लभा | भवाइ | माहेश्वर | | |
| | | | जीवे | | |

५०.

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चर्मकारिणी | सोदरपुर | अलय | माण्डर | नरउन | पनिचोभ | खण्डवला | डीह दरिहरा | ब्रह्मपुर | कोरई |
| मेधा | शंकर | गादू | अफेल | मुशे | विद्यापति | रत्नाकर | मतिकर | मांगु | माण्डर |
| *१८९/१* | गोविन्द | श्रीनाथ | वासुदेव | जादू | रमापति | *सुरपतिक-माता (चर्मकारिणी)* | | | गांगू-मेधा |
| | परशुराम | | | | | | | | |

५१.

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८९/११ | सोदरपुर | पाली | माण्डर | सकौना | सकराढी | खण्डवला | डीह दरिहरा | ब्रह्मपुरा |
| | *बसाउन*<br>*पशुपति*<br>*वाचस्पति*<br>*भवानी-माता चर्मकारिणी* | महाई माधव | माँगू रति | बाढन दूबे | नारायणकर<br>रामकर | *रत्नाकर*<br>*सुरपति-माता अज्ञात* | मतिकर | मांगू<br>मेधा |

५२

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९०/१<br>हड़िणी<br>रुद्रमति | सोदरपुर | माण्डर | कुजौली | तिसूरी | खण्डवला | पाली | घोसियाम | |
| | डालू<br>गादू<br>विशो | गिरी<br>गागे | कान्ह<br>सुरपति | *खोजो*<br>*गूदी-माता*<br>*अज्ञात*<br>*हाड़ी* | शिवदत्त<br>शुभदत्त-माता<br>अज्ञात | मतिश्वर | जगन्नाथ-रुद्रमति विवाह<br>गोंग | |

५३

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९०/II | नरउन | माण्डर | जमूनी | तिसूरी | डीह खण्डवला | नवहथ पाली | धोसियाम |
| | मधुकर<br>रुचिकर<br>टूने | गहाइ<br>दिनकर | वीर | खाँजो | *शिवदत्त*<br>*शुभदत्त-माता अज्ञात* | मतिश्वर | जगन्नाथ-रुद्रमति<br>गोंग |

५४

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९१/I | खौआल | वहेराढ़ी | माण्डर | सकौना | दिघोइ | पाली |
| पाली<br>रजेश्वर<br>सुता रजक | साधुकर<br>श्रीकर<br>विभाकरसुता | गोंगू<br>ढोढ़े | विभू<br>भानूकर | गोपाल<br>गौरीपति | माधव<br>जगाई | *रतेश्वर विवाह अन्तर्जातीय* |

५५

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९१/II | खौआल | वहोराढ़ी | माण्डर | दिघोइ | | |
| | साधुकर<br>श्रीकर<br>विभाकर | गांगू<br>ढोढे | विभू-माता<br>भानुकर | *सुरेश्वर-रजकक कन्या* | रजकक विवाह<br>हड़िनी<br>रुद्रमतिक<br>पुत्रीसँ | |

५६

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९२/I | सोदरपुर | करमहा | एकहरा | खौआल | बेलउँच | माण्डर | कुरहनि | पकलिया |
| लगारी<br>गोपाई | मणिधर<br>राम<br>वामदेव | रघुनाथ | राम<br>गणपति | जाटू<br>परान | दीनू<br>थेघ | देवादित्य<br>पाँखू | गुणीश्वर<br>दीनू | श्रीकर |
| | गोपपुत्री विवाह | हरिनाथ | | | | | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| नरउन | गढ़<br>अलय | नरउन | गोरोहिनी |
| सोन<br>कान्ह | रुद<br>सुधाकर | सूज<br>जगन्नाथ | कुलपति<br>रातू |

५७

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९२/II | सोदरपुर | बेलउँच | पाली | गंगोली | अलय | माण्डर | गोरहनी |
| | काशी<br>गुणी<br>शंकर | *देवनाथ*<br>*कृष्णा-माता*<br>*अज्ञात* | गोविन्द<br>होरे | राम<br>महाई | यशाई<br>नारायण | हरिशर्म्म<br>देशू | कुलपति<br>रातू |

५८

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९३/I | हरिअम | दरिहरा | बुधवाल | सकराढ़ी | वहेराढ़ी | दरिहरा | वुधवाल | माण्डर | गोरहिनी |
| | सोम<br>वासुदेव<br>कृष्णदेव | दामू<br>कृष्णदाश | रघु<br>माधव | महाई<br>भनेश | दिनू<br>रघु | भीम<br>डाकू | रामादित्य<br>जोर | *देशू*<br>*लान्हि-*<br>*माता*<br>*अज्ञात* | परिसरा<br>कुलपति<br>रातू |

५९

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९३/II | सोदरपुर | घुसौत | माण्डर | जालय | भरेहा | पवौली | माण्डर | गोरहिनी |
| | मणिधर<br>राम<br>कृष्णदेव | रतनू<br>भवाई | जीबधर<br>कल्याण | जीवे<br>राम | वंशीधर<br>शीरू | जीवे<br>सुरसर | आँगनि<br>हरदत्त | परिसरा<br>कुलपति<br>रातू |

६०

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९४/I<br>चर्मकार<br>हिरुआ | सोदरपुर | माण्डर | फनन्दह | पकलिया | अलई | बेलमोहन | |
| | अफेल<br>दिवाकर<br>रघुसुता | *धारू*<br>*विद्यानाथ*<br>*(माता)*<br>*अज्ञात* | हारु<br>सोने-(माता)<br>अज्ञात | निधि | *सुता-*<br>*अन्तर्जातीय* | परान<br>गिरु-चर्मकार<br>हिरुआक<br>पुत्रीसँ | |

६१

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९४/II<br>तैलिक देवाई | खण्डवला | तिसौँत | पण्डोल | खजूरी | सकराढ़ी | | |
| | महिपति<br>कान्ह<br>विष्णुपति | जीवेश्वर-<br>माता अज्ञात<br>नन्द | वासुदेव<br>सुपन | पनिचोभ<br>धनपति | चान्द | तैलिक देवाई<br>अन्तर्जातीय | |
| | | | | | | | |

६२

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९५/I | करमौलि | हरिअम्ब | दरिहरा | फनन्दह | करमौली<br>गंगोली | पाण्डे | पाली | चान्दो | फनन्दह | पाण्डोलि<br>गांगोली |
| | गंगोली<br>पाण्डेकर्म | *माँदू*<br>*गाँगु*<br>*केशवसुता*<br>*महापात्रसँ*<br>*विवाह* | भवशर्म<br>वर्द्धमान | भीम<br>नरसिंह | करम<br>साधुकर | करम | पमकर<br>दुर्गादित्य<br>धरादित्य<br>पाण्डेकरम | सूर्यकर<br>हरादित्य | भीम<br>नरसिंह | |

६३

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९५/II<br>चर्मकार<br>हिरुआ | वुधवाल | सकराढ़ी | पाली | माण्डर | पुनन्दह | पकलिया | अलय | बेलमोहन | |
| | शिरू<br>मानू<br>नारायण | रतिपति<br>जसाउन | हरपति<br>अमरु | दिनकर<br>सुधे | शंकर | निधि | एसुता | परान<br>गीरू-<br>चर्मकार<br>हिरुआ | |
| | | | | | हारु | | | | |

६४

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९६/I<br>हड़िनी<br>रुद्रमति<br>रजक<br>परम्परा | दरिहरा | करमहा | पवौली | वुधवाल | माण्डर | दिघोय | |
| | शक्तू<br>जीवे<br>रामदेवसुता | जोर<br>भवनाथ | रुचिदत्त<br>गादू | होरे<br>उधे-माता | विभू-माता-<br>भाष्कर<br>रामकर | सुरेश्वर-<br>रजकक<br>कन्या-<br>विवाह<br>हड़िनी<br>रुद्रमतिक<br>कला<br>अन्तर्जातीय | |

६५

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९६/II<br>रजक<br>परम्परा | दरिहरा | पाली | माण्डर | दिघोइ | | | |
| अन्तर्जातीय | सोमेश्वर<br>सिद्धेश्वर<br>सुपन | *श्रीधर*<br>*रामदत्त-माता*<br>*अज्ञात* | दूबे<br>सुपे | सुरेश्वर-<br>रजकक<br>कन्या-<br>रजकक<br>विवाह<br>रुद्रमति<br>कन्या | | | |

६६

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९७/I<br>चाम्पो<br>यवनी | माण्डर | पचही | पवौली | पकलिया | तिरलाठी | करनैठा | कोइयार | |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | कृष्णपति<br>सूर्यपति<br>भैरव | शंकर<br>गणपति | मुरारी<br>बागे | चारुदत्त<br>गांगू | हरिकर<br>दिवाकर | चक्रेश्वर<br>राम | *शक्ति-पत्नी*<br>*चाम्पो*<br>*यवनी* | |

६७

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १९७/II<br>रजकक परम्परा | सोदरपुर | हरिअम | उदनपुर | झंझारपुर<br>पकलिया | |
| | भवे<br>रघुपति<br>रतिपति | विभू<br>बसाउन | *खाँतू*<br>*पाँखू-माता*<br>*रजकक परम्परा* | *माने-माता*<br>लक्ष्मीधर | |

६८

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९८/I | वुधवाल | पवौली | सतलखा | घुसौत | तेरहोत | कोइयार | भदुआल |
| | जाटू<br>माधव<br>भीम | भवदेव<br>लक्ष्मी | रामनाथ<br>*जगन्नाथक माता* | धोरण<br>रतनू | श्रीकर<br>*सूपे-माता* | लक्ष्मेश्वर<br>जगन्नाथ | अदित्य<br>भवानी |

६९

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९८/II | सोदरपुर | करमहा | माण्डर | पंचोभ | महुआ | भदुआल |
| | गदाधर<br>विशो<br>कुमर | रामनाथ<br>महेश | केशव<br>जगतू-माता<br>अज्ञात | रतिनाथ<br>त्रिपुरे | गिरिपाणि<br>रामपाणि | सूज |

७०

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १९९/I | सोदरपुर | सतलखा | वभनियाम | माण्डर | यमुगाम | सकराढ़ी | वहेराढ़ी | भदुआल |
| | गदाधर<br>ध्रुवानन्द<br>हरिकेश | काशी<br>रामचन्द्र | सुरपति<br>माने | विष्णुकान्त<br>दामू | रघुपति<br>उमापति | चाँड़ो-माता<br>अज्ञात<br>हल्लेश्वर | सोम<br>होरे | हरिकेश |

७१

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १९९/II | वलियास | गंगोली | विठुआल | खौआल | तिरलाठी | भदवाल |
| | रघु<br>रामनाथ<br>नरहरि | रघु<br>रामदेव | *चान्द*<br>*दशरथ-माता अज्ञात* | दामोदर<br>वासु | धनेश्वर<br>बोध | अदित्य<br>मानू |

७२

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| २००/I | सोदरपुर | वुधवाल | जगति | नरउन | भदवाल |
| | गदाधर<br>विशो<br>भानू | धीरू<br>रामनाथ | नोने<br>मिसरू | *डालू*<br>*रुचि-माता अज्ञात* | आदित्य<br>मानू |

७३

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २००/II | सोदरपुर | बहेराढ़ी | सोदरपुर | चकलिया | दरिहरा | पाली | पवौली |
| | श्रीकर<br>रघुनाथ<br>कृष्णदेव | उमापति<br>परमानन्द | खेदू<br>लाखू | रत्नधर<br>हरिनाथ | रतीश्वर<br>रघुनाथ-माता अज्ञात | गणपति<br>रति-माता अज्ञात | नरसिंह<br>चान्द-माता अज्ञात |

७४

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नरबंगा शाखा<br>२०१/I<br>यादव<br>जयसिंह | माण्डर | पाली | खौआल | पवौलि | वलियास | गंगोली | नरबंगा | दहिभत |
| | शिवपति<br>यज्ञपति<br>अफेल | मुरारी<br>पाँखू | रघुपति<br>दूबे | सुपन<br>देवदत्त | दूबे<br>शक्ति | वरदत्त<br>सोमदत्त | नोहरि<br>श्रीपति-अज्ञात<br>कुल | वासुदेव |

७५

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०१/II<br>यादव<br>रहमू | खण्डवला | दरिहरा | वुधवाल | सोदरपुर | दरिहरा | फनन्दह | कुजौली | पकलिया | अलय | पंचोभ |
| | म.म.दामोदर<br>म.म.विश्वम्भर<br>हृषिकेश पत्नी यादव | जीवे<br>रामदेव | मोनि<br>गणपति | भैरव<br>ठकरु-माता अज्ञात | सूपे<br>रातू | महनू<br>कान्ह | विभू<br>गुणे | भासे<br>मानू | हीरे | हारू |

७६

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०२/I | पण्डुआ | हरिअम | माण्डर | वहेराढ़ी | सतलखा | पचही | निचिता अलय | माण्डर | जालय | सिंहाश्रम |
| | जानू<br>गोपाल<br>यदुनाथ | नन्दन<br>बूटन-माता अज्ञात | महेश<br>रघु | बराह<br>दीनू | भासे<br>नोने | यज्ञपाणि<br>रतिपाणि | गणेश्वर<br>माधव | साहेब<br>मुरारी | कीर्तिधर<br>मूलधर | पाण्डे<br>सरवे |

७७

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०२/II | सोदरपुर | करमहा | माण्डर | अलय | माण्डर | जालय | सिंहाश्रम |
| | गदाधर<br>बीसो<br>कुमर | रामनाथ<br>महेश | केशव<br>जगतु | दिनकर<br>हरिकर | *सुरारी*<br>*चान्द-माता अज्ञात* | कीर्तिधर<br>मूलधर | पाण्डे<br>सरवे |

७८

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०३/११ | सोदरपुर | सकराढ़ी | पाली | माण्डर | फनन्दह | पकलिया | अलय | बेलमोहन |
| | पाँखू<br>पुरखू<br>भवानन्द | माधव-माता<br>यदुनाथ | हरपति<br>अमरू | दिनकर<br>सुधे | सोरे<br>हारू | निधि | एसुता | परान<br>गीरु-विवाह<br>हिरुआ<br>चर्मकारिन |

७९

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०३/१ परम ब्राह्मण-(महापात्र) | घुसौथ | खौआल | कुजौली | मताउन दरिहरा | गढ़ अलय | डीह दरिहरा |
| | केशव रुचि भवदेव | गौरी माधव | रामधर कृष्ण-माता अज्ञात | नारू बाटू-माता अज्ञात | जसाई | लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण |

८०

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०४/१ | सोदरपुर | वहेराढ़ी | सोदरपुर | चकलिया | विहरा दरिहरा | पाली | अलय | डीह दरिहरा |
| | श्रीकर रघुनाथ कृष्णदेव | उमापति परमानन्द | छेदू लाखू | रूपधर हरिनाथ | रूपधर रघुनाथ-माता-अज्ञात | गणपति रति-माता अज्ञात | महेश्वर जसाई | लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण |

८१

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०४/II | वुधवाल | माण्डर | जालय | कुजौली | मताउन दरिहरा | लय | डीह दरिहरा |
| | रति गोविन्द वांगु | श्रीमणि टेकी-माता अज्ञात | पागु सुधापति | गांगु रामधर | नारू बाटू-माता अज्ञात | जसाई | लक्षेश्वर होरे-परमब्राह्मण |

८२

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०५/I गुरुपत्नी | खण्डवला | करमहा | नरउन | तेरहोता | कुजौली | मराड़ |
| | ज्ञानपति सुरपति दूवे | गंगेश्वर श्रीधर | गौरीश्वर मुरारी | भवादित्य राजू | शिव | भट्टभूषण-गुरुपत्नीसँ विवाह |

८३

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०५/II | वुधवाल | खौआल | बेलौंच | विस्फी | अलय | डीह दरिहरे | डीह दरिहरा |
| | परान<br>मुरारी<br>अनन्त | बाटू<br>रतन | रघु<br>अनन्त | रूपे<br>धीरू-माता<br>अज्ञात | जसाई<br>रघु-माता<br>अज्ञात<br>गौरी | लक्षेश्वर<br>होरे | लक्षेश्वर<br>होरे-<br>परमब्राह्मण |

८४

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २०६/I<br>गंगोली परमब्राह्मण | सोदरपुर | सकराढ़ी | जालय | कुजौली | मताउन दरिहरा | अलय | दरिहरा |
| | पाँखू<br>पुरखू<br>भवानन्द | माधव-<br>माता<br>यदुनाथ | सुन्दर<br>यशोधर | गांगू<br>रामधर | नारू<br>बाटू-माता<br>अज्ञात | महेश्वर<br>जसाई | लक्षेश्वर-<br>विवाह<br>गंगोली<br>परमब्राह्मण |

८५

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २०६/II | सोदरपुर | बेलौंच | पाली | गंगोली | अलय | दरिहरा |
| | काशी<br>गुणी<br>शंकर | देवनाथ<br>कृष्ण-माता<br>अज्ञात | गोविन्द<br>होरे | राम<br>महाय | जसाई<br>नारायण-<br>माता<br>अज्ञात | लक्षेश्वर<br>होरे-विवाह<br>पथ पतिता<br>कन्या |

८६

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१६/I<br>यवनी<br>दौलत<br>जहाँ पुत्री | सोदरपुर | खौआल | महिन्द्रवार<br>पाली | गंगोली | खण्डवला | माण्डर | पाली | दरिहरा | बहेराढ़ी |
| | रघुपति<br>रतिपति<br>बलभद्र | गोविन्द<br>बीसो | नाथू<br>यशोधर | डगरू-<br>माता<br>अज्ञात<br>गंगाधर | चन्द्रपति<br>महेश<br>गोपाल | काशी<br>भीम | नोने<br>बाटू | गुणे<br>आनन्दु | गुणे<br>अफेल-<br>यवनीपुत्रीसँ<br>विवाह |

८७

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| जमूनी | माण्डर | चकरहद | हरीनी दिघोय | त्रिपुरे | गोण्डि |
| राम गोढ़ि | धारेश्वर-माता अज्ञात माधव माने | माने हरिकण्ठ | धनन्जय | गोढ़ाई | गोण्डि-गाउँ पुरन्दर पुत्री |

८८

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२७ | महिषी वुधवाल | सोदरपुर | वलियास | करमहा | सकराढ़ी | पंचोभ | पवौली | पाली |
| | चान्द रामचन्द्र गरुड़ रमणी बालगोपाल मही | रुचि जयदत्त | रुद हरिनाथ रुचिनाथ | दुखन सतार | हरीश्वर धाने गोनू रामकृष्ण | वाचस्पति महेश | जानू धरमू हरि | कृष्णदेव मुकुन्द |

८९

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२६/II | नरौन | पाली | पाली | दरिहरा | करमहा | एकहरा | माण्डर | सोदरपुर |
| | टूने गोनू हरिपाणि हरिनाथ प्राणपति | दामू गोपी | धीरू श्रीनाथ चीकू | गोपाल रतिदेव | पशुपति दशरथ रामचन्द्र परमानन्द | हरखू गोपी | नरहरि लक्ष्मीनाथ अभिमन्यु | हरखू जयराम |

९०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| २१८/I<br>पश्चिम देशसँ आगत चाँरो | करमहा | सरिसव | वभनियाम | यमुगाम | पुरहदी |
| | गंगेश्वर<br>राम<br>हरिकर | गांगू<br>रत्नपाणि | गोविन्द<br>ऐंठो | कीर्तिवास<br>नितिकर-माता अज्ञात | मतीश्वर<br>धृतिकर |

९१

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१८/II | सोदरपुर | पाली | सोदरपुर | दरिहरा | खण्डवला | वुधवाल | खौआल | ब्रह्मपुरा | पुरहद्दी |
| | नाथू<br>वासुदेव<br>श्रीपति | नरपति<br>रुचि | थेघ<br>यशोधर | धीरू<br>लाखन | कुसुम<br>धाने | वासू<br>वागू | सूभे<br>पाँथू | रघुनाथ<br>माँगू | रातू |

९२

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| २१९/I<br>केरवाल शाखा | महिन्द्रवार पाली | गंगोली | दरिहरा | केरवाल पाली | मोरसण्ड करमहा |
| | भादू<br>नाथूक माता-अज्ञात<br>यशोधर | गंगाधर<br>गदाधर | गोविन्द<br>सिरू | जयदत्त<br>गोपाल | ब्रह्मेश्वर<br>स्थिति |

९३

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| २१९/II | सोदरपुर | दरिहरा | पवौली | सुसैला | दरिहरा |
| | गोपीनाथ<br>हाउँ<br>जीवे | सुरसर<br>वीर<br>कुजौली<br>मुरारी<br>जागे | हरिहर<br>शशिधर | सूरे<br>माधव | लक्षेश्वर<br>होरे-विवाह<br>गंगोली<br>पथ<br>पतिता कन्या |

९४

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २२०/I<br>वार्तिनी<br>विधवा | पाली | पवौली | माण्डर | पाली | पुरिसमा | पंडौली |
| | हरि गोनि<br>सुधाकर | बागे<br>दूवन-<br>माता<br>अज्ञात | सर्वाय<br>श्रीकर | समरू<br>वंशी | श्रीकर<br>रवि | गणपति<br>चान्द-<br>विध्वाक<br>सन्तान |

९५

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२०/II | हरिअम | सोदरपुर | करमहा | खौआल | जमुनी | खौआल | घोसियाम | सुरगण | होइयार |
| | नरहरि<br>भवे<br>मुरारि | राम<br>भीम | हरिकर<br>मीतू | सुधाकर<br>बुद्धिकर | देवे<br>महेश्वर | दास<br>शशिकर | वशिष्ठ | देवशर्म्म<br>नोने | शिवसिंह<br>धाम |

९६

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २२१/I<br>धीवर<br>दासी | कुजौली | माण्डर | नरउन | माण्डर | सुरगण | निखुती |
| | जीवे<br>महाय<br>गोपीनाथ | प्रीतिकर<br>शशि | शशि<br>जीवे | भवादित्य<br>गणपति | नारायण<br>डालू | मंडन-पत्नी<br>धीवरदासी |

९७

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२१/II | माण्डर | करमहा | खौआल | बेलौँच | पाली | पचही | बलहा |
| | लटाउँ<br>होराय<br>मधुसूदन | रघु<br>शिव | मीतू<br>जीवे-<br>माता<br>अज्ञात | मित्रादित्य<br>केशू | माधव<br>गोप-<br>विवाह<br>दासी | इन्द्र<br>भव | खाँजो<br>दामू |

टेबुल (१-९७)क उदाहरण १ क व्याख्या: गुणवति हिमशा जे आन जातिक रहथि, हिनकर विवाह वलियासमूलक चमरूसँ भेलन्हि, जाहिमे बालक गंगाधर

भेलाह। एहिमे हुनकर संतति सरिसव मूलक नाथूसँ पुत्रीक विवाह- पुत्र विशो, फेर विशोक कन्याक विवाह सकराढ़ी मूलक गांगूसँ- ओहिमे बालक गोगे, गोगेक पुत्रीक विवाह पनिचोभ मूलक कान्हसँ ओहिमे पुत्र रुद, रुदक बेटीक विवाह दरिहरा मूलक हेलूसँ ओहिमे पुत्र चान्द, चान्दक पुत्रीक विवाह पाली मूलक होराईसँ जाहिमे पुत्र राम-रामक मातृक अज्ञात। रामक सन्तान (पुत्री)क विवाह नरवाल मूलक चान्दसँ। तिनकर बालक देवधर जे पूर्णतः शुद्ध भेलाह (छठम पीढ़ीमे)।

एहिना-

| | |
|---|---|
| बहेराढ़ी सँ वराहसुत नोनेक विवाह<br>खौआल हरिहर सुत रतिक विवाह<br>माण्डर मूलक गोंढि सुत शिवक विवाह<br>खण्डबलासँ दिनू सुत गुणाकरक विवाह<br>दरिहरासँ मने सुत मेघक विवाह | पश्चिम दिशासँ आगत<br>अज्ञात कुलशीलक कन्याक लागिमे भेलन्हि |
| तल्हनपुर मूलक रविसुत मिलूक विवाह<br>टंकबालसँ जीवधर सुत गहाईक विवाह<br>दरिहरा पा. हरिसुत हरिहरक विवाह<br>पनिचोभ जगन्नाथक विवाह<br>सोदरपुर दिवाकर सुत रघुक विवाह | चर्मकारिणी आनन्दाक सन्तानक<br>लागि मे छलन्हि |
| नदामसँ कान्हक विवाह<br>सोदरपुरसँ रतिपति सुत बलभद्रक विवाहक लागि<br>खौआल गोविन्द सुत विशोक विवाहक लागि<br>खण्डबला महेश सुत गोपालक विवाहक लागि | यवनी दौलति जहॉक सन्तानमे |
| खण्डबला सुरपति सुत दूवेक विवाहक लागि<br>करमहा गंगेश्वर सुत श्रीधर<br>नरउन गौरीश्वर सुत मुराठी<br>सकराढ़ी भवादित्य सुत रामू<br>कुजौली शिवक विवाह | माण्डर मराड़ मूलक भट्ट भूषण जे गुरू पत्नीसँ विवाह कएल तनिक सन्तानक लागिमे रहन्हि |
| वुधवालसँ परान पौत्र मुरारी सुत अनन्तक विवाह<br>खौआलसँ वादू सुत रतनक विवाह<br>बेलउँच रघु सुत अनन्तक विवाह<br>विस्फीसँ रूपेक विवाह<br>अलयसँ जसाईक विवाह | परम ब्राह्मण (महापात्रक) पुत्रीक संतानक लागि मे रहन्हि |
| सोदरपुर जीवेक विवाह<br>दरिहरा सुरसर सुत वीरक विवाह<br>माण्डरसँ सवाई सुत सुरसर क विवाह<br>पालीसँ समरु सुत सुरसरक विवाह<br>कुरिसमा सकराढ़ीसँ श्रीकर सुत रविक विवाह | वार्तिनी विधवा परम पथ पतिताक<br>सन्तानक लागि मे छलन्हि |

| | |
|---|---|
| खण्डवला विश्वम्भर सुत हृषिकेशक विवाह<br>दरिदरा जीवे सुत रामदेवक विवाह<br>बुधवालसँ मणि सुत गणपतिक विवाह<br>दरिहरासँ सुपे सुत रातूक विवाह<br>फनन्दहसँ महनू सुत कान्हक विवाह | यादव रहमूक पुत्रीक सन्तानक लागि मे छलन्हि |
| सोदरपुर सँ पुरखू सुत भवानन्दक विवाह<br>सकराढ़ी सँ माधवक विवाह<br>माण्डरसँ दिनकर सुत सुधेक विवाह<br>फनन्दह सँ सोरे सुत हारूक विवाह | चर्मकार हिरुआक पुत्रीक सन्तानक लागिमे छलन्हि |
| सोदरपुर मणिधर पौत्र रामसुत वासुदेवक विवाह<br>करमहा रघुनाथ सुत हरिनाथक विवाह<br>एकहरा रामसुत गणपतिक विवाह<br>खौआल जादूसुत परानक विवाह<br>बेलउँचसँ दिनूसुत थेघक विवाह<br>बेलउँचसँ दिनूसुत | गोप पुत्रीक सन्तानक लागिसँ छल |
| खौआल श्रीकर सुत दिवाकर विवाह<br>बहेराढ़ी गांगु सुत दोक विवाह<br>सकौना गोपाल सुत गौरी पतिक विवाह<br>दिधोय माधव सुत जगाईक विवाह | रजकक कन्या हड़िनी रूद्रमतिक पुत्रीक सन्तानक लागिमे छलन्हि |
| छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक<br>गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति | |
| सोदरपुर गोविन्द सुत परशुरामक विवाह<br>अलयसँ गादू सुत श्रीनाथक विवाह<br>माण्डरसँ अफेल सुत गादूक विवाह<br>पनिचोभ सँ विद्यापतिसुत रमापतिक विवाह | चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि |
| खण्डबलासँ सुरपतिसुत दूवे सुत चन्द्रपतिक पुत्रीक विवाह | आसामक कोच राजवंशी राजा सँ छलन्हि पुत्रीक नाम सोहागो |

## पाँ देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा पँञ्जी सँ मूल क्रमे

## बीजी पुरूषक नाम ओ पत्रांक


| | |
|---|---|
| गंगोली सँ बीजी गंगाधर | १/१ (१-१) |
| खण्डबला सँ बीजी संकर्षण | १/४ (१-४) |
| एकमा वलियास सँ बीजी धरनीधर | २-१ |
| बरूआनी मड़ार सँ बीजी दिवाकर | २-१ |
| धनोज सँ जनार्दन | २-२ |
| माण्डर सँ बीजी त्रिनयनभट्ट- | २-२ |
| बाढ़ अलय सँ बीजी गंगाधर | २=५ |
| मतौना दरिहरासँ बीजी श्रीकर | ३-२ |
| सोनकरिआम करमहा सँ बी जी मōमō बंशधर | ३-५ |
| आल सँ बीजी मōमō प्रजापति | ३ = ३ |
| घुतहरा सँ गांगु | ४-२ |
| महथौर अलय सँ बीजी बाढ़न | ४-२ |
| शक्रिराय पुर नरउन सँ बीजी-मुरारि | ४-३ |
| करूआनी सकराढ़ी सँ बीजी हरदत्त | ४-५ |
| सरिसब सँ बीजी रत्नपाणि | ४ = २ |
| टकबाल सँ वीजी हरिपाणि | ४=५ |
| डोम टेकारी ग्रामतत्र चतुर्वेदाध्यायी बीजी कामदेव | ५-४ |
| तेसहोता सकुराढ़ी सँ बीजी-गंगादित्य | ५=३ |
| कुजोली सँ बीजी दाँतीय | ५=४ |
| रेकौरा गंगौलीसँ पण्डीत केशव | ६-२ |
| मौनीसँ शंकरदाश | ६-२ |
| रेकौरा सकराढ़ी सँ बीजी कपिलानन्द | ६-३ |
| अथ पल्ली सँ बीजी कपिल देव | ६=१ |
| अवहिखण्ड भण्डरिसम सँ बीजी कुसुमादित्य | ७=१ |
| उचति भण्डरि सम सँ बीजी महिपाणि | ८-४ |
| बभनियाम सँ बीजी हरिशर्म्म | ८=३ |
| महवाल सँ बीजी माहब- | ९-१ |
| गढ़ विस्फी सँ बीजी विष्णुशर्मा | ९-४ |
| पबौली ग्रामो पार्यक वाचस्पति | १०-१ |
| जलक्योंपट्ट सवारीवासी वीजी दामोदर | १०-२ |
| गढ़ निखुति सँ बीजी दामोदर | १०-४ |
| तल्हनपुर सँ बीजी त्रिपाठी रूद्र | १०=२ |
| गढ़ यमुगाम सँ बीजी श्रीकर | ११-१ |
| अथरी दरिहरा सँ बीजी कमलपाणि | ११-२ |
| नरउन सँ बीजी मōम! महिधर | ११=२ |
| जजिवाल सँ बीजी दण्डपाणि | ११ = ५ |
| तिसउँत सँ बीजी विश्वम्भर | १२-१ |
| मेरन्दी सै बीजी जनार्दन | १२=४ |
| धनरवोरी वासी मड़ार सँ वीजी थाने | १३-१ |
| करहिया पनिचोम सँ बीजी चण्डेश्वर | १३-३ |
| हड़ेहत पनिचोम सँ बीजी महुमहल | १३-५ |
| मालिछ सँ बीजी वत्सेश्वर | १३=५ |
| टकबाल से बीजी हरिकंठ | १४-१ |
| जगति विस्फी सँ बीजी जयकर | १४-४ |
| केउटी राडढ़ सँ बीजी मसुवास बासू | १४=१ |
| चान्दो वलियास सँ बीजी पुरूषोतम | १५=२ |
| घोसियाम सँ बीजी आवस्थिक सुपानन्द | १६-१ |
| बुधवाल सँ वीजी वासुदेव | १६ = २ |
| त्रिलाठी धुसौत सँ बीजी नरउन | १६ = ५ |
| यशानन्द टकवाल सँ बीजी पाँखू | १७-४ |
| नदाम सँ बीजी हरिकर | १७=४ |
| पद्मपुर पकलिया सँ वीजी बासुदेव | १८-२ |
| उदनपुर जजिवाल सँ बीजी आवस्थिक माने | १८-४ |
| हरिअम सँ वीजी दिक्षीत झाउँ | १८ = २ |
| सुइरी सँ बीजी शेखर | १८ = ३ |
| गोविन्द वन सँ नन्दन सुत गुणीश्वर | १९-२ |
| रहुआ सँ वर्द्धमान | १९ = २ |
| डोढ़वाल सँ नरदेव | १९ = ६ |
| अलय सँ बीजी धरनीधर | २०- १ |
| गाउल करमहा सँ वीजी मुरारि | २०= १ |
| उपमन्यु गोत्रे गढ़ एकहरीसँ हरिकर क्वचित जगतगुरु भदेश्वर | २१-१ |
| सरौनीसँ बीजी मल्लिकराज | २१-४ |
| बड़कोरी सँ अतिरूप दौ इति प्राचीन लिखनं | २१ –५ |

सिंहाश्रम सँ बीजी मōमō हलायुध २३-२
हल्लैश्वर सुरेश्वर जीवेश्वरा मōमōप. सोदरपुर पार्यका: २३-४
बरेबा सँ बीजी कृष्ण २३-५
चोढ़वाल सकाराढ़ी सँ बीजी सिद्धेश्वर २४-३
शाण्डिल्य गोत्रे करमहा सँ बीजी सुरेश्वर २५-१
कटाई सँ बीजी वाचस्पति २५-३
दिनारी सरिसब सँ वीजी जनार्दन २५-७
राढ़ी कोइयार सँ बीजी शूलपाणि २५=५
चाउटी टकवालसँ बीजी रत्नेश्वर २५=७
थरियासँ बीजी त्रिलोचन २६-३
सकुरी सँ बीजी मōमō देयी २७-३
करमौली गंगोली सँ बीजी मधुकर २७-५
हरसिंहपुर निखूतिसँ बीजी धारेश्वर २७=३
गंगुआलसँ बीजी लोम २७=४
नरघोध टकबाल सँ बीजीउहरि २७ = ६
कञ्जग्राम सकराढ़ी सँ बीजी धनञ्जय २९ -४
धुसौत सँ बीजी बासुदेव ३० = ६
वलहा वलियास सँ बीजी वर्द्धमान ३२- ६
सुरगन सँ बीजी मōमō उँमापति ३३ – ४
यमुगाम सँ बीजी उदयकंठ ३९-६
भरेहा सँ बीजी लक्ष्मीधर ४० – १
सतलखा सँ वीजी चक्रपाणि ४२ = ३
यमुगाम सँ बीजी हरदत्त ४३-४
यमुगाम सँ बीजी ओहरि ४४-३
पिहवाल सँ बीजी अर्थपति ४४=१
चनुआल करमहा सँ बीजी मनोधर ४६= १
उल्लू कुजौली सँ बीजी दिनकर ४८-४
हिराउत सुरगनसँ बीजी हल्लेश्वर ४८=२
कोइयार सँ बीजी वेद ४९-२
सुसैना अलय सँ बीजी बलभद्र ५१-५
यमुगाम सँ बीजी देवधर ५४-२
पण्डुआ सँ बीजी मōमō पाठक गोविन्द ५७= २
वगड़ा सँ सिद्धेश्वर दौ ६२-५
विठुआल सँ बीजी मनोधर ६५=२
सरौनी सँ बीजी डल्लन ६६-३
यमुगाम सँ वीजी उदयकर ६६=१
गौतम गोत्रे पण्डुआ सँ धीरेश्वर सुत द्युतिकर ६९-३

कुरिसमा सकराढ़ी सँ बीजी श्यामकंठ ७२=४
पनिहारी दरिहरा सँ आशाधर ७३-४
जलकौर गंगोली सँ बीजी सिद्धेश्वर ८६–५
चन्दई दिधोय सँ बीजी श्री हर्ष एसुता
सान्धि विग्रहिक शिवदत्त सर्वदत्त भाण्डागारीक भवदत्त ९५-१
खौआल मूल अन्तर्गत ओइनि ग्रामो पार्यक उयनाह देव ९५–६
निकाठी माण्डर सँ बीजी ओहरि १०६=२
दोर्दन्त अलय सँ बीजी दन्तीश्वर एसुत ११२-१
गंगादित्य
एते मेघापत्य अन्तर्गत बीजी पुरूषा ११५
ब्रह्मपुरा दिधोय सँ बीजी देल्हन ए सुत आवस्थिक
राम १२८-१
जरहटिया सँ बीजी सेवकेर १२९-३
फूहनानि जालय सँ बीजी सेवकर १२९–६
फूहनानि जालयसँ बीजी सुरेश्वर १२९-६

डीह सिम्मुनाम वासी करमहा सँ बीजी रत्नपाणि १३०=२
गोविन्द वन पनिचोभ सँ बीजी दामोदर १३४=३
भरवाल परिसरा सँ बीजी शंखपाणि १३८-१
गढ़अलय सँ बीजी क्षुद्रहरि १४०-२
कोइयार सँ बीजी शिवशर्म्म १४०=२
वसुआल अलय सँ बीजी नरसिंह १४२=५

दहिभत सँ मōमō धर्माध्यक्षक भाष्कर १४४-२
उघांत जालय सँ बीजी शंखधर १५८-६
रतन पुर तिलयसँ बीजी ए सुत तारापति
गंगोरसँ म.म. पा. हरिनाथ सुत रामनाथ मटिहानीसँ १५९-५
पाण्डवी सम्प्रदाय १५९–१
नेहरा वासी जल्लकी सँ खड्गधर सोदर चक्रधर १६१-६
सुइरी से पाठक हरि १६२=३
कोथुआ सँ बीजी विशो १६४-४
महुआ सँ बीजी अभिनन्द ए सुता सुरानन्द
देवानन्द वासुदेव १६४=१
दहिभत सँ रतिधर ए सुत किर्तिधर १६४-३
करनैठा सकराढ़ी सँ बासुदेव रज्जेश्वरा परनामा १६५-४
कोथुआ सँ वीजी विशेश्वर १६५-७
नरौछ वासी गढ़ बेलउँच सँ वास्तु ए सुत लाखू १६७-३
कलहिया वासी यमुगाम सँ बीजी मुक्तिधर सुतो

जीवधर कीर्तिधरो १६९=१
फेनसउ गंगोली सँ मिश्र धूर्ज्जटी १७३=५
लाहन सिंहाश्रम सँ जयदेव ए सुत महादेव १७४-२
सम्भुआल सकुरी सँ बीजी राम १८७=१
खोरी सिंहाश्रम सँ बीजी पण्डित श्री निवास १८७=५
कलिगामसँ बीजी विभाकर ए सुता सावेचक्रेश्वर १९८-६
ओझोलि वासी कुसमाल सँ बीजी कमलपाणि २०५-४
नवहथ गंगोली सँ बीजी गुणपति २०५=६
डीह सरिसब सँ बीजी सुत रामचन्द्र सुत मधुकर २१०-२
दोलमान पुर वासी कोवारी पनिचोभ सँ बीजी चण्डेश्वर २११-५
परसण्डा सँ बीजी शुचिकर २१४-२
काश्यप गोत्रे बुधवाल सँ बीजी पीताम्बर सुत कान्ह २१५=१
हड़हत पनिचोभ सँ अठहरवासी जीवेश्वर २१५=३
दूबासकराढ़ी सँ मतिकर ए सुत नय देव २१८-४
तिलय सँ रतनपुर वासी गंगाधरो बीजी २१८-६
डीह सिम्भुनाम सँ मनोधर ए सुत जीवेश्वर २१०=१
भिगुआ सँ बीजी सोम ए सुत भीम २२३-६
माहब जल्लकी सँ विन्ध्येश्वर सुत कामेश्वर २२४-५
सोना गोआड़ी दहिभत सँ देवपाणि २२४=६
भूतहरी कलिगाम सँ वीजी महेश्वर सुत आदिनाथ २२७-३
सकराढ़ी सँ मतिदेव ए सुत नयदेव २३२-४
धनाठी वासी गोरा जजिवाल सँ याज्ञी कपिल २३५-२
निचिता कुढ़ वासी अलय सँ देवपति सुत सोमेश्वर २३६-६
कन्होली घुसौत सँ वीजी पृथ्वीधर सुत याज्ञिक फूहन २५३=४
मानेकुढ़ वासी सीधब गंगोली सँ बीजी प्रितिकर २५३=६
होइया सँ बीजी त्रिपाठी केशव २५४=३
मेरन्दी सँ बीजी कमलपाणि ए सुत मिश्र शिव २५४=५
बांगटी सुरगनसँ राउल थाने ए सुत सर्वज्ञ आदू
गुलदी खण्डबला सँ हलधर सुत गिरीश्वर ए सुत वीरेश्वर गुणीश्वरौ
वीरेश्वरसुत नारायण २७५-३
बेला सँ वामनो बीजी तत्र सन्तति राज निकटवर्त्ती ज्ञानकर २७५=६
माण्डव्य गोत्रे कोथुवासँ दिवाकर २७६-१
जगन्नाथ पुर वासी कोइयार सँ मधुकर जसधर प्रसिद्धः २८०=२
पंचप्रस्थ केउँटराम सँ देवानन्द २८०=५ १-२
जरैलवासी कोइयार सँ सिधु सुत गंगेश्वर २८० = ३

अवरझटी पाली सँ मधुमनए सुत होरे ए सुत योगीश्वर सुत
भोगीश्वर सुत कामेश्वर सुत ज्योतिष
विरेश्वर कविशेखर इति प्रसिद्ध २८४-३
ग्राम द्वयो पार्यक एसुत ठो चण्डेश्वर
चहुय वासी कोदरिया दिघोय सँ वीजी नरसिंह २८४-३
जजुआल वासी सुसैला अलई सँ मनोधरबीजी २९०=२
खण्डबला ग्राम समाप्त

अथ सरिसब ग्राम
करड़ियावासी खोपा सँ बीजी जीवेश्वर २९२=५
वारीसुरौर सँ बीजी श्रीधर सुत शंखपाणि २९७=६
महिषी मालती वासी जल्लकी सँ दामोदर सुत बान्धव २९९-४
भरवला सँ बीजी चण्डेश्वर
मैलामवासी भण्डारिसम सँ देवदत्त सुत वंशधर ३११=२
सुहारी दिधोय सँ बीजी धीरेश्वर सुत देहरि ३१२-६
कोइयार सँ विनायक ए सुत गोविन्द ३१४-१
भराठी सकराढ़ी सँ बीजी हरदत्त सुत दशरथ सुत राम ३१५-४
कुरिसमा सकराढ़ी सँ बीजी मनोरथ सुत संकर्षण ३१६-४
चणौर कुसमाल सँ बीजी दिवाक सुत विश्वरूप ३१६-५
गण्डबाल वासी वुसवन सँ बीजी महत्तम
हल्लेश्वर सुत त्रियम्बक ३१८-७
ननौर वासी जालय सँ पद्मनाम सुत देवनाम ३१८=२
गढ़ परिसरा सँ बीजी हलायुत सुत भद्रेश्वर ३२६-४
कोइयार सँ मिश्र माधव सुत गोविन्द सुत विशो ३३९-४
टिटिहा अलय सँ बीजी राम सुत शुभंकर ३४१-३
हावीवासी जल्लकी सँ बीजी खड्गधर सुत शशिनाथ ३४१-५
लहण्डा गंगोली सँ अष्ट ग्रामी पुरूषोत्तम सुत शुभंकर ३४४=६
कोइली वासी जालय सँ बीजी शिवदत्त सुत सूर्यकर ३४५-२
लहोला सँ देवदत्त ए सुत शिवदत्त ३४५=३
बाढ़ वासी चोठवाल सकराढ़ी सँ श्री हर्ष सुत बासुदेव ३४६=४
वाखरि वासी तपोवन सँ बीजी नारायण ३४६=५
महतराम वासी सुरौर सँ वीजी शिव सुत हरिगंग ३५३=६
महुखण्ड वलियास सँ बीजी सर्वानन्द सुत ज्ञान ३५४=२
उत्तिम पुर दिघोय सँ नरसिंह सुत पुरूषोत्तम ३५५=५
देशुआल वासी त्रिलाठी घुसौत सँ शिवशर्म्मा ३५९=१
कोइयार सँ सान्हन सुत श्रीधर ३६३-५
जजुआल सँ हल्लेश्वर सुत विरेश्वर ३७४=७

डीह भण्डारिसम सँ श्रीकर सुत गणपति-गौरी पति ३७५-३

सहश्रामवासी पिण्डोखरि सुरगन सँ विरेश्वरसन्तति ३७५-५

खांगुड़ सरिसब ग्राम समाप्त

जौंकी ग्राम

तपनपुर दिघोय सँ बीजी योगीश्वर सुत ध्यानेश्वर ३७८-२

सकरहोन सँ बीजी हल्लेश्वर ए सुत कान्ह ३७९-५

सुइरी सँ अमोघ सुत दिवाकर ३७९=५

सिमरीवासी बुसवन सँ नन्दीश्वर सुत योगे ३८०-४

हराउत वासी भदुआल दरिहरासँ बीजी नोनदेव ए सुत नर देव ३८२=५

सकुरी ग्राम

नगरयौंक वासी सवास कुसमाल सँ बीजी रैधर सुत रतिधर ३९२=४

फेनसउ गंगोली सँ नारायण सुत शूलपाणि सुत देवधर ३९४-१

खांगुड़ वासी परिसरा सँ बीजी हलायुध सुत उँमापति

सोहास वासी सहुली परिसरासँ बीजी

भद्रेश्वर सुत गोविन्द सुत दामोदर ४१४-३

मासवासी अलाम्बुकाक्ष गोत्रे कटाई सँ बीजी यटाधर सुत बलभद्रादय ४१७=३

कात्यायन गोत्रे जालय सँ शुभंकर ४१७=४

सोनदह वासी कलिगाम सँ बीजी गणेश्वर सुत जोन मुर्तिधर ४१८=४

नरौंछ वासी गढ़ बेलउँच सँ रत्नेश्वर सुत वुद्धिकर ४१९=२

दहुला वासी त्रिलाढी घुसौंत सँ नरसिंह सन्तति ए सुत शोरे ४१९=५

सान्हा वासी जल्लकी सँ वीजीदामोदर सुत माघव ४२०-५

हसौली सोदर पुर ग्राम समाप्ताः

कुसौली सोदरपुर ग्रामारम्भः

कौण्डिल्यगोत्रे गदहा पण्डोलि सँ बीजी लक्ष्मी शर्मा

ए सुत मण्डनादित्य ४२४-६

ननौती सँ बीजी देल्हन सुतो कान्ह आवस्थिकराम ४३९-६

बगड़ा पनिचोभ सँ बीजी उँमापति सुत पीताम्बर ४४०-५

दशउथ वासी सुसैला अलय सँ बीजी ब्रहमेश्वर ए सुत बलभद्र ४४४=६

पाली सुइरी सँ बीजी मयाधर ए सुत सर्वेश्वर पालीवासी ४४१-४

करहना वासी नरवाल सँ बीजी मधुकर सुत नन्दीश्वर ४४३=३

करनैठा सकरीढ़ी सँ नारायण बीजी सुत शंखपाणि ४४५=३

केउँटराम पण्डोली सँ ज्ञानकर सुत भादू ४६१-३

करहिया पनिचोम सँ गढ़ वासी शिवेश्वर खण्डबला हलायुध दौ ४७२-५

नाधावासी सुरगन सँ हल्लेश्वर ४७२=५

जगन्नाथ पुर वासी दिघोयसँ राम सुत सुरेश्वर ४८६-३

थरिया सँ श्री हर्ष सुत घृतिकर ४८६-६

गौतम गोत्रे ब्रहमपुरा सँ नदियाम वासी वापट सुत राम ४९१-१

डीह राउढ़ सँ राउत धान्धु सुतजयादित्य सुतभीम पाणिदयः ५१८-५

वालि ग्राम

दिगउन्ध ग्राम ५२५-४

रैयाम ग्राम ५२९=५

मानी ग्राम ५३६-६

जगौर ग्राम ५३९-६

महिया ग्राम ५४०-१

खोरि ग्राम ५५३-३

एते सोदर पुर विभक्तानु कुल शाखा समाप्त : शाके १६४४ (सोलह सौ चौवालिस) ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशयां कुजे ककरौड़ ग्राम पण्डुआ सँ देवानन्द प्रो छोटी शर्म्मण करपल्लवैर रचिता-५४६-२

बढ़ियाम, पवौलि शाखा ५४९

डीह सरिसब सँ अनदहोम वासी यशच्चन्द्र सुत मधुकर उ. टी. ५५२-१

कटिहार वासी सरौनी सँ बीजी महेश्वर ए सुत हरादित्य उ.टी. ५५२-१

नवनगर घोसोत सँ बीजी जीवधर सुत गंगाधर ५५९-१

बरहैता वासी गौतम गोत्रे खण्डबला सँ होरेश्वर सुत हरदत्त ५६४=३

पबौली (पर्वपल्ली) वदियाम शाखा समाप्ताः

शाके १६४४(सोलह सए चौवालिस) श्रावण

प्रथम कृष्ण नवम्यां बुधे ककरौड़

ग्राम पण्डुआ सँ पञ्जी पंचानन्द देवानन्द

प्रो छोटी शर्म्मणः कर पल्लवैर रचिता- ५६९-३

अथ दरिहरासँ रतौली शाखा- ५७१=१

देवानन्द पञजी सँ उपाधि युक्त नाम

माण्डर सँ बीजी त्रिनयन भट्ट —२-२
माण्डर सँ सोढ़र जय सिंह तर्काचार्यास्त्र
महास्र विद्या पारग महामहोपाध्याय नरसिंह २-४
माण्डर सँ महामहो नारायण २=२
अलय सँ मōमō पाध्याय रामेश्वर ३-२
करमहा सँ महामहो हरिब्रह्म महामहो. हरिकेश
महामहो धूर्त्तराज गोनू ३-५
खौआल सँ धर्माधिरणीक महामहो हरिशर्मा ३=४
नरउन सँ पनाइत भद्रेश्वर ४-४
सकराढ़ी सँ महामहो कारू ४=१
टकबाल सँ मōमō वत्सेश्वर मōमō रामेश्वर ५-१
खौआल सँ धर्माध्यक्ष होरिल — ५-३
अथ डोम टेकारी तत्रचतुर्वेदाध्यायी कामदेव
सुत याज्ञिक परशुराम त्रिपाठी कृष्ण दिक्षित सोम ५-४
महामहो राम महामहो शिवदाश ५-४
खण्डबला ग्रामो पार्यक साँइ प्रō संकर्षण भौर
खण्डबला सँ मōमō पाō चन्द्रपति ए सुता मōमōपाō
थेध मōमō मेध भō मō पाō दामोदर मिथिला राज्योपार्यक६-३
पालीसँ आचार्य लक्ष्मीकर ६=३
लहुण्डा सँ गांगु ७-१
गंगोली सै मōमō सुपट ८-३
विस्फी सँ सांधिविग्रहिक देवादित्य राजवल्लभ भवादित्य ९-४
पार्णागारिक वीरेश्वर वार्तिक नैवन्धिक धीरेश्वर ९-४
सप्रक्रय महासामन्त५आधिपति महामत्तक गणेश्वर
भाण्डागारिक यटेश्वर स्थानान्तरिक हरदत्त मुद्राहस्तक
लक्ष्मीदत्त राजवल्लभ शुभदत्ताः

बहेराढ़ी सँ स्थानान्तरिक रति १०-१
गढ़निखूति सँ त्रिपाठी रूद्र सुत महत्तक सुरेश्वर १०-४
ए सुत सान्धिविग्रहिक हरिहर ए सुत महत्तक विद्याधर ए सुत महत्तक
जगद्धर
माण्डर सँ शन्तिकरणिक पाँखू १४=४
सुरगन सँ राउल हरिकेश १६-२
बुधवाल सँ सदुपाध्याय भानु १६=४
टकबाल सँ एकान्तरिक गोपाल १७-४
हरिअम्बसँ दिक्षित झाँउँ सुत याज्ञिक त्रिलोचन १८=२
जालय सँ मōमō रामेश्वर सुत महत्तक गणपति १९-६
महत्तक रतिधर सदुपाध्याय महिधराः
एकहरा सँ खनतरी दिवाकर १९=३
खौआल सँ मō साधुकर सुत मōमō सुधाकर ए सुत
महामहो वुद्धिकर २१-५
सकराढ़ी सँ मōमō हरिहर सुता सदु. नादू
सदु. भादू सदु. सुपे सुदु.चाँड़ो २१=१
दरिहरा सँ मōमō हरिहर २२-४
वलियास सँ मōमō रामशर्म्म २२=३
सोदरपुर सँ मōमō हल्लेश्वर मōमō सुरेश्वर मōमō
जीवेश्वर २३-३
सरौनी सँ धर्माध्यक्षक लड़ाउँ २४-६
खौआलसँ धर्माध्यक्षक मōमō भवशर्म्म २४-६
कटाइ सँ कवि केशरी मōमō भीम २५-४
सकराढ़ी सँ धर्माध्यक्षक सर्वानन्द २५-५
माण्डर सँ कापनि माघव २५=२
निखूतिसँ फूलहर गौंढि २५=५
जाजेवाल सँ आवस्थिक सिद्धेश्वर २६-१
विनती सँ पराक अच्युत २६-५
दूवा सँ शिवशर्म्म २६-६
माण्डर सँ मōमō वटेश २६=१
सोदरपुर सँ मōमōपाō विश्वनाथ २६=५
अलयसँ महो ग्रहेश्वर सुतो धर्माधिकरणिक मōमō
गदाधर मōमō सुधाकरौ २७-१
सकुरी सँ मōमō देई २७-३
खण्डबला सँ मōमō रामभद्र २७-६
सकराढ़ी सँ मōमō मिश्र गयन २७-२
निखुति सँ महामत्तक गणेश्वर ए सुतो महत्तक
रत्नेश्वर सन्धि विग्राहिक हिमू ए सुत मुद्रा हस्तक २७=३
जीवेश्वर ए सुत पुष्प भट्ट गोढि २७=
माण्डर सँ कविराज शुभंकर २९=१
छादन सँ उपाय कारक मōमō वर्द्धमान सुता च
खण्डबला सँ शिवनाथ पत्नी ३०=५
वलियास सँ आवस्थिक मधुकर ३१-४
बेलउँच सँ राजवल्लभ लक्ष्मी सुत खांड़ साठू ३१=४
सुरगन सँ मōमō उँमापति सुत मōमō उग्रपति
सुत मōमō प्राणपति सुत मōमō तारापति सुत म.म. विश्वपति सुत
म.म. आभो एसुत
मुद्राहस्तक कुल छेत्रोपार्यक राउल ३३-४
खण्डबला सँ मōमō मधुसूदन सुत मōमō भवदेव ३४=१

खौआल सँ ज्योō डींगर ३४=५

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक मōमō गंगेश

सुताच बभनियाम सँ जयादित्य सुत साधुकरपत्नी ३९-२

भरेहा सँ धर्माध्यक्षक गढ़ाउँ ४०-१

सोदरपुर सँ मōमō रविनाथ मōमō रधुनाथ म.म.लक्ष्मीनाथ ४०-४

महमहो रविनाथ सुता मōमō जीवनाथ मōमō

भवनाथ प्रō अयाची दूबे मōमō देवनाथा:
मōमōपाō शंकर मō महादेव मō भासे मō दाशे

मōमō गोविन्द महो गदाधर
माण्डर सँ महामहत्तक जोर ४७=२

सुरगन सँ पुरोहित धनेश्वर पुरोहितगुणीश्वर ४८=३

माण्डर सँ प्रसाद शुभंकर ५१=४

वलियास सँ पनिघोघ मटिघोघ ५२-६

एकहरा सँ महामहो हरिनाथ सुत मōमō भवेश्वर ५३-१

ए सुतो धर्माधिकराणिक वाढ़ू राज पण्डित गढ़कू ५४

घुसौत सँ महो बुद्धिकर सुतौ महो हलधर ५६-४

महो केशवो सुत मōमōपाō गोविन्द सुता महो लक्ष्मीनाथ म.म.
विद्यापति म.म. दामोदर
म. रामनाथ आगमाचार्यक देवनाथ महो गोपीनाथ कन्टकोद्धार्कारक
मōमō मधुसूदन महो जनार्दन

वलियास सँ मōमō माधू ५९-४

अलय सँ मōमō सुधाकर सुतो मōमōगोढ़ि मō माणि ५९=२

खण्डबला सँ मōमō रामचन्द्र मōमō गोपाल मōमō
अच्युत मōमō पाō राजर्षि परमानन्द ५९=४

बहेराढ़ी सँ मōमō विशो सुत महो वागीश्वर ६०=३

बुधवाल सँ महो हरि सुत सदुō कुलपति ६१-६

माण्डर सँ मōमō यज्ञपति सुत मōमō नरहरि ६२-६

खण्डबला सँ अग्निहोत्रिक मōमō विश्वम्भर ६३-२

सकराढ़ी सँ पुरोहित गोपाल ६४-१

विढुआल सँ मōमō यटाधर ६५=३

जगति सँ मōमō होरिल ६७=५

नरउन सँ ज्योतिविर्वद रामनाथ ७०-४

पालीसँ मōमō परमगुरू वाचस्पति ७१-३

घुसौत सँ मōमō कृष्णानन्द जगतगुरू सदानन्द ७५=५

माण्डर सँ मō शिव सुत मōमō अनिरूद्ध ७८=१

वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ ७९-१

सोदरपुर सँ ढाका कवि महामहो गणपति ८१-४

सरिसब सँ सदुō होरील सुत पाँ भवदेव ८२-४

नरउन सँ मō हरि सुत अविलम्ब सरस्वती

पदांकित बटेश ए सुत मōमō सरस्वती राम ८३=३

सोदरपुर सँ मōमō रामेश्वर ८४=

नरउन सँ राय नाथू प्रचण्ड पाँथू सदु. गोपी ८६=४

वलियास सँ श्रोत्र पल्लव धीरू ८७-२

वलियास सँ पण्डित राज पदांकित राय रधुनन्दन सुतअभिनव राज
पण्डित मōमō शंकर ८७=

वलियास सँ चतुर्भज (मōमō) सुतो महो शुभंकर ८७=

करमहा सँ केशव सुत मōमōरामभद्र ९१=४

सकराढ़ी सँ रामशर्म्म सुत मōमō लान्हि ९४-५

भूतहरी सँ महत्तक आनन्द कर ९४

दिघोयसँ सन्धि बिग्रहिक शिवदत्त

भाण्डागारिक भवदत्त ९५-१

भवदत्त पौत्र मōमō भट्ट जीवे ए सुत पार्णा गारिक स्थितिदत्त
धर्माधिकरणिक जानुदत्त जानुदत्त सुत देवागारिक बटेश्वर ओइनि सँ
राज पण्डित कामेश्वर ९५=

पाली सँ परमगुरू मōमō वाचस्पति सुता महामहो
रधुनाथ मōमō नरहरि ९६=२

पबौली सँ धर्माधिकरणिक रूद सुत खांडेगोपाल ९६=

दोस्ती सँ शानकरणिक जीवेश्वर ९६

पालीसँ मōमō नरहरि सुता मōमō माधव मōमō

केशव मō नारायण मō विष्णु महो श्री राम ९६

अलय सँ महो लक्ष्मीधर सुतो मōमō हलधर ९७-३

महामहो रूद्रधर

पालीसँ मōमō केशव सुत मō मō अर्जुन ९७-६

खण्डबला सँ मō लक्ष्मण सदु. भरत ९९-५

बुधवाल सँ अग्निहोत्रिक म.म. रधुनाथ १००-५

ढ़रिया सँ नयनाथ १०२-२

खौआल सँ सविशेष भानुकर १०३-२

करमहा सँ धूर्तराज गोनू पौत्र कान्ह सुत भिखू १११=२

कुजौली सँ म.म. शुचिकर ११७-४

सरिसब सँ म.म. वामदेव १२१-५

खण्डबला सँ म.म. परशुराम १२१=३

माण्डर सँ म.म. महादेव म.म. रामचन्द्र १२२-४

कुजौली सँ महो कृष्ण दाशसुत कवि गंगादाश १२३-१

महोगोविन्ददाश महोहरिदाश मō रामदाशाः
करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रति देव १२४=३

खण्डबला सँ सन्यासी शुचिकर सुत\\][\

सन्यासी मनोरथ १२५-३
पालीसँ वैष्णव जगन्नाथ पल्लवकर ( मō भवनाथ ) १२२=१

सँ सदु. बुढ़व सुत महामहो गौरीपति १२६=४
सुरगन सँ धर्मधिकरणिक जगद्धर १२६=७
दिघोय सँ आवस्थिक राम १२८-१
सोदरपुर सँ म.म. परशुराम म. कृष्णानन्द १३१-५
दरिहरा सँ कविराज विसव १३१=३
माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर १३२=४
करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रतिदेव १३५=३
सकौना सँ राज पण्डित शशिधर १३६=५
सोदरपुर सँ म.म. बासुदेव म.म.देहरि म. अर्जून १३७-३
टकवाल सँ कविराज लक्ष्मीपाणि १३७=४
बहेराढ़ी सँ सुपकार होरेश्वर १३९-३
सम्भुआल सँ धर्माध्यक्षक सोम १४०-४
सोदरपुर सँ महामहो माधव १४१=३
वलहा सँ राजपण्डित शूलपाणि १४२=६
गार्ग गोत्रे निखूतिसँ महत्तक होराई १४३=१
पबौली सँ शान्ति बालक लखाई १४३=१
दहिभत सँ महामहो धर्माध्यक्षक भास्कर
ए सन्तति सदुपाध्याय विजवतिया केशव १४४-६
पाली सँ कविशेखर पदांकित यदुनाथ १४६-४
टकबाल सँ एकान्तरिक गोपाल १४६=३
नदाम सँ ग्रन्थकारक धनञ्जय १४५-४
भन्दवाल सँ सर्वज्ञान रातू सुत जोइस गोविन्द १४७=१
अलय सँ वेदज्ञ चिन्तामणि १४९=४
सोदरपुर सँ स्वयंपाकी यदुनाथ १५२-६
खौआल सँ राजवल्लभ कोने १५३-२
सँ धनश्याम सुत अपस्मारी नीलकंठ १५४=३
दिघोसँ गुणे सुता वनमान अधिकारी त्रिपुरारी
कार्य्यी मुरारी उपाध्याय दामोदर ओझा विद्याधर १५८=५
खण्डबाला सँ सन्यासी यशु १५९-७
सकराढ़ी सँ पञ्जी विधुमूलकारक सदु. रामधर १६०-६
तीसूरी सँ राजपण्डित लाखे १६१=१
विस्फी सँ कवि भूपति पदांकित सोमेश्वर १६१=५
बेलउँच सँ खञ्ज मुकुन्द १६२=१
सन्यासी शिरू १६२=६
अपस्मारी चतुर्भूज १६३=२
माण्डर सँ कविशेखर पदांकित महो यशोधर १६४=५
पनिō.खनतरि विठू भ्रातृ पनहरि गुदी १६५-६

करमहा सँ सन्योसी इबन प्रō रतिदत्त १६६=६
जालय सँ एकान्तरिक वीर १६७-७
सोदरपुर सँ माधव महामहो १६७=४
जगति सँ महामहोकवि रत्न पदां. होरे १७२-२
गंगोली सँ धर्माधिकरणिक जान्हव १७३=५
माण्डर सँ वेदज्ञ लक्ष्मीनाथ १७८=४
हरिअम सँ महामहो श्याम १८३-१
बुधवाल सँ खञ्जज वावू १८३=४
महाराज श्री राघव सिंह १८४=६
पाली सँ घौघे सुत कविराज कृष्णपति १८५-२
गंगोर सँ भगवतिया सुत सदु. राजू १८८=४
कलिगाम सँ चक्रेश्वर सुत सान्धि विग्रहिक मतीश्वर १९८-६
बेलउँच सँ सदु. मुकुन्द २००-१
पाली सँ ज्योō श्रीनाथ सुता ज्यो. उँमानाथ २०२-६
ज्यो. रूपनाथ ज्योō श्री कृष्ण ज्योō नील २०३-६
कंठ ज्योō भवेश २०४-१
बेलउँच सँ मुद्राहस्तक गुणीश्वर २०४=१
अलय सँ शान्तिकरणीक रूद २०४=५
गंगोली सँ सन्दगहि परमेश्वर २०५-
होइयार सँ शामन्त घाम २१२-३
सुइनिहार सँ ठ. सुन्दर २१४-३
ऐसानिय हाउँ २१५-३
मल्लिक माघव खान बनमाली २१६=४
ब्रह्मपुरा सँ गोष्ठार जागू २२०=३
तपनपुर पाली सँ सुण्डियावर राम २२१=५
अलइ सँ कार्य्यि आनन्द कर सुत पुष्पभट्ट रविकर २२४=१
दिघो सँ देवागारिक बाटे २२७=३
पुनन्दह सँ भानसी सुधाकर २३४-३
शोराढ़ सँ नायक प्राणधर २३४-५
गांगो बेहट सँ सान्दगहि साहेब २३४=
बसहा सँ राजपण्डित शूलपाणि २३४=
सिंहाश्रम सँ उत्तर वाहिनी गंगा २३६=१
गोवाठिनी सँ रातू २३९-१
पाली सँ महो लाखू सुत धर्माधिकरणिक महामहो नरहरि २३९=४
लहौला सँ देवदत्त २४४-३
पाली सँ उपेन्द्रा श्रम सन्यासी गौरीपति २४५-२
भरथूआ सँ गौरीश्वर सुत गंगेश्वर २४५=५

वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ २४६-२

अलय सँ महामहो रूद्रधर २४८=५

दिघो सँ पुरोहित मंगनी २५०=३

विस्फी सँ राजवल्लभ महादेव २५०=६

वलियास सँ कवि मणि पदांकित पशुपति २५१=१

दिघो सँ पुरोहित हिंगनी २५२-२

कन्होली घुसौत सँ याज्ञिक फूहन २५३=४

गंगोली सँ कविराज गयन २५३=६

होइयार सँ त्रिपाठी केशव सामन्त अर्जून २५४=३

सिंहाश्रम सँ महानिधि-दिशि जयपाल २५५-४

नरउन सँ सन्यासी दिनकर २५६=४

गंगोली सँ ललजोही गोपाल २५७=२

सुइरी सँ धर्माध्यक्षक देवे २६३=४

सँ धर्माधिकरणीक महामहो बावू २६५-४

ए सुतो महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर२६८-३

सरिसब सँ भट्टाचार्य महो वागीश्वर २७०-१

वेला सँ राज निकटवर्ती ज्ञानकर सुता माण्डव्य गोत्रे कठुण्डा सँ दिवाकर दौ २७६-१

सँ उन्मादी महो जगन्नाथ २७६-१

करमहा सँ पौराणिकमहो बहोरण २७६=३

सँ सिकदार भिखारी २८०=३

दिघो सँ सान्धिविग्रहिक रघुदत्त २८६=३

फनन्दह सँ सन्यासी श्रीपति २८७-२

खौआल सँ ब्रह्मचारी लक्ष्मन २९१-१

सोदरपुरसँ कविराज महो भानुदत्त २९१-५

पाली सँ महामहत्तक महो प्राणधर २९९=१

बनौर सँ हरिवंश ३०१=३

भरबला सँ इशर सरबय ३०३-५

सोदरपुर सँ कवि जयराम ३१५-१

लोरिकपुर सँ नारायण ३१५=१

कात्यायन गोत्रे जालय ३१५=४

बेलसाम बूधवाल सँ माधव सुत अध्यापक शिवाई ३१६-१

वत्स गोत्रे द्रोण वंश माण्डर सँ सान्हरि सँ सागर

सरिसबसँ नोनी सुतो ३१६=२

मधुकर बासुदेवो-मधुकर मृते श्री मती नाम्नी पत्नी द्वादशानान्तरं प्रतिगत: गृहे

*वहिष्कृतां तत: श्री मत्यां बासुदेवा सुतो जाता* बुधवाल सँ माधव पत्नी ए सुत अध्यापक शिवाई इतिप्राप्तं कुत्रापि माण्डर सँ महामहत्तक महार्णव ३१६=२

गंगोर सँ चन्द्रकर सुत सन्यासी विदू ३२३-२

सिन्दुरिया सँ चाको ३२५-३

सँ विश्वास धर्मकर प्रभृति पुरूषोत्तम ३२५=२

शाखायाँ

बाढ़अलय सँ धर्माधिकरणिक गदाधर ३२६-२

भूतहरी सँ सान्धि विग्रहिक महामहत्तक आनन्द कर सुत गणेश्वर ३२६-

परिसरासँ महामहत्तक महाई सुत पार्णागारिक विरेश्वर ३२६=१

फनन्दह सँ मōमō गोंदि सुत वामनेन्द्राश्रम सन्यासी रूचि गोपी ३२७

मराढ़ सँ भट्ट ग्रहेश्वर ३२८=४

बलहा सँ श्रीकर सुत हरिकर ३२५=१

गढ़ विस्फी सँ राजपण्डित भोगीश्वर ३३८-२

दिघो सँ भाण्डागारिक जयदत्त ३३८

दरिहरा सँ बधिर घनश्याम ३३८-४

भरथुआ सँ विभाकर ३३८=४

दरिहरा सँ गोशाँइ लखाई ३३८

जजिवाल सँ सन्दगहि भवेश्वर छादन सँ तत्त्व चिन्तामणि कारक गंगेश सुत सुपन दौ जल्लकी सँ सादा महिधर ३४१-

वत्स गोत्रे द्रोण सँ खञ्ज ओराज सुत समुद्रकर ३४३-२

गौतम गोत्रे पण्डुआ सँ जूड़ी पौत्र लाखू सुत हरिहर ३४३=४

विसौनी सकराढ़ी सँ खान केदार दिशि पशुपति ३४३=४

सुत नयपति प्रō मेधू केरवाल सँ शिवादित्य भरवला सँ रौतपरात विर सिंह खौ किरताई भानसी उदय ३४५-३

करमौली गंगोली सँ विश्वास कान्ह विश्वास धाम ३४५

लहौला सँ महेश्वर ३४५=३

दिघो सँ देवागारिक बटेश्वर ३४५=५

कपिलेश्वर (कुजौली) ३४५=६

तपोवन सँ कवि धनेश्वर ३४९-६

माण्डर सँ रूचिपति सुत दशावधान पदांकित नरपति ३५०=३

गढ़ माण्डर सँ कविराज शुभंकर ३५१-५

विसौनी सकराढ़ी सँ सन्धि विग्रहिक विभाकर ३५२-२

धनौज सँ शान्तिकरणिक विशो ३५२-६

परड़ी सँ आदित्य ३५४-१

अलय सँ वेदज्ञ चिन्तामणि ३५८-४

भन्दवाल सँ सर्वज्ञान रातू ३५८=४

भदुआल दरिहरा सँ लैगमिक भानु ३६१-५
सरिसब सँ विराई सुत सन्यासी पाँखू ३६२=४
सँ मल्लिक सूज प्रतिहस्तक प्रज्ञाकर ३६२
सुरगन सँ धर्माधिकरणिक भास्कर ३६४-३
गौतम गोत्रे गंगोली ३६४
माड़रि बलियास सँ श्रोत्र पल्लव पदांकित धीरू ३६५-६
जजिवाल सँ आवस्थिक वीर ३६८-४
लखनौर सकराढ़ी सँ सन्यासी सुरसर ३६८=५
नरवाल सँ शान्तिकरणीक मधुकर ३७५=४
सोदरपुर सँ मōमō पक्षधर ३७६-४
सकराढ़ी सँ पुरूषोत्तम शाखा पञ्जी उल्लेखनीय ३७९-५
सकरहोन सँ धर्माध्यक्षक नरसिंह ३७९
सविशेष सुज ३७९=१
कन्धई सँ सविशेष त्रिपाठी जीवेश्वर ३७९=२
पुरूषोत्तम शाखा पञ्जी ३७९=३
दानाधिकारी मोदी हल्लेश्वर ३७९=६
श्री कृष्ण शाखायाँ विपरीत पुरूषोत्तम शाखायाँ ३७९=
तद भिन्न लेखक पितृवरनां पुस्तकैर ३८०-
पुरूषोत्तम शाखा एवं लेखक पितामह रधुदेव शाखा तल्लनपुर सँ खञ्ज गोनू ३८१-५
वलियास सँ आवस्थिक मधुकर ३८१=१
तेलिगामा सँ नारायण ३८१=३
सोदरपुर सँ कन्या माधव ३८४=२
फनन्दह सँ त्रिदण्डी सन्यासीकारक मōमō रतीश ३८४
कौशिक गोत्रे पण्डोली ३८५=६
एकहरा सँ आगमाचार्यक महो मुकुन्द ३९३-४
सकराढी सँ पञ्जी पँचनान्द सदुपा० कुलपति ३९६-५
कुरिसमा सकराढ़ी सँ मोकदक रातू ३९८
सनहा वासी श्यामजान दिशि भास्कर ४०१=१
करउना सँ लाखे ४०१=३
पीलखी सँ जान ४०१=
लम्वीदाढ़ी मित्रकर ४०५-३
देयाम सँ वैयाकरण मधुकर ४०८=२
अलटौरा सँ धीर सुत माने ४०९=५
यवनीया राता ४१०-४
दौनी सँ राम ४१२=४
कोदरिया सँ इश्वर मुरारि ४१३-२
कोथूआ सँ कार्य्यि गयन ४१३
नरवाल सँ कार्य्यि थामू ४१४-६
माण्डर सँ चक्रेश्वर सुत अग्निहोत्रिक शिवपाणि ४१९-२
हरिअम सँ कार्य्यि नरसिंह ४१९
चन्दौत पाली सँ मधुर कवि पंदाकितमाधव ४२४=२
वशिष्ठ गोत्रे पण्डोली सँ महेश्वर ४२८=५
त्रिपुरौली नरउन सँ सरस्वती लक्षमन सुत महो दण्डी कृष्णदाश ४२९-४
उल्लूदिग्वर्ति परण्डा सँ नरसिंह ४२९
बेहट करमहा सँ ज्यो. नीलकंठ सुत ज्यो. रूचिपति ४३०-
कुसुमाकरस्य दत्तकः पुत्रः सुर्यकरः मधुकरस्योरस पुत्र ४३१
टकबाल सँ खञ्ज भवदेव ४३१=५
खौआल सँ वेद गर्भ नोने ४३८=४
चन्दौत पाली सँ शिवादित्य सुत कवि पुरादित्य ४४२=४
हरिअम सँ गौग रघुपति ४४६-४
पाली सँ रधुनाथ सुत जगन्नाथ उपहत ४४७-१
गाउल करमहा सँ सविशेष माधव ४४७
घुसौत सँ भवाई सुतमनिसार कर्त्ता महो गोपीनाथ ४४८=६
घुसौत सँ मōमō विश्वम्भर सुत खञ्जहाड़ी ४४९-३
सकौना सँ राज पण्डित शशिधर ४४९
बलियास सँ परमानन्द सुत कवि भूषण ४५०-२
सुरगन सँ लस्कर गोढ़ाई ४५३-४
होइयार सँ इश्वर भानु ४५६-५
पिपरौन सँ हरिकर ४६१-४
पतओना खौआल सँ मांगु कुष्ठ रोगातुर जाता ४६५-१
बगड़ा सँ चाण ४६७=२
विजनपुर दरिहरा सँ कवि भूपति ४६७=४
खोपा सँ कार्य्यि गुणाई ४६८-४
दिघौ सँ पाण्डे पाँखू ४७०-५
बड़कौर सँ देवपति ४७२-३
कलिगाम सँ शान्तिकरणीक भोगीश्वर ४७२=४
कुई सँ चन्द्रकर ४७३=१
हरिअम सँ सुकवि गोपीनाथ ४८१-३
वलियास सँ गोदाह बासुदेव ४८३
अलय सँ निवोष्ण महो श्रीराम ४८४-३
जालय सँ सममदार रातू ४८६-५
बेला सँ पाण्डे लोचन ४८६

खनुग्राम सँ प्राणधर ४८६
खण्डबला सँ सोम याज्ञिक महो दशरथ ४८६=४
भनवाल सँ जोइस रातू ५००=१
नरउन सँ फलाहारी रधुनाथ ४८८=३
करमहा सँ भाषा कवि भवेश ४९४=
सोदरपुर सँ विद्यानन्द सुत महो लक्ष्मीनाथ ५०२-३
सोदरपुर सँ विष्णुपति सुत महो भोरानाथ ५०२-५
माण्डर सँ महो रविनाथ सुत महो रूचि ५०२=१
गढ़ माण्डर सँ दशावधान नरपति ५०२=३
सकराढ़ी सँ पाँ गोनू ५०३-४
गढ़ बेलउँच सँ मुद्राहस्तक गुणीश्वर ५०३-५
सँ महोमिश्र रतिधर सुत महोगणपति ५०४-२
ततैल पण्डुआ सँ सदुō छीतू सुत पाँ हरिकेश ५०४=१
हरिअम सँ पशुपति सुत महो भवानी नाथ ५०४=५
सँ संगीतीवीर ५१४=६
मातृ सपिण्डा

माण्डर सँ महो जनार्दन ५१७=३
सँ मōमō वसन्त सुत योगी ५१९-३
सँ मōमō माधव ५२२-३
पाली सँ राजमतीश्वर सुत कुमर रतन सिंह सुत
कुमर उदय ५२२-४
अनलपुर करमहा सँ महो रमानन्द सुत सर्वज्ञान
बालकृष्ण ५४०=३
सर्वज्ञ सरस्वती पदांकित रूचिपति पण्डितराज
पदां रतियति महामहोपाध्याय:
सुरगन सँ महाराजाधिराज रामचन्द्र नारायण ५४७-
पबौली सँ सर्वज्ञान गरीब ५५८-४
पनिचोभ सँ कविशेखर पदां. शतञ्जीव ५६०=५
बरहैता वाठी गौतम गोत्रे खण्डबला ५६४=३
पण्डुआ सँ देवानदस्य ककरौड़ ग्रामे लिखिता
१६४४ शाके ५६९-३
कविन्द्र पदांकित रधुनाथ गड़ूरध्वज गोपीनाथ ५७५=४

**(महाभारत षष्ठ खण्ड )**

**४४ म अध्यायक अठारहम शलोक**

असपिण्डाच या मातुरस गोत्रा च या पितु:॥

इत्येता मनु गच्छेत  तं धर्मम् मनुरब्रवीत्॥
वध्वा वरस्य वा तात: कुटस्थाद  यदि सप्तमः।
पंचमी चेत्तयोर्माता तत् सापिण्डयं निवर्तते॥

अर्थात वर ओ कन्याक पिता बीजी पुरूष सँ *सातम पुस्त मे* उत्पन्न भेल हो ओ माता पाँचम पुरूष मे हो तँ एहि मे कन्या-वरक हेतु सापिण्ड्य निवृति भए जाय। पिताक पक्ष मे सात पुस्त तक मानल गेल । सात पुस्त मे एक पिण्ड देनिहार ३ पिण्ड भागी, तीन लेप भागी होइत छैक। महाभारत षष्ठ खण्ड अ. १०४ श्लोक-१३०
वर्जयेद व्यक्तिनीँ नारीं तथा कन्या नरोत्तम
सभार्यां व्यक्तितां चैव मातु: सुकुलजां तथा

काष्ठ मातुल निर्णय:
सर्वा: पितृ पत्न्यौ मातर भ्रातरौ मातुलस्त दुहितरौ भगिन्यः तद्पत्यानि भागिने यानि। ताः परिणीताभ शंकर कारिन्यो भवन्ति

वैयाकरण मन मोहनस्य उक्ति
गौतम: असमानप्रवरैर्विवाह उर्ध्वं सप्रभात्

पितृ बन्धुभ्यो विजीनश्च मातृबन्धुभ्य : पंचमात्
पितृ बान्धवा : पितामह सुसु: पुत्रा पितु: मार्तु: शुशु:
सुता । पितु मातुल पुत्राश्च विज्ञेया मातृ बान्धवा:

मातृ बान्धवा:
मातुर्मातु: सुर्सुपुत्रा: मातु: पितु सुसु: सुता:।।
मातुर्मातुल पुत्राश्च विज्ञेया मातृ बान्धवा:।।

काष्ठ मातुल:
सर्वा: पितृ पत्न्यो मातरस्तुभ्रातरौ मातुल स्तद्वहितरौ

भगिनस्तद पत्यानि भागि नेयो निता: परिणीता:
शंकरात्मे धर्म्म कारित्यो भवन्ति।। तथाध्याय दितुरेत देव उत्कंच मत्स्ये सुक्ते समान प्रवरारापि शिष्य संतति रेवा
ब्रहमदातुर्गुरोश्चैव संतति: प्रति सिद्दयते ।।
मनु शातातपो

असपिण्डाच यामातु, रस पिण्डाच या पितु:
सा प्रशस्ता द्विजातीना दार कर्मणि मैथुने

स्मृति शारादौ
पंचमात् सप्रभात् उर्ध्वं मातृत: पितृतस्तथा
सपिण्डता निवर्तनं सर्ववर्ते क्षयं विधि:

पञ्जीकार रघुदेवाकृत

ब्राह्मणानां समुत्पर्ति सदबीजी कथनमतथा।
करोमि रघुदेवाख्य: पाण्डु : पञ्जी विनिश्चयम् ।।
घुसौतौ गंगोली हरिअम्ब खौआलौ दरिहरा

तिसौंतौ वै पाली सरिसब सिंहासौ करमहा
बभनियाम शर्म्मा द्विजवर पटुर्म्माण्डर पुरे
बलेवाड़ौ नूनं कुलपति मते विजी पुरूषा
बभन्यामं बिना केचित् संकराढ़ी पुरै सह:
त्रयोदशे तैविख्याता पञ्जयां वै विजी पुरूषा
सिंहाश्रमं विना केचित् कुजौली सहितं पुरा
त्रयोदशै ते विख्याता विश्वचक्रे व्यवस्थिता
जजिवालस्टँकबाल पनिचोभ श्चविलोंचक:
पाण्डुर: सुरगनश्चैव सतलखा ग्राम एव च

बलियासौ विसपी चैव जलैवारस्तथैव च

माण्डरश्च तथा विश्वचक्रे वै बीजी पुरूषा

खड़ौरश्च खौवालश्च बुधवालस्तथैवच

माण्डरादरिहरश्चैव सोदरादिपुर पुरः स्तथा
अयन्ता श्रोत्रि संयुक्ता ब्राह्मणा वेद पारगा:
त्रयोदशैते विख्याता वारान्तश्चापि कथ्यऽते
गंगोली च कुजौली च पबौली त्रलयी तथा

बहेराढ़ी संकराढ़ी पाली प्रज्यान्त श्रोत्रिया

दीर्ध घोषो बेलउँच: पनिचोभे  एकहरौ तथा
वलियासौ जजिवालश्च टंकबालश्च पांण्डवा:
अष्टावैते समाख्याता मघ्यमा पञ्जीकोद्भवा
एतेषां वंश वीजी वै पञ्ज्यां सर्वे निवेशिता

**तथाचोक्तं मंगलधर पञ्ज्यां**

अयन्तास्त्रयोदश: श्रेष्ठा वारान्ता सप्त तत्रत:
दीर्घधोघोडदय: श्चाष्टो मघ्यमा षरिकिर्तिताः
सकुना सुरगनश्च सतलखा ग्राम एवच
उचति विसफी चैव जल्लकी चैव मध्यम:
क्षुद्रश्चाल्लारिकौ कोन वुसवन श्चाय कथ्यते
भ्रष्टा: लदभदा श्चान्य भ्रष्टातिभ्रष्ट मैथिलाः
(लगुरदह – दहिभत)

रधुदेव कृत

| अयन्त | वारान्त | मध्यमा |
|---|---|---|
| खड़ौरय | गंगोलिवार | दिधवय |
| खौवालय | पवौलिवार | बेलउँचय |
| बुधवालय | कुजौलीवार | एकहरय |
| मड़रय | अलयीवार | पनिचोभ |
| दरिहरय | बहेड़वार | वलियासय |
| धुसौतय | सकड़िवार | जजिवालय |
| तिसँउँतय | पलिवाड़ | टंकवालय |
| नरउनय | - | पण्डुअय |
| करम्महय | सकुनय | |

बभनियामय
हरिअम्बइ
सरिसवेई
सोदरपुरये

अधमा
अलरिये

कोदरिये

कोथुये

महुए

वुसवनय

अधमाऽधमा
नगुड़दय
दहिभतवार
फन्दहवार

दसौतिवार

सुरगनय
सतलखय
उचितवार
विसैवार

जलयवार

**शास्त्र कथने कारणमाह**

गंगौरौ नयनाथकरय दुहिता तस्यास्तु तारापते।।
श्चोद्वाहो महिहानी संज्ञक द्विजस्तकन्यका वैपुन:।।
गंगोरो हरिनाथकस्य गृहिणी कन्या तु सा पंचमी ।।
विदुतो गउना वसाउ स्वजना सम्बध चाण्डलिनी।।
रघुदेव कृत
वरवा पुरवा तौ द्वौ गिद्धौर गढ़ रक्षकौ
बस्बा सन्तति स्तिनु पूरथू जय सिंहक:
१. कायस्थ कुल सम्भूतो मनसी शीत संज्ञक:
निधू दिवाकरश्चैव मानि छौन हरिश्च वै

कुलनौ झुलन श्चैव तौ द्वौ
२. मेरू मद्धू मथनो तौ द्वौ कलन्दर कुलद् भवो
मौनी शंकर दाशश्च गंगादाशस्तथैव च

३. सोदरः स्वर्णकारश्च सुन्दर स्तत्र कथ्यते
तपोबनेउ तापसी वने गोविन्द कन्तजा
रेकौर कुग्राम वासी येतेऽपि मद्यपाजना
वाटू कार्टिर्य धनौजिके च त्रिपुरौ गोविन्दकस्ताञ्जती
लाङ्गुलोपिच वीरावश्च तपसी चण्डाले चन्द्रस्तथा
सन्यासी गिरी चेतनश्च वगड़ा कारूस्तथा केउँटी
राउदश्च विलोक्य वर्ण विविधान पञ्जी प्रबन्धकृत:
इति पञ्जी शास्त्र कथने कारण मुक्तम

रघुदेवाकृत

**अथ सदबीजी कथनम्**

गंगोलीर्द्विज वीर कोऽपि त्वलयी गंगाधरः पण्डित:
शाँई खण्डबला तिसउँत नगरे विश्वम्भरो अभूत पूरा
खौवालोपि प्रजापति करम्महा शास्त्रज्ञ वंशीधरो
दान्ती सिद्धिजन कुजौली नगरे बाभन्ति शर्म्मा शिव:
नरसिंह माण्डरो महा महोस्त्र शास्त्र सँ विदो
घोसोत बासुदेवकौ महि धरौ नरउन के
हरिअम्ब झाँउँ दिक्षीतो महामहो विशारद:
सिंहाश्रमो हलायुधो महामहो त्रयोदश:

दौहराछौ तदनुच भण्डुरा पाठकौ वै गोविन्द:
श्री पल्ली ----- दये प्रविदित हरि कपिलानन्दयोगीचवै
टंकग्राम हरिवर विदित हरिपाणिस्तथान्ते
विशु पंचकरा समो सुविदित येषानु धरनीधर:
सतलखा चक्रपाणिश्च दण्ड पाणिर्ज्जजीपुरे
कमलपाणि दरिहरा पनिचोभश्च महेश्वर:
ग्रामाद् ग्रामान्तरं वक्ष्ये गोत्राद गोत्रान्तरं तथा
विप्रादं विप्रान्तरंचापि पञ्ज्यां वंश प्रवर्द्धनम
सप्तः गोत्राश्च उस्त्रिशत ब्राह्मणा पिञ्जकोद्भवाः
तेषां सम्बन्धत: सर्वे वर्णाश्चवानु वर्त्तते
गंगोली तौ विकश्चापि पबौली क्र्ततेऽधुना
घुसौतौ बुधवालाख्या विभाकर प्रभाकरौ
विशुपंच कलस्तेकहरा देवे तथा मवे
भण्डारि समत: पश्चा स्लेखाई फनन्दह पुरे
तथैव चौरती ग्राम सँ बीजी पुरूषोत्तम:
श्री पल्ली कपिलानन्दो संकराढ़ी पुरेपिच
जल्लकी भन्दवालश्च माधव: कथ्यते पुरा
जयशर्म्म हरिशर्म्माणो करमहा वंशधरस्तथा
कुमारी मातुलं तानौ वत्सवाल नरउनके
करमहा वंश तश्चापि महिधरः
करमहा बनुभालश्च तस्य पुत्रो मनोधर:
केशव सुत: सुर्यस्तस्य पुत्रो महिधर:
रतिधर महिधरौ पञ्ज्यां मुरारेर्दौ कथं भवेत्
श्रीधरस्तत्र वंश वृद्धि: प्रयोजनम
पुत्रो कुमारिका यत्र नरउनश्च दृश्यते
श्री करश्च तथा पञ्ज्यां करमहा हपुरे तथा
गौरीश्वरो शक्तिपुरे निवासी नरउन केतस्य सुतो मुरारी:
अभूत पुरे गाउल करमहाख्यो बीजी मुरारीश्च नरउन कोपि
हल्लेश्वरश्चापि सुरेश्वरश्च जीवेश्वर तत्र त्रयोपि सोदरा:
सिंहाश्रमात् सोदर ग्राम वासिना महामहो तत्र त्रयोपि संतिति

हरिम्वतौँ हरि हरो वासी वै सकुना पुरे
श्री पल्ली तौ मुरारी वै बहेराढ़ी पुरे तथा
तिसौंता तिसुरी वासी तथा लक्ष्मीपतिश्च वै
श्री पल्ली तश्चादि देवे मौचनाख्य पुरे तथा

## कुश्चिद् विशेष

।। साम्य गोत्रे सम्बन्ध :।।
सरिसव सँ करूणाकरस्य विवाहस्तयाच कन्यायाम्
खण्डबलासँ ठ. विश्वेश्वरस्य सुत: साम्भ गोत्रेपि
सरिसब सँ रलाकरस्य विवाह स्तथा च कन्यायाम्
बाढ़ पबौली संज्ञक हरदत्तश्चापि साम्ये पि
वाचस्पति र्विवाहो बाढ़ पवौली द्विजस्य साम्येपि
प्राणस्य वै सुतायां सोदरपुर द्विजस्य साम्य गोत्रे
दरिहरा द्विज कृष्ण पतेश्च परशुराम द्विजकस्य खौआल
कन्यका सुनधिकार विवाहो विश्वचक्र लिखने समगोत्रापि
गीरू शीरू सन्यासी गीरपूरखूतस्य वै पुत्र। काशीकस्य विवाहः
करमहा संज्ञक कन्यायाम्।। काशीकस्य सुतायां करमहा संज्ञकस्य स्तथा मुकुन्दस्य विशुपंचक विप्रस्तस्य विवाहो लिपि
॥पञ्जीकाम् ॥

पाँ रघुदेव

## अथ समीचीनसप्त गोत्रे कथ्यन्ते।।

॥गंगोलीच पवौलीच खण्डबलास्तथैवच ।।
॥सोदरो जजिवालश्च दिर्घोषो सरिसवस्तथा।।
शाण्डिल्य गोत्रस्य सम्भूताब्राह्मणास्ते व्यवस्थिता॥

गोत्र: पराशरश्चापि नरउन सुरगनश्चवै॥
घुसौतश्च तिसउँतश्च टंकवाल स्तथैव च

करमहा बुधवालश्च फनन्दहश्चैवती च वै
बहैराढ़ी अलैवारौ पलिवारश्च जल्लकी
वाभन्यश्च हरिअम्वच वत्स गोत्रे व्यवस्थिता

दरिहरा माण्डरश्चैव पाण्डुर: सतलखाचवै
संकुराढ़ी च वल्यास्तै विशेवार श्च तत्रवै
खौवालौ चोयनी चैव काश्यपं सकलं जगत्

गोत्रे कात्यायनश्चैव कुजौली मेव सँ मही
भारद्वाजस्थितौ गोत्रे बेलउँचैक हरौच वै

सावर्णागोत्र: पनिचोभश्चान्ये गौत्रान् निश्चिता

शाण्डिल्य काश्यपश्चैव भारद्वाजस्तथैवच
वत्स कात्यायनोताँम पराशर मुनिस्तथा
सावर्णश्च मुनि पञ्ज्यां सप्तेवैते व्यवस्थिता:
अन्येन्ये नव गोत्राणि शाखायोते प्रकिर्तिताः
इतिसप्त गोत्रे व्यवस्थित पञ्जी

महाराज हरिसिंह देव जीक सभामे उपस्थित
सभ्य लोकनि द्वारा सदुपाध्याय गुणाकर झाकें मैथिल
पञ्जीक भार देल गेलन्हि:-
नन्देन्दु शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९) तच्छ्रावणस्य धवले। मुनि तिथ्यधस्तात। स्वाती शनैश्चर दिने सुपुजित लग्ने श्री नान्यदेव नृपति: र्व्यधीत वास्तं।।१।। शास्तानान्य पतिर्व्वभूव नृपति: श्री गंगदेवो नृपस्तत् सूनू नरसिंह देव विजयी श्री शक्ति सिंह सुत: तत् सुनू खलू राम सिंह विजयी भूपालवन्त सुतो जात: श्री हरिसिंह देव नृपति: कार्णाट चूड़ामणि।।२।। श्रीमन्तं गुणवन्त मुत्तम कुलस्नाया विशुद्धाशयं सञ्जातानु गवेषनोत्सुक तयात्  सर्वानुव्यक्तिक्षमं। चातुर्यश्च चतुरानन: प्रतिनिधिं कृत्वा च्चतुर्द्धामिमां पंचादित्य कुलान्विता विवजया दित्यै ददौ पञ्जिकाम ।।३।।
भूपाला वनि मौलि रत्न मुकुटोलंकार हिरांकुर।

ज्योत्सोज्वाल यटाल भाल शशिभिः लीलञ्च चंचल मुख: शोभाभाजि गुणाकरे गुणवतां मानन्द कन्दोदरे दृष्टात्मा हरिसिंह देवनृपति: पाणोददौ पञ्जिकाम् ।।४।।
॥अपिच।।

दृष्ट्वा सभांश्री हरिसिंह देव विचार्यचित्ते गुणिणी सहिष्णो गुणाकरे मैथिलवंशजाते पञ्जी ददो धर्म्म विवेचणार्थम ।।५।।
वालाद्धि युग्म शशि सम्मित शाकवर्षे पौषष्यशुक्ल नवमी रवि सुनूवारे त्यक्त्वा सुपट्टन पुरी हरिसिंह देवो दुर्द्देर्व देव सित पथोऽय गिरी विवेश:।।

## श्रोत्रिय लोकनिक गोत्र, मूल ओ मूल ग्रामक निर्णय :-

| गोत्र | | मूल | मूलग्राम | |
|---|---|---|---|---|
| शाण्डिल्य | (i) | सरिसब | खांगुड़, सकुरी, जोंकी | |
| | (ii) | पर्वपल्ली | वढ़ियाम (पवौली) | |
| | (iii) | खण्डबला | भौर | |
| | (iv) | सोदरपुर | सरिसव, मानी, दिगउन्ध, तेतरिहार, | कन्होली कटका, हाटी, |
| वत्स | (i) | पाली | महिषी | |
| | (ii) | हरिअम्ब | बलिराजपुर | |
| | (iii) | घुसौत | नगवाड़ | |
| | (iv) | करमहा | रूचौलि, नरूआड़, बेहट, तरौनी, | झंझारपुर, अनलपुर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | (v) | बुधवाल | गंगोरा, डुमरा, परियाम्ब |
| कश्यप | (i) | खौआल | सिम्वरवाड़, मुराजपुर, महुआ |
| | (ii) | सकराढ़ी | परहट, लोहना |
| | (iii) | दरिहरा | रतौली |
| | (iv) | माण्डर | सिहौलि रजौरा, कनसम, पतनुका |
| | (v) | वलियास | माड़रि |
| पराशर | (i) | नरउन | सुल्हनी, पुड़े, त्रिपुरौली |
| | (ii) | सुरगन | लोआम |
| भारद्वाज | (i) | एकहरा | रूचौलि, कन्हौली |
| कात्यायन | (i) | कुजौली | भखरौली |

सरिसब- खांगुड़, सकुरी, जोंकी

पवौली- वढ़ियाम

खण्डवला- भौर

सोदरपुर- सरिसब, दिगउन्ध, कन्हौली, मानी, हाटी, तेतरीहार, कटका

हरिअम्ब- बलिराजपुर

घुसौत- नगवाड़

करमहा- रुचौली, नरुआड़, बेहट, तरौनी, झंझारपुर, अनाथपुर

वुधवाल- परियाम, गंगोरा, डुमरा

पाली- महिषी, मंगरौनी, जमदौली

खौआल- महुआ, मुराजपुर, सिमरवाड़

सकराढ़ी- परहट, लोहना

दरिहरा- रतौली

माण्डर- रजौरा, सिहौली, पतनुका, कनसम

वलियास- माड़रि

नरउन- त्रिपुरौली, सुल्हनी, पुड़े

सुरगन- लोआम

कुजौली- भखरौली

एकहरा- कन्हौली, रुचौली

(प्राचीन पञ्जी) लौकित) श्रोत्रिय लोकनिक
चौगोला श्रेणी युक्त

| प्रथम | द्वितीय | तृतीय | चतुर्थ | पंचम |
|---|---|---|---|---|
| भरथीया | भदाईझा | बाभनझा | पीताम्बरझा | दशरथमिश्र |
| रघुनीझा | नारायणझा | देवाईझा | गंगाधरझा | रूद्रपतिझा |
| वाबूमिश्र | बलभद्रठाकुर | तिसउँत | रामदेवमिश्र | शंकरराय |
| गोढ़ाईझा | विश्वेश्वरमिश्र | जटेशझा | दामूझा | शिवमिश्र |

| षष्ठम | सप्तम | अष्टम |
|---|---|---|
| वीरठाकुर | मोतीझा | रोहाड़माधवमिश्र |
| सदाईमिश्र | भोलनझा | नरपति झा |
| भीखारीझा | माधवझा | हेमाङ्गद राय |
| सुरगन | रघुनन्दन पाठक | |

१६०० शाके मे श्रोत्रिय लोकनिजे पौजि सँ सम्बन्धित भेलाह।

| मूल ग्राम | नाम | लौकित |
|---|---|---|
| सरिसब खांगुड़ | बवूनी झा | गंगाधर झा |
| सरिसब खांगुड़ | धीरनाथझा | गंगाधर झा |
| सरिसब खांगुड़ | जीवनाथझा | दशरथ मिश्र |
| सरिसब खांगुड़ | गणेश झा | जगदीश मिश्र |
| सरिसव जोंकी | शंकर मिश्र | शिव मिश्र |
| सरिसव सकुरी | देवीदत्तझा | सुबन्धुझा |
| पवौली वढ़ियाम | मनसुख झा | हेमाङ्गदराय |
| पवौली वढ़ियाम | रूद्रदत्तझा | गोढ़ाईझा |
| पवौली वढ़ियाम | सदानन्दझा | पीताम्बरझा |
| खण्डबला भौर | श्यामनाथ ठाकुर | तिसउँत |
| | एकनाथ ठाकुर | भरथीझा |
| | महाराजा प्रताप सिंह | तिसउँत |
| | महाराजा माधव सिंह | तिसउँत |
| | | लौकित |

| मूल | मूलग्राम | नाम | लोकित | |
|---|---|---|---|---|
| खण्डबला भौर | | | गणेश ठाकुर | तिसउँत |
| ,, | ‘’ | | दुर्गादत्तठाकुर | तिसउँत |
| ,, | ,, | | रूचिपति ठाकुर | बलभद्रठाकुर |
| ,, | ,, | | गोपालठाकुर | पीताम्बरझा |
| ,, | ,, | | सोन ठाकुर | भदाईझा |
| ,, | ,, | | प्रान्नाथ ठाकुर | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, | ,, | | मणिनाथ ठाकुर | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, | ,, | | रतिधर ठाकुर | भरथीझा |
| ,, | ,, | | सोनी ठाकुर | भरथीझा |
| ,, | ,, | | गौरीनाथ ठाकुर | गोढ़ाई झा |
| ,, | ,, | | उग्रसिहं ठाकुर | तिसउँत |
| ,, | ,, | | जगत सिहं ठाकुर | लक्षू पाठक |
| ,, | ,, | | कमल सिहं ठाकुर | अमौन |
| ,, | ,, | | इशान्नाथ ठाकुर | रघुनीझा |
| सोदरपुर सरिसउ | | | ह्रदयनाथ मिश्र | भदाईझा |
| ,, | ,, | | जानकीनाथ मिश्र | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, | ,, | | शिवानन्द मिश्र | भरथीझा |
| ,, | ,, | | छबनू मिश्र | भरथीझा |
| ,, | ,, | | चित्रधर मिश्र | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, | ,, | | आँखी मिश्र | तिसउँत |
| ,, | ,, | | पखिया मिश्र | गोढाईझा |
| ,, | दिगउन्ध | | भवनाथ मिश्र | भदाईझा |
| | “ | | रमाकान्त मिश्र | रघुनीझा |
| | “ | | भवानीदत्त मिश्र | रघुनीझा |
| ,, | ,, | | बछरू मिश्र | रघुनीझा |
| ,, | ,, | | ह्रदयनाथ मिश्र | बाभन झा |
| ,, | | | मधुपति मिश्र | रघुनीझा |
| “ | | | घनानन्द मिश्र | भरथीझा |
| ,, | ,, | | चिन्तामणि मिश्र | रामदेव मिश्र |
| ,, | ,, | | यारी मिश्र | तिसउँत |
| ,, | ,, | | शिवानन्द मिश्र | तिसउँत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ’’ | कन्हौली | लक्ष्मीदत्तझा | माधवमिश्र |
| ’’ | ’’ | रामभद्र झा | गंगाधर झा |
| ’’ | ’’ | विष्णुदत्तझा | शंकरराय |
| ’’ | मानी | मंचितमिश्र | रघुनीझा |
| ’’ | ’’ | रघुनाथ मिश्र | दशरथ मिश्र |
| ’’ | ’’ | रूचिपति मिश्र | भदाई झा |
| ’’ | ’’ | घनानन्द मिश्र | दामूझा |
| ’’ | हारी | सोनी मिश्र | विश्वेश्वर मिश्र |
| ’’ | तेतरिहार | सदानन्दझा | तिसउँत |
| ’’ | ’’ | महेशझा | रामदेवमिश्र |
| ’’ | कटका | कुलपतिमिश्र | बाभनझा |
| ’’ | ’’ | कृष्णपति मिश्र | रामदेवमिश्र |
| पाली | महिषी | रामझा | भानू मिश्र |
| ’’ | ’’ | छोटकनि झा | रामदेव मिश्र |
| ’’ | ’’ | रतिदेवझा | पीताम्बर झा |
| ’’ | ’’ | लक्ष्मीदत्त झा | वीर ठाकुर |
| ’’ | ’’ | लक्ष्मीकांत झा | रघुनीझा |
| ’’ | ’’ | गोकुलनाथ झा | ’’ |
| ’’ | ’’ | वंशीधर झा | भदाई झा |
| ’’ | ’’ | विश्वेश्वर झा | शंकरराय |
| ’’ | ’’ | दुल्लह झा | ’’ |
| ’’ | ’’ | अमृतनाथ झा | भदाई झा |
| ’’ | ’’ | मतिनाथ झा | बाभन झा |
| ’’ | ’’ | धरानाथ झा | रामदेव मिश्र |
| ’’ | ’’ | मनभरन झा | तिसउँत |
| ’’ | मंगरौनी | रामकृष्णझा | पाणिझा |
| ’’ | ’’ | धनेश झा | तिसउँत |
| ’’ | जमदौली | परशमणिझा | गोनू मिश्र |
| घोसोत | नगवाड़ | कलानाथ ठाकुर | भानू मिश्र |
| ’’ | ’’ | नमू ठाकुर | भिखारी झा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| हरिअम्ब | वलिराजपुर | म.म.सचल मिश्र | भदाई झा |
| ,, | ,, | मानीक मिश्र | रघुनी झा |
| ,, | ,, | मेघनाथ मिश्र | गोढ़ाई झा |
| ,, | ,, | दुल्लह मिश्र | तिसउँत |
| ,, | ,, | प्रभूनाथ मिश्र | जटेश झा |
| करमहा रूचौलि | नरोत्तमझा | दामू झा | |
| ,, | ,, | रामेश्वर झा | दशरथ मिश्र |
| ,, | नडुआर | दुखभंजनझा | पाणिझा |
| ,, | ,, | मुरलीधरझा | वीर ठाकुर |
| ,, | ,, | साहेबझा | दशरथ मिश्र |
| ,, | बेहट | जगन्नाथ झा | तिसउँत |
| | ,, | नारायणदत्तझाप्रभृति | ,, |
| करमहा तरौनी | वेणीझा | वीरठाकुर | |
| ,, | | महिधर झा | शिव मिश्र |
| | पद्मापति झा | मोती झा | |
| | झंझारपुर | योगानन्द झा | शंकरएण |
| करमहा अनलपुर | टेकनाथझा | भदाई झा | |
| | | जाल्पादत्त झा | दशरथ मिश्र |
| | | राधानाथ झा | रूद्रपतिझा |
| बुधवालवरियाम | दुल्लीझा | विश्वेश्वर मिश्र | |
| | | परशमणि झा | वीर ठाकुर |
| बुधवाल | गंगौरा | परशमणि झा | देवाई झा |
| ,, | ,, | भोरानाथ झा | भानु मिश्र |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ,, | ,, | रघुनाथ झा | तिसउँत |
| खौआलमहुआ | देवकृष्णझा | शंकरराय | |
| ,, | मुराजपुर | रत्नपाणि झा | सुरगन बड़का |
| ,, | सिमरवाड़ | हेमनाथ झा | रोहाड़ |
| ,, | ,, | पीताम्बर झा | रघुनी झा |
| ,, | ,, | गोकुल झा | रामदेव मिश्र |
| ,, | ,, | बालहझा | तिसउँत |
| ,, | ,, | रमापति झा | विश्वेश्वर मिश्र |
| , | ,, | जानकी नाथ झा | ,, |
| ,, | ,, | बनी झा | ,, |
| सकराढ़ी | परहट | रंगनाथ झा | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, | ,, | विष्णुदत्त झा | दशरथ मिश्र |
| ,, | ,, | चन्द्रदत्त झा | शंकर राय |
| ,, | ,, | वासुदेवझा | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, | ,, | गरीब झा | गंगाधर झा |
| ,, | ,, | दुल्लह झा | रघुनी झा |
| ” | लोहना | कृष्णदाश झा | हाड़ी झा |
| दरिहरा रतौली | भवनाथ झा | गोदाई झा | |
| ,, | ,, | भूपनारायण झा | तिसउँत |
| ,, | ,, | विद्यानाथ झा | तिसउँत |
| | | देवनारायण झा | दशरथ मिश्र |
| ,, | ,, | भगीरथआनन्दझा | तिसउँत |
| ,, | ,, | केशव झा | यटेश झा |
| ,, | ,, | कन्हाई झा | ,, |
| ,, | ,, | खगनाथ झा | ,, |
| “ | | रैया झा | भदाई झा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ,, | ,, | किर्तिनाथ झा | भदाई झा |
| माण्डर रजौरा | धनानन्द झा | पीताम्बर झा | |
| ,, | सिहौलि | खगपति झा | शंकर राय |
| ,, | ,, | वाचा झा | भोलन झा |
| ,, | ,, | हेमकरझा | दामू झा |
| ,, | ,, | विष्णुपति झा | तिसउँत |
| ,, | ,, | बेचन झा | रामदेव मिश्र |
| ,, | ,, | धीरनाथसिहं झा | सुरगन बड़का |
| ,, | ,, | कुमर सिंह झा | भंजन झा |
| ,, | ,, | गनी झा | तिसउँत |
| ,, | ,, | मेधापति झा | रघुनी |
| ,, | पतनुका | खुशिहाल झा | पीताम्बर झा |
| ,, | कनसम | दुर्गानाथ झा | शिव मिश्र |
| वलियास | माड़रि | इन्द्रपतिझा | रूद्रपतिझा |
| | | मणि झा | ,, |
| नरउन पुड़े | भवेश झा | भरथी झा | |
| ,, | ,, | छत्रपति झा | गोढ़ाई झा |
| ,, | ,, | कलानाथ झा | ,, |
| ,, | ,, | दामोदर झा | भानु मिश्र |
| ,, | ,, | विश्वेश्वर झा | रघुनी झा |
| ,, | ,, | गंगादत्त झा | ,, |
| | “ | हरदत्त झा | माधव मिश्र |
| ,, | ,, | मेघनाथ झा | दामू झा |
| नरउन त्रिपुरौली | गुणानन्द सरस्वती | ,, | |
| ,, | सुल्हनी | तीर्थदन्तझा | भरथी झा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ,, | लक्ष्मीदत्त झा | तिसउँत |
| | ,, | काशीनाथ झा | शंकर राय |
| | ,, | जहलीझा कुलपतिझा | रघुनी झा |
| | ,, | दुखिया झा | विश्वेश्वर |
| नरउन सुल्हनी | गोविन्द झा | जीवनाथ झा | |
| नरउन सुल्हनी | लक्ष्मी नाथ झा | भदाई झा | |
| ,, | ,, | दयानाथ झा | ,, |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| सुरगन लोआम | उत्तिमनारायण राय | सुरगन बड़का | | |
| ,, | | ,, म. नर नारायण राय | ,, | " |
| चन्द्रनारायण राय | सुरगन छोटका | | | |
| | | " | रामनारायण राय सुरगन छोटका | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| कुजौलीभखंरौली | मेधाकर झा | भरथी झा | |
| ,, | ,, | शोभाकर झा | रघुनी झा |
| ,, | ,, | धूर्छीझा | बाभन झा |
| ,, | ,, | गोशाँईझा | दामू झा |
| ,, | ,, | वूचा झा | ,, |
| ,, ,, | | धरानाथ झा | रामदेवमिश्र |
| ,, ,, | | हेमकर झा | देवाई झा |
| एकहरा | कन्होली | वाचा झा | विश्वेश्वर मिश्र |
| ,, ,, | | भवदत्त झा | यटेश झा |
| एकहरा | रूचौलि | नन्दन मिश्र | नरपतिझा |

***प्राचीन पाँजि*** **मोदानन्द झा शाखापञ्जी**

| मो. न. शाखा | **प्रथम चौगोला** | वि. न. शा. |
|---|---|---|
| पत्रांक | | |
| ५२//०२ | वढ़ियाम पबौलीसॅ रामदेव सुत भरथी झा | |
| ६१//०७ | रतौली दरिहरासँ रामनाथ सुत रघुनी झा | |

| | |
|---|---|
| १९०//०५ | शि. हरि बसुदेव सुत बाबू मिश्र |
| ११३//०१ | अनल कर. कृष्णदेव सुतगोदाई झा |

**द्वितीय चौगोला**

| | |
|---|---|
| ११०//०५ | रजौरा माण्डरसँ महादेव सुत भदाई झा |
| १४६//०२ | डूमरा बूधवालसँ सदानन्द सुतनारायण झा |
| २१८//०१ | भौर खण्डबला सँ रघुरामसुत बलभद्र ठाकुर |
| १२१//०६ | मंगरौना हरि. चिकू सुत विश्वेवर मिश्र |

**तृतीय चौगोला**

| | |
|---|---|
| ११२//०४ | महिषी पालीसँ बाटू सुत बाभन झा |
| | सँ सुत देवाई झा |
| | कुआ तिसउँतसँ चिन्तामणि सुत श्रीकान्त झा |
| | मलि. नरउनसँ भवेश सुत यटेश झा |

**चतुर्थ चौगोला**

| | |
|---|---|
| ७०//०६ | कटैया माण्डर सँ पीताम्बर सुत दामू झा |
| १२८/०४ | बिठौली वलि. सँ भमरू सुत गंगाधर झा |
| ९१//०३ | रैयाम सोदरपुरसँ हरखू सुत रामदेव मिश्र |
| १११//०४ | महिषी पालीसँ शिवसुत रामू झा |

**पंचम चौगोला**

| | |
|---|---|
| ५७/०२ | रूचौलि एकहरा सँ श्रीपतिसुत दशरथ मिश्र |
| १५९/०२ | माड़रि बलियाससँ हरपतिसुत रूद्रपतिझा |
| १६४//०४ | ‘‘ ‘‘ रघुनन्दन सुत शंकर राय |
| ८२//०५ | जोंकी सरिसबसँ पद्मनाभ सुत शिव मिश्र |

**षष्ठम**

| | |
|---|---|
| ४१६/०४ | भौर खण्डबला सँ लक्ष्मीकांत सुतवीर ठाकुर |
| | सँ सुत सदाई मिश्र |
| २१९/०६ | महिषी पालीसँ लक्ष्मीनारायण सुत भिखारी झा |
| १०१//०५ | लोआम सुरगन सँ प्राणपति सुत समर सिहं |
| | ‘‘ ‘‘ उत्तिम नारायण राय छोटका सुरगन |

| | |
|---|---|
| | **सप्तम** |
| १५७/०६ | मंगरौनी पालीसँ पाँ धर्माङ्गद सुत मोतीझा |
| १४३//०६ | वहि. पबौली सँ चाण सुत कवि भोलन झा |
| २४१ क //०२ ” | गिरधर सुत माधव झा |
| १४५//०३ | बलियास सं छीतू सुत रघुनन्दन पाठक |
| | **अष्टक** |
| १३५//०५ | रोहाड़ सोदरपुर सँ जानू सुत माधव मिश्र |
| १६६/०४ | हरड़ी सकराढ़ी सँ पाँ रामभद्र सुत पाँ नरपति झा |
| २३९/०१ | माड़रि वलियास सँ नयन सुत हेमाङ्गदराय |

महाराजाधिराज ५ मान् मिथिलेशक आज्ञानुसार पछबारिपारक लौकिक आ श्रेणिक व्यवस्था पञ्जीकार लोकनि जे स्थिर कएलन्हि से प्रकाशित भेल छल आ ईहो प्रार्थना छल जे ताहि मध्य जनिका किछु वक्तव्य होइन्ह से प्रार्थना पत्र द्वारा श्री ५ मान् मध्य निवेदन करथि, ततः निदान विशिष्ट सभा मध्य एकर परामर्श कए पुनः प्रकाशित कएल जायत।एतएसँ १ सँ १५ धरि श्रेणी बना देल गेल। ढेर विवाद उठल जे पाइ लए कतैक तथाकथित निम्नकुलमे पाँजिक मान्यता देल गेल।

पछबारिपारक लौकित नाममे कतहु लौकित व्यक्तिक नामपर आ कतैक ठाम गामक नामपर लौकितक निर्धारण भेल।

किछु उदाहरण अछि-

१. सिंहवाड़-मथुरेश ठाकुर
२. मनियारी- मधुपति मिश्र
३. अमौन-बालकराम पाठक
४. भराम- छीतरी
५. बसन्तपुर- माधव मिश्र
६. कोकडीही- रामेश्वर मिश्र
७. नित्यानन्द चौधरी- पिण्डारुछ
८. एहु- भैय्यो मिश्र
९. खुटौनियाँ- भवानीदत्त झा
१०. लक्ष्मीपति मिश्र- धगजरी
११. कन्त झा- चानपुरा
१२. टङ्कवाल महिधर झा-पेकपाड़
१३. विष्णुदत्तपुरचिकनौट (मुजफ्फरपुर)
१४. चान पाठक- गजहरा
१५. लालठाकुर- धमदाहा

१६. ज्ञानी ध्यानी- रंगपुरा(पूर्णियाँ)

महाराजाधिराज श्री (५) मान मिथिलेश रमेश्वर सिंहक आज्ञानुसार पछवारिपारक पाँजिक श्रेणी न्यूनाधिक स्थिर भेल। श्री मोदानन्द शाखा एवं नगराम पञ्जीसँ सम्बन्धित पत्रांक देल अछि। राज प्रेस दड़िभंगा-१९२९

**प्रथम श्रेणी**

| | |
|---|---|
| सकराढ़ी हरड़ी सँ पाँ रामभद्र सुत पाँ नरपति झा | १६६-४ |
| रोहाड़ सोदरपुरसँ जानू सुत माधव मिश्र | १३५=५ |
| कटका सोदरपुरसँ मनहर सुत गोनू मिश्र | ९५=४ |
| डूमरा बूधवालसँ शतन्जीव सुत भैयन झा | २६२=६ |
| बधवास सरिसब सँ धरनीधरसुत भंजन झा | १३१=१ |
| नरसाम वलियाससँ घनश्याम सुत नीलाम्बर मिश्र | ३०३=९ |
| खांगुड सरिसबसँ लक्षमन सुत नन्दन झा | १९८=३ |
| नगराम साखा खांगुड़ सरिसबसँ विश्राम सुत करिये झा | २१=७ |
| सन्दहपूर दिघोसँ भैरव दत्त सुत मथुरेश ठाकुर (सिंहवाड़) | २७०=७ |
| कटमा बभनियामसँ सथाउन सुत कन्त झा | २३८=५ |

## द्वितीय श्रेणी

| | |
|---|---|
| सतौली सतलखासँ हरिसुत पदूम झा | १७१=५ |
| भखरौली सकराढ़ी सँ गादू सुत श्री कान्त झा | १६८=४ |
| गौर सोदरपुरसँ बछाई सुत मधुपति मिश्र (मनियारी) | ३१०=१ |
| कटका सोदरपुरसँ सँ महिनाथ सुत बन्धु मिश्र | १७५=६ |
| महिषी बूधवालसँ परशुराम सुत बालकराम पाठक (अमौन) | २३८-१ |
| नरसाम बलियास सँ धराधर सुत वैया. खुशिहाल मिश्र | १८४-३ |
| सिहौली माण्डरसँ पुरन्दर सुत वैदिक गोनू झा | १९९-२ |
| बैगनी अलयसँ देवनानन्द सुत परमानन्द चौधरी | २२४-२ |
| महिषी बूधवालसँ बाउन सुत कमलनयन पाठक | ३०१=२ |
| बिठौली वलियाससँ अनन्त सुत महादेव झा | १७९-४ |

**तृतीय श्रेणी**

| | |
|---|---|
| डूमरा बूधवालसँ ब्रह्हमपति सुत घनानन्द झा | ३०१=५ |
| नर वलि. सँ घनश्याम सुत वैदिक गणपति मिश्र | २०२=८ |
| समौली पालीसँ भवेश सुतजीव कर्ण मिश्र | ३३४=४ |
| हरड़ी सकराढ़ी सँ पाँ गोपाल सुत पाँ धारे झा | ४०३-०१ |

| | |
|---|---|
| जमुनी जजिवालसँ शिवनी सुत मुरारि मिश्र | ३०१-६ |
| बलहा बलियाससँ गोविन्द सुत देवानन्द झा | २३३=१ |
| रूचौली एकहरासँ बल्ली सुत पनाई मिश्र | २३३-३ |

**चतुर्थ श्रेणी**

| | |
|---|---|
| ततैल सकराढ़ीसँ कृष्णाराम सुत छीतरीझा (भराम) | २९७=३ |
| हरिपुर पालीसँ रामकृष्ण सुत शूलपाणि झा | ३५०=७ |
| कटउना माण्डर सँ रामकृष्ण सुत माधव मिश्र (वसन्तपुर) | १९४-२ |
| जमदौली पालीसँ हरिहर सुत जयकृष्ण | |
| ज्यो. खड़गपाणिझा – सखुआ | २९०-४ |
| (इतिद्विधा–जयकृष्ण सन्तति द्वितीय खड़गपाणि सन्तति प्रथम) | |

| | |
|---|---|
| काको बेलउँच सँ खगेश सुत प्रभाकर चौधरी नगराम | ४९७-२ |
| महिन्द्रपुर पण्डुआसँ पाँ आनन्द सुत पाँ प्र. छोटी झा प्र देवानन्द झा | २९७=२ |
| दिगौन्ध सौदरपुरसँ हरिजीव सुत रामेश्वर मिश्र कोकडीह | ३०२-५ |
| पचही जजिवालसँ हरदत्त सुत पीताम्बर झा (पकड़ी) | १४६=५ |
| नाहस खौआलसँ बासुदेव सुत मधुसूदन (प्रतिहस्त) | ३२०=१ |
| सतौलि सतलखासँ मनहर सुत प्रान्नाथ झा (नरहा) | ३४२=५ |
| कड़राइनि बभनियामसँ धनपति सुत पाठक महथू | ३४८-३ |
| गौतम गौत्र बूधैरासँ रामदेव सुत हरिकेश (पूजारी शिलानाथ) | ३२२-२ |

**पंचम श्रेणी**

| | |
|---|---|
| बेहट खण्डबलासँ मणिकृष्ण सुत हरिनारायण ठाकुर | १८६=५ |
| बढियाम पबौलिसँ टेङरि सुत सुखाई झा | ३०१=२ |
| विस्फी तत्रैवसँ दिनमनि सुत तुला ठाकुर | ३३९-७ |
| परमगढ़ अलयसँ नरोत्तम सुते नित्यानन्द चौधरी (पिण्डारूछ) | ३३८=४ |
| सकुरी माण्डरसँ जगदीश सुत बटाउँ मिश्र | ४०४=२ |
| परहट बहेराढ़ी सँ रघुनाथ सुत महेरभान ठाकुर | ४१३=२ |
| यमुनी जजिबालसँ हरिहर सुत भैयो मिश्र (ऐहु) | १७-६ |
| संग्राम एकहरासँ भमरसुत खगेश झा | २४-२ |
| सकुरी सरिसवसँ शूलपाणिसुतभवानी दत्तझा (खूटौनियाँ) | ६२// |

**षष्ठ श्रैणी**

| | |
|---|---|
| हड़री सकराढ़ीसँ पाँ योगी सुत पाँ तारापति झा | ब.३२-७ |
| सुखैत सोदरपुरसँ श्री कृष्ण सुत गोइ मिश्र | ४०३=७ |
| वत्सवाल नरउनसँ अनन्तसुत वल्ली चौधरी | २१३=१ |

| | |
|---|---|
| मलंगिया कुजौली सँ सदानन्द सुत मुरली झा | ४३७-६ |
| रखवारी हरिअम्ब सँ नयन सुत मदन मिश्र | २३२=४ |
| कोदरियासँ परमानन्द सुत नवलक्षाधिपति लक्ष्मीपति मिश्र (धगजरी) | ४०१// |
| संग्राम एकहरासँ खगेश सुत विश्वनाथ झा | व..५०/७ |
| धनौजी गंगोलीसँ विश्वम्भर सुत नीलमिश्र | व.५९=७ |

**सप्तम श्रेणी**

| | |
|---|---|
| तरौनी करमहासँ घनश्याम सुत वदनी झा | व.७१-४ |
| हारी पालीसँ गोनू सुत हिरदी झा | व.५०=४ |
| परमगढ़ अलयसँ बाबू प्र. सदानन्द सुत विश्वेश्वर चौधरी | ३१९=२ |
| परमगढ़ अलयसँ बाबू प्र सदानन्द सुत वंशी चौधरी | ४२१-६ |
| सकुरी माण्डरसँ जगदीश सुत हरिनन्दन मिश्र (बरौनी) | २९६-४ |
| रखवारी हरिअमसँ आनन्दी सुत छावनि मिश्र जड़सैनि | ४२३-६ |
| ततैलसकराढ़ीसँ कमलापतिसुत सुधाकर झा | ४२२-८ |
| खांगुड़ सरिसब सँ परानसुत यदुनीझा | ३५७=२ |
| लोहनासकराढ़ीसँ कृष्णसुत मटरू झा | २०८=७ |

**अष्टम श्रेणी**

| | |
|---|---|
| अकुसी टंकवाल सँ गंगाधर सुत बोधकृष्ण झा | ३८८-६ |
| नगराम ततैल सकराढ़ी सँ हरिकेश सुत वीर झा | ३७६=१ |
| डीह दरिहरासँ मित्रकर सुत मोदी मिश्र (मालापूर) उ.प्र. २०५=७ | |
| हरिपुर पालीसँ भिखि सुत नरेश झा | व.३५-८ |
| कनसम माण्डर सँ नेनू सुत कन्त झा | व.४३=५ |
| रोहाड़ सोदरपुरसँ सँ जयि सुत पति मिश्र | ३२९=८ |
| उड़ा एकहरासँ दशरथ सुत छोटकू झा (भोगलाहा) | ४१४=६ |
| कनसम माण्डरसँ मोहनसुत गतिराम झा व. | ५६-६ |
| जगतपुर ओइनि सँ राजा राम चन्द्रसुत राजा प्रताप नारायण राय झा व. | १३=५ |

**नवम श्रेणी**

| | |
|---|---|
| रजौरा माण्डरसँ गिरीश सुत रतिकर झा | ९-०४=०१ |
| छामूसकराढ़ी सँ बन्धु सुत वेदी झा (झंझारपुर) | व-७२-७ |
| परहर सकराढ़ी सँ भोरा सुत जयकृष्णझा (खडगपुर) | व-४६-६ |
| काको बेलउँचसँ कालासुत कौस्कीस्त झा | व-७९-२ |
| अंकुसी टंकबाल सँ जयकृष्ण सुत महिधर झा | व-६०=३ |
| भखरौली सकराढ़ीसँ महिपाणि सुत गुणी झा | व-८१-४ |
| रतिपाड़ बेलउँच सँ केशव सुत मांगु झा (महेशपुर) | ३३१=५ |
| सतलखा बेलउँचसँ हरिशंकरसुत पुरूषोत्तम झा (हालो) | |
| सुत महिधर झा | ४१९= |
| काको वेलउँच सँ पुरूषोत्तम सुत नारो झा | ९-४१-६ |
| हरिपुर पालीसँ सुखड़ि सुत बेचू झा | ९-६६-३ |

**दशम श्रेणी**

| | |
|---|---|
| छामू सकराढ़ीसँ नित्यानन्द सुत दामोदर झा (कन्हौली) | २५८=१ |
| शक्तिरायपुर नरउनसँ भैरवदत्तसुत मचली मिश्र (रहिका) | ४२८=६ |
| नगराम जगति पबौली सँ बलदेव सुत मातू झारविष्णुदत्तपुर | ५१=६ |
| सँ सुत धराधर चौधरी | |
| जमुनी जजिवालसँ हिरासुत चीरा मिश्र-नगराम | ७६=६ |
| जगतपुर उइनिसँ किर्ति नारायण सुत रूद्रनारायणा | १६२=८ |
| सकुरीपालीसँ भवानन्द सुत प्रद्यूम्न झा (मड़गाम-पाली) | ९-०७-०३ |
| सकुरीपालीसँ भवानन्द सुत भूवन झा | व.३६=१ |
| कुजौलीसँ नित्यानन्द झा | |
| आहिलखौआल सँ दयाराम सुत कौस्कीदत्त गोढम (नेपाल) नगराम | ३२४-४ |
| सुत चक्रपाणि चौधरी | |
| आहिल खौआलसँ मोहनसुत महादेव झा (कथित विन्धी) नेपाल | व.२९-३ |

**एकादश: श्रेणी**

| | |
|---|---|
| नगरामजगतपुर उइनिसँ ऐ निपाल नारायण सुत रशीक नारायण | ३१३=२ |
| वारी माण्डर सँ रामेश्वर सुत भूषण झा | ४४२-१० |
| ओझोलि नरउनसँ ह्रदयराम सुत मणिझा (सागरपुर) | ४३१=५ |
| सरावय सकराढ़ी सँ वैद्यनाथ सुत चाण पाठक व. | ८५=८ |
| बहेड़ा बेलउँच सँ देवीदाश सुत विरसिंह राय बहेड़ी | ६१-५ |
| ओड़ा एकहरा सँ कामदेव सुत पुरन्दर झा खजूरी | ३०५-४ |
| सकुरी वलिया सँ नरपति सुत गोविन्द झा खजूरी तरौनी | ४१४=५ |
| पुरोही पालीसँ लक्ष्मीनाथ सुत गतिराम झा हरिनगर | ४१७=८ |
| घोरी खण्डबलासँ महिनाथ सुत लाल ठाकुर धमदाहा | |
| वसुवाड़ी वलियाससँ सुतअन्दी मिश्र | |
| सारा मोहनपुर सुत गुणानन्द झा | व-१०५ |
| मलिछाम वहेराढ़ी सँ यवदू सुत चोटाई ठाकुर-भच्छी | व.७=०५ |
| छामू सकराढ़ीसँ दामोदर सुत जगन्नाथ झा मोहना | ३७८-४ |
| मुराजपुर खौआलसँ सुन्दर सुज्यो. भूवन झा मुंगारी | व-३६-७ |
| नरसाम वलियास सँ बाला सुत कल्याण मिश्र सप्ता | ४१७=२ |
| खडकाएकहरासँ घनश्यामसुत गोकुल नाथ झा बेला | ३०७=४ |

**द्वादश: श्रेणी**

| | |
|---|---|
| अलय अलयसँ कमल सुत नकट झा | ४२४-६ |
| सॅ सुत यशी भूवनझा | |
| रखवारी हरिअमसँ भगीरथ सुत निधि मिश्र | ३९९=६ |
| सुत हरदत्त ठाकुर | |
| ज. म. पालीसँ ज्यो. विष्णुपति सुत ज्यो. लाल बिहारी झा | व.३९-७ |
| रोहाड़ सोदरपुरसँ लालासुत भैयाराम चौधरी भवानीपुर | ४०८=३ |

गौर सोदरपुरसँ सागरसुत पशुपति मिश्र कछुवा ३२४-७
गंगोली जालयसँ घमंडी सुत नेहाल चौधरी सुत उँमाई मिश्र (दशरथ) ३५४-७
अलय-२ सँ रतिपति सुत आभीझा दामोदरपुर व.८६-५
मलंगिया कटाई सँ प्रद्यूम्न सुत कमलापति झा फेंटकटाई व.०६-०६
कन्हौली बेलउँच सँ सागर सुत अरिविन्द झा व-१०४=३
उचतिसँ सुत प्रभुनाथ झा व-४१-२
नगराम काको बेलउँचसँ अन्ही सुत गोशाँइ प्रितम ४९३-२
धरौरा वलियाससँ वेणी पति सुत मदन सिंह
लदौरक वलियास व-६२-३

**त्रयोदश: श्रेणी**

ओझोलि नरउनसँ भवेश सुत घनश्याम झा
पण्डोलीक नरउन व.४९-६
सुत रंकझा
कोलहट्टा पाली गौर सोदरपुरसँ धानासुतडीहा मिश्र जाँता व-६७-७
नागदह
मन्नूराम झा
सवास कुसमालसँ सुत रघुपति झा मउआहा नेपाल
काको बेलउँच सँ अन्दी सुत धाना गरबन ४९९=
पालीसँ सुत रमानाथ

**चतुर्दश श्रेणी**

कुसमाल सँ सुत घासीराम चौधरी
फनन्दहसँ वदन सुत अन्दीझा व.१२=२
समौली पालीसँ बवनू देवान नगराम १७८-६
सनहा, धारू ठाकुर
रखवारी हरिअम्वसँ अपूछ सुत कृष्णदत्त मिश्र ४०-८
जनाढ़
ज्ञानी-ध्यानी

पति ठाकुर

पंचदश श्रेणी १५
नगर दिघो सँ मणि सुत चतुर ठाकुर करमौली ३१०=८

वलियाससँ सुत नीलाम्बर
नीलाम्बर चौधरी
कारू ठाकुर, सबौर, हरदत्तझा
लौकिक संख्या-१५३

**श्रेणी-१५**

**उपस्थित पन्जीकारक हस्ताक्षर**

| | |
|---|---|
| श्री विश्वनाथ प्र. नीरसू झा पञ्जीकार- | सौराठ |
| श्री गोपीनाथ प्र. सूचाई झा- | यमसम |
| श्री गंगाधर ठाकुर- | ककरौड़ |
| श्री लूटन झा- | सौराठ |
| श्री विष्णुदत्त मिश्र- | सौराठ |
| श्री वेदानन्द मिश्र रानीटोल- | रानी टोल |
| श्री उँमापति झा- | ककरौड़ |
| श्री लक्ष्मीदत्त मिश्र- | सौराठ |
| श्री कुमर झा- | सौराठ |
| श्री चिरञ्जीव झा- | मंगरौनी |
| श्री रघुनन्दन झा- | ककरौड़ |
| श्री बबुए मिश्र | क्वेलख |
| श्री लक्ष्मीकांत मिश्र | क्वेलख |
| श्री शिवानन्द झा | ककरौड़ |

राज झा प्रेस दरभंगा – १९२९

गोत्र प्रवर युक्त मैथिल

शाण्डिल्य-शाण्डिल्यासित देवालस्रय:३

वत्स-और्व्वच्यवन भार्गवजामदग्न्यआप्लवाना:५

सावर्ण-५ -

काश्यप-काश्या वत्सारनैकध्रुवा-३

पराशर-शक्ति वशिष्ठ पराशरा-३

कात्यायन-कात्यायन विष्णु आङ्गिरस-३

भारद्वाज-भारद्वाजाआङ्गिरस वार्हस्यत्या-३

गौतम-वशिष्ठाङ्गिरो वार्हस्पत्या-३

कौशिक-कौशिकात्रि जमदग्निय:-३

गार्ग-गार्ग घृत कौशिक माण्डव्यार्थव वैशम्पायना-५

कृष्णात्रय-कृष्णामया प्लवान सारस्वता-३

विष्णुवृद्धि-विष्णुवृद्धि कौर पुञ्ध्व त्रिसदस्या-३

वशिष्ठ-वशिष्ठात्रि सांकृत्य-३

कौण्डिल्य-आस्तिक कौशिक कौण्डिल्या-३

जातुकर्ण-जातुकर्ण आङ्गिरस भारद्वाजा-३

मौद्गल्य-मोदगलाङ्गिरस वार्हस्पत्या-३

अनाम्मकाक्ष- -

**परसातण्डी-**

‘‘तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख
प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध”।।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीय: कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगद्गुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ.।। पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म.म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी
गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

**स्वाजन्यक्षत पाणि विड़न वसार्द्देवा पराधब्विना**

हाक.ष्ट हरिनाथकेन गृहिणीत्यक्त्वा विशुद्धाऽपिच
दृष्टवा दूव मनराएव मिथिला भूदेव वंशावली

व्याख्या पल्लव कोमलेन विद्धत तत् भञ्जिकां पञ्जिकां।।
शाके श्री हरिसिंह देव नृपति भूपार्क तुल्येजनि
तस्माद्दन्त मितेव्दिके द्विजगने पञ्जी प्रबन्ध कृत:
तस्मात द्वैरिज वंश कलिंग सद्विश्व चक्रं पुरा
तद् विप्राय समर्पितं सुकृतिनं शान्ताय सर्वार्थिवो।।

**षरयंत्री विद्वानक नामावली गुरू शिष्यक क्रमानुसार**

१. महामहोपाध्याय गोढि शर्म्मा
२. महामहोपाध्याय माधव शर्म्मा
३. महामहोपाध्याय अड़िया माधव शर्म्मा
४. महामहोपाध्याय शंकर शर्म्मा
५. महामहोपाध्याय यज्ञपति शर्म्मा
६. महामहोपाध्याय परशुराम शर्म्मा
७. महामहोपाध्याय वामदेव शर्म्मा
८. महामहोपाध्याय पीताम्बर शर्म्मा विद्यानिधि
९. महामहोपाध्याय गोखूलनाथ शर्म्मा फनन्दह

१०. महामहोपाध्याय जगन्नाथ शर्म्मा फनन्दह
११. महामहोपाध्याय वंशधर शर्म्मा राजनपुरा दरिहरा
१२. महामहोपाध्याय रघुनाथ शर्म्मा फनन्दह विनिर्जित कर्ण
१३. महोपाध्याय दत्त प्र. विष्णुदत्त शर्मा परमानन्द पुरी

**।।वशैटी (अररिया) मन्दिरक शिलालेख।। (महारानी-इन्द्रवती-सुरगन लोआम-राजवंशक महारानी)**

वंशे सभा समाने सुरगन विदिते भूसुरास्या वतीर्णो
राजा भूत कृष्ण देवो नृपति समर सिंहा मिधिस्यात्मजात:
यस्मिन राज्याभिषेकं फलयितु मिवतद् भक्ति तुष्टो महेश:
कैलासाद् भूगतोद्याव्यधिन सतितरां बैद्यनाथेन नाम्ना: ।।१।।

तस्य तनुज: सुकृति नृपवरो विश्वनाथ राजोभूत
विरनारायण राजास्तस्या व्याशी स्वेतस्तस्य
नरनारायण राजो नरपति कुल मौलि भूषणभुम्युन्नः
अर्थिन कल्पद्रूम इव सुरगन वंशा वतंसोत्सभूत ।।२।।

तस्यापि वैरि कुलसूदन रामचन्द्र नारायणो नरपतिस्तनयो वभूव
संमोदिता दश दिशो निज किर्तिचन्द्र ज्योत्समेहाभिरर्दि निवह सुखितश्चयेन ।।३।।

यद्वान वारि परिवर्द्धित वारि राशि सक्रान्त किर्तिविमलेन्दु मरिचिकाभि:
प्रोद्योतिता दशदिश: सतनुज इन्द्रनारायनोस्य कुलभूषण राज राज: ।।४।।

तेन् च सत्कुलोजाता तनया मनबोध शर्म्मण: कृतिन:
परिणीता बहुयत्नेन स्त्रिलोचन नाद्रि पुत्रीव ।।५।।

यस्या प्रताप तरना वूदितेऽपि चित्ते
चिन्तारविन्द वनमालभते विकासम्
सौहृद्य हृद्य मकरन्द च योदयेन
तत्रैव यद्गुण गणा मधुपन्ति तोषाद् ।।६।।

यज्ञेर्देव गनो द्विजाति निरह: सस्तापनत्यादवे:
द्वर्नि: पूर्ण मनोरथोऽर्क पटन सन्नतिभि: सज्जना: ।।७।।

गर्ज्जद वैरि मदान्ध वारण चय शतञ्च प्रता पाङ्कुरो
र्व्वास्याः सर्व्वजामे कृता गुणचये यश्यास्चभूमितने ।।८।।

श्री श्री इन्दुमति सती मतिमती देवी महाराज्ञिका
जाता मैथिल माण्डराऽविधकुला म्मोधौसरौजानया:
दाने कल्प लता मध: कृतवती श्री विष्णु सेवापरा
पातिव्रत्य परायणाच सततं गंगेवसम्पाविनी ।।९।।

शाकाद्वेनवचन्द्र शैल धरनी सेलक्षिते फाल्गुने
मासि श्रेष्ठ तरे सिता हनि सिते पक्षे द्वितीयायां तिथौ
भूदेवेर्वर वैदिके र्म्मठनपं निर्माथ सच्चिन्तिभि:
स्त्रात्रे सेन्हुमती श्वरस्य विधिना प्राणप्रतिष्ठा व्यधात् ॥१०॥

सोदरपुर सम्भव राजानु कम्पालपजिविनी कृतिन:
श्री शुभनाथस्य कृतिर्म्मोदं विज्ञेक्षं सन्तन्ताम ।।११।।

## बीजी पुरुष (विभिन्न मूलक)

| | |
|---|---|
| गंगौलीसँ वीजी गंगाधर | ०१/०३ |
| खण्डबला ग्रामोपार्जक साँई प्र. संकर्षण | ०१/०४ |
| एकमा वलियास वीजी धरणीधर | ०१//०२ |
| वरुआल मराढ़सँ वीजी दिवाकर | ०१//०४ |
| मंगरौनी माण्डरसँ वीजी त्रिनयनभट्ट | ०१//०७ |
| वाढ़ अलयसँ वीजी पंडित गंगाधर | ०२/०७ |
| मताओन दरिहरा सँ वीजी श्रीकर | ०२//०१ |
| सोनकरिआम करमहासँ वीजी वंशधर | ०२//०५ |
| पताउना खुआलसँ वीजी प्रजापति | ०२//०९ |
| महथौर अलयसँ वीजी वादन | ०३/०७ |
| शक्तिपालपुर नरउनसँ वीजी मनोधर | ०३/०८ |
| करुआरि सकराढ़ीसँ वीजी हरदत्त | ०३/०९ |
| सरिसवसँ वीजी रत्नपाणि | ०३//०३ |
| टकवालसँ वीजी हरिपाणि | ०३//०७ |
| अथ डोभेकरणीग्रामाय कामदेव बीजी (एकहरा वेलउँच) | ०४/०३ |
| विल्वपंचक (वेलउँच वीजी) राम | ०४/०४ |
| तेरहोत सकराढ़ीसँ वीजी गंगादित्य | ०४/०८ |
| कुजौलीसँ वीजी दान्तिय | ०४//०१ |
| रेकोरा सकराढ़ीसँ वीजी कपिलानन्द | ०४//०७ |
| पालीसँ वीजी कपिलदेव | ०४//०९ |
| अवहिवा मण्डारमसँ वीजी कुसुमादित्य | ०५/०८ |
| कुसुमादित्य सुत गंगाधर फनन्दहवासी | ०५//०१ |
| सुपरानी गंगोली वीजी म.म.सुपट | ०५//०७ |
| उचति भण्डारिसम सँ वीजी महिपाणि | ०६/०१ |
| वभनियाम सँ वीजी हरिशर्म्म | ०६/०४ |
| मेहवाल सँ वीजी माधव | ०६/०७ |
| गढ़ विस्फीसँ वीजी विष्णुशर्म्मा | ०६//०२ |
| पवौलीसँ वीजी वाचस्पति | ०७/०२ |
| जलक्योपट्टराज वासर वीजी दामोदर (जालय) | ०७/०४ |
| मन्दवाल वीजी माधव | ०७/०४ |
| गढ़निखूतिसँ वीजी त्रिपाठीरूद्र | ०७/०८ |
| तल्हनपुरसँ वीजी विष्णुशर्म्मा | ०७/०८ |
| राढ यमुगाम सँ वीजी श्रीकर | ०७//०३ |
| दरिहरा सँ वीजी कमलपाणि | ०७/०४ |
| गंगोर सँ वीजी शाश्वत | ०७//०६ |
| नरउनसँ वीजी महिधर | ०७//०९ |
| जजिवालसँ वीजी पण्डपाणि | ०८/०२ |
| मेरन्दी सँ वीजी जनार्दन | ०८/०५ |
| तिसउँत सँ वीजी विश्वम्भर | ०८/०९ |
| करहिया पनिचोभ सँ वीजी चण्डेश्वर | ०८//०४ |

पनिचोभसँ वीजी मधुमन ०८//०७
तलिस्मा पनिचोभ घूर्जटि ०८//०८
मानिछसँ वीजी वरसेश्वर ९९/०२
टकबालसँ वीजी हरिकंठ ०९/०४
जगतिसँ वीजी जयकर ०९/०९
केउँटी राउढ़ सँ वीजी मसवास वासू ०९//०१
म्चान्दो वलियाससँ वीजी पुरूषोत्तम १०/०६
बुधवालसँ वीजी वासुदेव १०//०९
त्रिलाढ़ी घुसौत सँ वीजी नरसिंह ११/०४
रामानन्द टकवाली वीजी पाँखू ११//०१
पद्मपुर पकलिया वीजी वासुदेव १२/०५
जेजिवाल सँ वीजी अखुरी-थकमाने १२/०५
हरिअम्वसँ वीजी झाऊँ १२/०९
सुइरीसॅ वीजी शेखर १२//०१
जल्लधी जालयसँ वीज वान्धव १२//०८
गाउल करमहा सँ वीजी मुरारी १३//०३
सिंहाश्रमसँ वीजी म.म.उ. हलायुध १५/०७
चोरवालसँ कराढ़ी वीजी सिद्धेश्वर १६/०२
घुसौतसॅ वीजी वासुदेव १९//१०
दिनाही सरिसवसं वीजी जनार्दन १७/०३
कोइयार सँ वीजी शूलपाणि १७/०८
चउँटी टकवालसँ वीजी रत्नेश्वर १७//०१
थरियासँ वीजी त्रिलोचन १७//०६
कटाईसँ वीजी वाचस्पति १८/०४
सकुरीसँ वीजी देयी १८//०४
मरद्योध टकवालसँ वीजी सुचिकर २३//०३
सतलखासँ वीजी मतिकर २४/०६
धीरपुर पनिचोभ वीजी महेश्वर २६/०५
पण्डुआसँ वीजी पाठक गोविन्द २९/०४
सुरगनसँ वीजी म.म.३. उँमापति ७२/०३
ओइमि सँ ओयनाह वीजी १२७/०६
वलियास शुक्ल हरिवंश ०१//०२
मराढ़सँ आवस्थक चन्द्रकर ०१//०५
मंगरौनी माण्डरसँ वीजी त्रिनयनभट्ट ०१//०७
माण्डरसँ अजयसिंह ०१//०९
माण्डरसँ महो वराह ०१//०९
माण्डरसँ सोढर जयसिंह ०१//१०
माण्डरसँ तक्कचिर्योय महास्त्र विद्या पारङ्गत नरसिंह ०१//०१०
माण्डरसँ म.म. निधि ०२/०२
माण्डर सँ म. विभाकर ०२/०२
करिअमसँ म.म. धर्माधिकरणिक मरथ ०२/०३
माण्डरसँ म.म.उ. नारायण ०२/०३
माण्डरसॅ म.म. नरदेव ०२/०३
माण्डरसँ सँ म.म. उ. देवशर्मा सुता म.म.
जगन्नाथ म.म. देवनाथ ०२/०३
मिश्रनामी मिश्रगुणे मिश्र स्थितकर
सदुचा. अमतू सदु. विशो म.म. उ. वटेशर ०२/०५
गढ़निखूति सँ म.म. उ. विद्याधर ०२/०६
वादअलय सँ पंडित गंगाधर ०२/०७
अलयसँ म.म. रामेश्वर ०२/०९
ततैल पण्डुआ सँ म.म. दिवाकर ०२/०९
अलयसँ म. ग्रहेश्वर म. लक्ष्मीधर म. गंगाधर ०२//०१
मताओन दरिहरासँ म. रति ०२//०३
भैयामिश्र ठकुराइन लखिमा ०२//०३
कान्हा म.म. वंशीपर, म. म. हरिवहम ०२//०५
म.म. हरिकेश म.म. धूर्त्तराज गोनू
सकुराढ़ीसँ म.म. देयी
खौआल म.म. उ. प्रजापति ०२//०९
खौआलसँ शर्म्मा धर्माधिकरणिक म.म. उ.हरिशर्म्मा ०३/०१
खौआलसँ गदाधर सुतौ म.म. नयपाणि महीपाणि ०३/०२
खौआलसँ म.म. रत्नपाणि दत्ता म. हरदित्य
म.म. भवादित्य म.म.नयादित्य म.म. धरादित्य ०३/०४
खौआलसँ आचार्यउदयवर ०३/०५
नाउन पनाइत भद्रेश्वर ०३/०८
सकराढ़ीसँ म.म. उ.कारु सुता म. गोविन्द म. स्थितिकर ०३//०२
म. जगद्धर म. हरिहर
सरिसवसँ म. देवादित्य जयादित्य म. हरादित्य ०३//०४
वेलासकराढ़ी राउन मासो ०३//०९
टकवालसँ शुक्ल भिखारी ०३//०९
खौआलसँ धर्मा म.म. उ. होरील ०४/०१

सुइरीसँ धर्माध्यक्षक देवे १६/०६ ०४/०२
चतुर्वेदाध्यायी कामदेव एसुता याज्ञिक
परशुराम दिक्षितसोम त्रिपाठी कृष्ण
महाआसँ अग्निहोनिक धनञ्जय ०४/०४
बेलउँच म.म. उ. राम ०४/०४
खण्डवलासँ म.म. थेध, म.म. मेध, म.म.
दामोदर म.म. महेश ०४//०६
मिथिलापाराज्योपार्यक
गंगोली सँ पण्डित केशव ०४//०६
पालीसँ म. दितिकर म.म. शुचिधर आचार्य लक्ष्मीकर ०५/०३
म. गुणाधर
म.म. शुचिकर म. म. गंगाधर सुता म. हलधर ०५/०४
धर्माधिपरिणिक म.म. नरसिंह म.म. वाछे
सुरगनसँ सर्वज्ञ आँगू ०५//०१
फनन्दहसँ गंगाधर सुत म. लखाई ०५//०२
सकुरीसँ म. नयपाणि ०५//०३
विस्फीसँ शान्ति विग्राहिक देवादित्य राजवेल्लभ भवादित्य ०६//०२
पाणीगारिक विरेश्वर वार्तिक नैवधिक धीरेश्वर सप्रवण महा
सामन्ताधिपति महामहत्तक गणेश्वर भाण्डागारिक यटेश्वर ०६//०३
स्थानान्तरिक हारुत मुद्राहस्तक लक्षपति (वामरू शुभदत्त)
भाण्डागारिक जनेश्वर ०६//०४
यमुगामसँ कार्य्यी माने ०६//०५
स्थानान्तरिक हादत सुतौ महत्तक छोटाई ०६//०३
गढ़ निखूति सँ महामहत्तक सुरेश्वर ०७/०५
बहेराढ़ीसँ स्थानान्तरिक रति ०७/०५
निखूतिसँ शान्तिविग्रहिक हरिहर ०७/०६
निखूतिसँ महामत्तक जगद्धर ०७/०६
तल्हनपुर सँ शुक्ल ज्ञान ०७/०८
नरउनसँ म.म.उ. महिधर ०७//०९
जजिवालसँ शुक्ल कान्ह ०८/०३
खण्डवलासँ म.म.उ. ठाकुर रामभद्र ०८//०२
करढिया पनिचोभ राउल मासो ०८//०६
पुरोहित गोपाल ०८//०७
खण्डवलासँ महोदधि ०९/०१
खाडवलासँ कापनि माधव ०९/०३
सिंहाश्रमसँ म. दधि ०९/०७
माण्डरसँ शान्तिकरणीक पाँखू ०९/०७
पाली म. हलधर १०/०४
तिसउँतसँ पण्डित सुपाई १०/०५
वलियास म. हरादित्य १०/१०
वेलउँच म. धर्मादित्य म. जयादित्य
म. गयादित्य म. महादित्य म. जीवादित्य १०//०३
म. रूद्रादित्य म. मित्रादित्य म. प्राणादित्य
सुइरि सँ प्रतिहस्त प्रज्ञाकर १०//०११
बुधवाल सँ भानुकर ११/०१
बुधवाल सँ गंगेश्वर ११/०३
उदनपुर जजिवाल आवस्पिक माने ११//०१
टकवालसँ एकार्तिक गोपाल ११//०२
दरिहरासँ म. म. रतिपति म. रामपति म. ज्ञानपति ११//०४
दरिहरासँ म.म. सुरपति म.म. इन्द्रपति म.म. घृतिपति ११//५
दरिहरासँ म. कीर्तिशर्म्म म. प्रतिशर्म्मा म. हरिशर्म्म ११//०६
उदनपुर जटिवाल आवस्थिक माने १२/०६
बेलमोहन नरउन कार्य्यि गंगाधर १२/०८
हरिअमसँ दिक्षित झाउँ याज्ञिक त्रिलोचन १२/०१०
वरूआली माण्डर म.म. उ. शंकर १२//०१०
जालय म.म.उ. रामेश्वर सुता महामहत्तक
गणपति महामत्तक रतिधर
सदु. उपा. महिधर १२/११
एकहरासँ स्थानान्तरिक सुधाकर १३/०३
दरिहरा कविराज सिरूर १३//०४
राजगुरू भद्रेश्वर १३//०९
खौआलसँ म. साधुकर सुत म. सुधाकर १४/०५
सकराढ़ीसँ म.म. उ. हरिहर सुता
स. नादू म. भादू स. चाड़ोका १४/०७
सरिसवसँ म.म. जयादित्य १४/०७
पवौली म. गंगापर १४//०३
पालीसँ प्र गौंढ़े १४//०४
खौआलसँ म.म. उ. बुद्धिकर १४//०५
दरिहरासँ म.म. हरिदेव १४//०९
दरिहरा लौरिक विश्वम्भर १५/०१

सिंहाश्रम सँ म.म. हलायुध म. दधि
म. जाई म. महिधर १५/०७
सोदरपुर म.म. हल्लेश्वर, म.म. सुरेश्वर म.म.जीवेश्वर १५/०७
सोदरपुरसँ म.म. उ. योगीश्वर १५//०२
म.म. ग्रहेश्वर १५//०३
सोइमि धर्माध्यक्षक गढ़ाउन १६/०३
खौआलसँ धर्माध्यक्षक लभशर्म्म १६/०६
खौआल सँ पनिहाते नोने १६/०७
शाण्डिल्य गोभे करमहा वीजी सुरेश्वर अहपुर १६//०६
महार्णव कारक म.म. उ. नारायण १६//०६
खनौरी सकराढ़ी सँ धर्माध्यक्षक सर्वानन्द १६//०९
घुसौत सँ म.म. उ. वासुदेव १९//०१०
खण्डवलासँ म.म. उ. मधुसूदन म.म. उ. भवदेव
म.म. उ. कामदेव २०//०८
गढ़विस्फीसँ महत्तक होराई १७/०७
पनिचोभ म. सुपे १७//०३
जजिवालसँ आवस्थिक सिद्धेश्वर १७/०३
विनतीसँ पराक अच्युत १७/०९
माण्डरसँ म. पशुपति म. रघुपति म. रतिपति १८/०३
कराईसँ कवि केशरी म. म. उ. भीम १८/०७
गदनिखूतिसँ महाम्महन्तक सुरेवश्वर ७/०७-१८/०७
माण्डरसँ म. गुणपति म. शिवपति म. इन्द्रपति १८/०९
सोदरपुरसँ म.म. सरवए म. म. विश्वनाथ १८/०९
अलयसँ म. ग्रहेश्वर १८//०१
कर्माधिकरणिक म.म. उ. गदाधर १८/०४
सकुरीसँ म.म. उ देयी १८/०४
खण्डवलासँ म.म. ठ. रामदेव म.म.३-६ रतिदेव
म.म. ठ. कृष्णदेव म.म. लक्ष्मीदेव १८/०८
खौआलसँ ज्यो. डी उ.र २१/०१
पाली सदुपाध्याय गोदे २१//०२
खौआलसँ कवि कीठो प्र. कृष्णपति २१//०५
नडुआर करमहा म. हरिपति उँमापति म. ज्ञानपति २१//१०
छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश २२/०१
सोदरपुरसँ म.म. रविनाथ म.म. रघुनाथ म.म. लक्ष्मीनाथ २२//१०
सोदरपुर सरिसव म.म. जीवनाथ म.म. भवनाथ
(अयाची) म.म. देवनाथ २२/११
सोदरपुर सरिसव म.म. शंकर म.महादेव, म.
भासे. म. द. से २३/०१
सोदरपुर सरिसव म. गदाधर, म. गोविन्द म. हरखू २३/०२
खौआलसँ म.म. देवादित्य २३//०४
पबौली सँ सदुपाध्याय शिवदत्त २४//०१
पुड़ेनरउन सदु. जीवनाथ २५/०१
हरिअम्वसँ मीमांशक विभू २५//०९
माण्डरसँ म. सागर सुता सदु. जीवे महामहत्तक जोर २६/०३
माण्डरसँ सदुपाध्याय विशो २७//०३
सरिसवसँ दौ होरिल २७//०५
बेहट करमहासँ सदु. राघव २७//०६
पनिचोभसँ फलाहारी दिनकर २७//०८
रैयाम सोदरपुर मीमांसक माधव २७//०८
वलियाससँ पनिधोध सुधाकर महिधोध युमंध २८/०३
एकहरासँ मीमांसक रुद्र धर्माधिकारणिक वादू
राज पण्डित गढकू २८//०६
घोसोतसँ म.म. प्र. केशव सुता म. भा गोविन्द २९/०५
घोसोतसँ म.म. गोविन्द सुता म. लक्ष्मीधर म.म. विद्यापति
म.म. दामोदर म.म. रामनाथ. आगमाचार्य देवनाथ तर्काचार्य गोपीनाथ
कन्टकोकारकारक म.म. मधुसुदन म.म. जनार्दन २९/०७
एकहरा सन्यासी काशी २९//०१
पण्डुआसँ म.म. पाठक गोविन्द २९//०४
पण्डुआ सदु. हरि सदु. विष्णु सदु.डालू सदु.धीतू २९//०९
पण्डुआ म. मनोधर २९/०९
पण्डुआ पाँ गुणाकर (१३२६ ई.) २९//०९
पण्डुआ पाँ प्राणधर ३०/०१
पाँ आनन्दकर पाँ कान्ह पाँ माधव पाँ केशव पाँ नारायण ३०/०१
पाँ रामधर पाँ रत्नधर पाँ शुभंकर ३०/०१
पाँ सूर्यकर पाँ विभाकर ३०/०१
सकराढ़ी सदु. सुपे ३०/०२
फाहा बुधवाल म.म. रामदेव ३०/०८
करमहा म.म. रतिधर सुता म. कुलपति सदु.
पशुपति विष्णुपुरी ख्यात ३०//०२
म. रमापति

म.म. मिथिला राज्योपार्जक उदयपुर राजस्थान महाराजक राजगुरु
म.म.महेश, म.म.रामचन्द्र म.म. ठ. गोपाल राजर्षि ज्योतिर्विद
धर्मशास्त्रवेत्ता ३०/०६
खण्डवलासँ अग्निहोत्रिक म.म. विश्वम्भर ३२/०७
जगतिसँ मिमांशक म.म. मिरुस ३५/०६

बुधवाल सदुपाध्याय मणि ३६/०७
पुड़ेनरउन ज्यो. रामनाथ ३६//०५
माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर ३८//०९
घुसौतसँ जगदगुरू म.म. सदानन्द ३९/०४
फनन्दहसँ महोगोढि ४१/०३
फनन्दहसँ सन्यासी रुचि सदु.पा मुकुन्द म.
काशी अहोतिकार ४१/०४
फनन्दहसँ म.म. रामभद्र ४१/०६
फनन्दहसँ म.म. रामरूद्रसुता पंडित राजपदांकित
म.म. मधुसूदन विद्यानिधि राजपदो वैद्यानाथ म. उमानन्द
म. बागीश त्रिदण्डी सन्यासी कारक म.म. रतीशा ४१/०८
भखरौली सकराढ़ी सदुपा. गोविन्द सुत सदु. गदाधर ४१//०२
सदुपाध्याय श्रीकान्त ४१/०४
फनन्दह गोशाई मदन ४१/०८
समौलि पाली परमगुरू पदाँकित म.म. वाचस्पति ४२/०२
फनन्दहसँ गोशाईं सदु. बलदेव सुत गोशांइ जीवनाथ ४२//०१
एकहरासँ कनिकंठाभरण पदांकित वाचस्पति ४२//०४
सोदरपुरसँ ढाका कवि गणपति ४३//०३
वलियास सँ वेणीसुत श्रोत पल्लव धीरू ४४/०१
पालीसँ परमगुरू वाचस्पति सुता म. वेणीनायक म.रघुनाथ
म.म. पा. नरहरि ४५//०४

माण्डरसँ यदुनाथ म.म. उ. पद्मापति
परहर सकराढ़ी सँ म.म.उ. रामभद्र सुता म. भवदेव
म.म. ज्योति. यदुनाथ कविन्द्र पदों म.म. रघुनाथ ४६/०१
रांगोर भंगतिया राजन ४७//०९
करमहा वैष्णव केशव ४९/०२
खण्डबला पौलन्द्र मणि ४९//०७
मंगरौनी पाली पाँ मोहन ५०//०३

पाँ धनेश ३१/०५
माण्डर शंकरसुत म.म. सुत जगन्नाथ ३१/०६
सोदरपुरसँ खोतर सुत म.म. माधव सुता
म. भगीरथ म. रमापति ५२/०९
मंगरौनी पाली पाँ धनेश ५२//०१
सरिसव सँ पौवार ५२//०५
सरिसवसँ पाँ भवदेव ५२//०७
सरिसव सँ डीङरसुत पाँ केशव ५३/१०
दरिहरासँ बसाउन सुत म. जगन्नाथ ५३//०४
अलयसँ माधवसुत म. राघव ५३//०८
बेलउँच सँ वंशमणि सुतकविकालीदास ५४//०६
वलियाससँ कविशेखर चन्द्रनाथ ५५/०२
कुजौलीसँ म.म. गोपीनाथ म.म. रघुनाथ ५५//०३
माड़नी वलियास पंडित राज पदांकित रघुनन्दन ५५//०७
सोदरपुरसँ रसमंजरी कारक कविभानुदत्त ५५//०१०
बहेराढ़ी सँ भानुकर सुत म. रूचिकर ५७/०३
बहेराढ़ी सँ प्रज्ञाकर सुत दशावधान पदांकित रत्नाकर ५७/०४
बुधवालसँ भवानीनाथ सुत म.म. रघुनाथ ५८/०४
फनन्दह सँ म. लक्ष्मीधर ५८/०७
पालीसँ रतनूसुत पाँ रतिधर ५८//०४
वलियाससँ महो ओहरि
५८/०८
अलयसँ रघुसुत महोपराऊँ सुता ५९/०१
म. पशुपति म. रघुपति
सोदरपुरसँ देवेसुत म.शक्तू म. जगतू म. मगतू म. मति. ५९/०६
वलियास सँ विश्वनाथ सुत मिरियाएल यदुनाथ ५९//०४
समौलि पालीसँ म.म. रघुनाथसुता म. रामदेव म.कामदेव
म. महादेव म. रतिदेवा ५९//०७
वलियास मिश्र राघव सुता म. हरि कृष्ण म. राम कृष्णा ६०/०२
वलियास सँ जगदीश सुत कविमणि पदांकित पशुपति ६०/०४
माण्डरसँ नरपति सुत म. जनार्दन ६०//०४
गंगोलीसँ शोरे सुत म. काशी सुत म.म. प्रितिनाथ ६०/०६
बेलउँच जयकृष्ण सुत ज्योति. वाछाप्र. परशुराम ६१/०१
पालीसँ नालूसुत म. रामदेव म. यशोधर धर्माधिकरणिक
म.म. नरहरि ६१/०४/५

पबौलीसँ म. वेणी ६१//०८
पालीसँ म.म. नरहरि सुता म.म. माधव २ केशव
२ नारायण म. विष्णु म. श्रीराम ६२//०१/२
पालीसँ माधवसुत म.म.वर्द्धमान ६२//०४
सोदरपुरसँ धनेशपौत्र गोपीनाथसुत सदु. बालकृष्ण ६२//०६
खौआलसँ गुणे सुत म.म. रूचि ६२//०७
पालीसँ कुलपति सुत चतुरकवि पदां. म.म. यदुनन्दन ६३/०६
पण्डुआसँ पाँ लडावन नै. बुद्धिकर सुत पाँ होरेश्वर सुता
म.म.उ. महाजन म.म. उ.लान्हिदत्तपुत्र दामोदर
म.म. पुरूपत्तिम ६४/१-२-३
पाँ सदु. हरिदेव-
पण्डुमासँ पाँ रतिदेव पाँ रामदेव पाँ रघुदेव ६४/०४
सोदरपुरसँ म.म. जोर ६४/०५
पण्डुआसँ पाँ भगीरथ पाँ हरिश्वर या मथुरेश
पाँ देवकीनन्दन ६४/०७
पण्डुआ पाँ वंशीधर ६४//०१
पनिचोभसँ म.म. जानूसुत म.म. हरिनाथ ६४//०१
पनिचोभ सँ म.म. हरिनाथ सुता म. शिवनाथ म. विश्वनाथ बुद्धिनाथ
म. रतिनाथ म.म. दानीनाथ म. काशीनाथ म. देवनाथ ६४//०२
पनिचोभसँ म. शिवनाथ सुत कविशेखर पदांकित
शतञ्जीव ६४//०३
विस्पीसँ म.म. जयदत्त सदु. किर्तिदत्त कविकोकिल
राजपण्डित म.म. उ. विद्यापति ६४//०५-६
पण्डुआसँ पाँ अच्युत ६५/०१
पण्डुआसँ पाँ वासुदेव पाँ रामकृष्ण ६५//०५
धोसोतसँ गरूड़ध्वज म.म.उ. रघुनन्दन ६५//५
पण्डुआसँ सदुपाध्याय धीतू ६५/०६
सोदरपुरसँ म. रतिपति ६६/०८
दरिहरासँ म.म.उ. गणपति ६६//०४
सोदरपुरसँ हरिखूसुत पाँ रामदेव पाँ रतिदेव पाँ
केशव पाँ कृष्ण ६६//०५
दरिहरासँ बाबू सुत कवि भोरा प्र. हरपति ६७/०२
सकराढ़ीसँ रतिनाथ सुत पाँ अर्जुन पाँ माधव पाँ कांगा ६७/०४
वलियास सँ कविमणि पशुपति सुत महावल काशीनाथ ६७/०८
सरिसवसँ आचार्य बागू ६७//०१
बहेराढ़ी सँ अलंकार सुत पौगोनू ६७//०८
पनिचोभसँ बुद्धिनाथ सुत कवि रामदेव ६८/०१
दिघोयसँ जयदत्त सुत धर्माधिकरणिक भट्टजीवे ६८/०५
दिघोयसँ पार्णागारिक जानू दत्त ६८/०५
सोदरपुरसँ गोनू प्र. हेमाङ्गदसुत ज्यो. उँमापति
वैया भैरवदत्त ६८//२
बेलउँचसँ वासुदेव सुत म.म. रविनाथ ६८//०६
पाँडाअँसँ भगीरथ सुत पाँ जपशिव पाँ पशुपति धीरेश्वर ६९/०३
जमदौली पालीसँ ज्यो. जीवनाथ सुता ज्यो उँमानाथ ज्यो चिकू प्र.
रूपनाथ ज्यो. जीवनाथ ज्यो. श्री कृष्ण ज्यो. श्रीराम ६९//०२
माण्डरसँ प्रसाद शुभंकर ६९/०१
जमदौली पालीसँ ज्यो. श्रीनाथ सुता ज्यो. गुणानन्द
ज्यो. लक्ष्मीकांत ज्यो हेमाङ्गद ज्यो. बछरू ६९//०४
६९//०६
ओइनिसँ महाराज धीरसिंह ७०/०७
माण्डरसँ उधे सुत कवि चिकू ७०//०३
सरिसवसँ सदु. गोविन्द सुता म. बाबू प्र. सुधाकर
पाँ. रामदेव पाँ दामोदर ७१/०९
सरिसव सँ पाँ दामोदर सुत पाँ कविपति ७१//०७
सरिसवसँ विश्वनाथ सुत पाँ जयशिव पालीसँ गोविन्द ७१//०२
पालीसँ चिकूसुत पाँ गोविन्द पण्डुआसँ पाँ मिसर ७१//०२
पण्डुआसँ जनार्दन्सुत म.म. उ. गोपाल पाँ मिसर ७१//०२
पण्डुआसँ पाँ मिसर सुत पाँ श्रीधर पाँ श्रीनाथ ७१//०२
सरिसव सँ पाँ जयशिवसुत पाँ बलभद्र पाँ भैयन ७१//०३
सुरगनसँ म.म.उ. ऊँमापति एसुता म.म. उ. उग्रपति ७२/०३
एसुतो म.म.उ. प्राणपति एसुतौ म.म. तोषपति
एसुतो म.म.उ. विश्वपति ७२/०४
सुरगनसँ आभीसुत कुल क्षेत्रो पार्जक राउराज थामे ७२/०५
सुरगन सँ चातुर्द्धरिक महाराज समर सिंह ७२/०७
सुरगनसँ महोज्योतिर्व्विद खञ्ज कृष्णदेव रूपराय दौ. हरिदेव ७२/०८
सरिसवसँ पाँ नेनू ७३/०५
पनिचोभसँ राजम प्र. हरपति सुत म. वाचस्पति म. रघु ७४//०३
खौआलसँ कमल सुत म. गुणाकर वैदिक पिताम्बर ७५/०४
वभनियामसँ गोविन्द सुत पौराम ७५/०५
राधेपुरूष लक्ष्मीपाणिसुत म. गोपाल म. श्रीराम क्षेत्र वास्तु पदांकित

म.म. जगन्नाथ ७५/०६
महिषीपाली लक्ष्मीदेव सुत वैया अमृतनाथ ७५//०८
बुधवालसँ रघुसुत म. परान ७६/०१
माण्डरसँ म.म.उ. अनिरूद्ध ७६/०८-४०//०३
नरउनसँ परभूसुत सप्रक्रयनाथू प्रचण्ड राय पौखू अग्निराय पदां.
किताङ्गोपी ७६//०४
सरिसवसँ रूचिनाथ सुत म.म.उ. वामदेव ७६//०५
सरिसव सोदरपुरसँ रामचन्द्र सुता म. रघुपति म.रतिपति म. धर्मपाल ७७/०१
सरिसव सोदरपुरसँ म.म. रति पति सुत म.म. रामेश्वर म.म. रमाकान्त सदु. घनश्याम ७७//०६
पालीसँ दामूसुत म. मणिनाथ ७९/०३
पालीसँ नैष्ठिक धरानाथ ७९/०६
खौआलसँ अमरूसुता भाऐं ठो म. दामू म. पाँखू ७९/०७
नरउनसँ सरस्वती राम ७९/०९
नरउनसँ म.म. हरिश्वर अवलम्ब सरस्वती पदां.
म.म.उ. नरेश सुत सरस्वती राम ७९//०२
धकहरासँ भाष्कर सुत म. शिवदेव ८०/०१
कुजौलीसँ कृष्णादाश सुत कविगंगादाश म.म. गोविन्द दास ८०/०८
माण्डरसँ रंजनसुत पाँ हराई ८०//०५
सोदरपुरसँ म.म. जयदेव प्र. पसधर सुत म.म. माधव ८१//०८
हरिअम्बसँ भवदेव सुत म. महाजन ८२/०७
हरिअम्बसँ म. महाजन सुत म.म. शिवनाथ ८२/०९
घुसौतसँ म.म. कृष्णानन्द ८२//०५
हरिअम्बसँ बुद्धि श्रुतिधर पदांकित हरिदेव बुद्धि श्रुतिधर पदां रघु. ८२//१०
पालीसँ रमापति सुत पल्ल्वकार पदांकित भवनाथ ८३/०१
खण्डबला सँ पाँ ठ. कमलमणि ८३/०६
दरिहरासँ गोपालसुत वै. जीवनाथ वै. विधू प्र. देवनाथ ८३/०७
दरिहरासँ वै. यदुनाथ ८३//०३
सरिसवसँ मोहनसुत सदु. साहेव पाँ घनश्याम ८३//०९
सरिसवसँ सदु साहदेवसुत पाँ भानुदत्त ८३//०११
कटैया पाली पाँ गोविन्द सुत पाँ वदसुत पाँ भगीरथ ८३//१०
सल्हवी नरउनसँ हरिसुत कवि कृष्ण ८५/११
माण्डरसँ रति दो सुत म.म. रघुनाथ म. शुभंकर ८५//०३
डुमरा बुधवलासँ गोपीनाथ सुत म.म. घनश्याम ८५//०६
सिंहौलि माण्डरसँ वैदिक विश्वम्भर सुत म. कुलपति म.चतुर्भुज ८६/०२
करमहासँ रामदेव सुत दिवान भोरानाथ ८६/०६
बधवास सरिसव पाँ छोटाई पाँ रघुनाथ पाँ कमलापति पाँ धरनीधर ८७/०२-४
करमहासँ देवनाथ सुत कवि विद्यापति ८७/०९
सोदरपुरसँ पाँ रतिदेव सुत पाँ मणिपद ८७//०२
वधवास सरिसवसँ पाँ धरिणीधर सुत पाँ शिवरत पाँ मैयन पाँ दिवाकर८७//०५
रैयाम सोदरपुरसँ पाँ शिवदेव ८९/०९
हरिअमसँ अनन्तसुत माँङ रघुपति ९०/०३
कन्होली सोदरपुर भवेश सुत कवि कृष्णा दत्त ९०/०५
भाड़नी वलियास रघुनन्दनसुत अभिनव पंडित राज पदां राय शंकर ९०//०४
पबौलीसँ जीवनाथ सुत वैया. राम ९०//०८
नडुआल माण्डर सँ अनिरूद्ध सुत म. हेमकर ९१/०५
रूचौली करमहासँ नरोत्तम सुत म. उ. नन्दन म.म. रामेश्वर सदु. हरिश्वर ९१/०९
म.म. रामेश्वर सुता म.म. गंगादत्त म.म. लक्ष्मीदत्त सुबोध ९१//०६-७
म.म. लक्ष्मीदत सुता म.म. जगद्धर म.म. श्याम प्र. रूद्रधर ९१//०८
खण्डबलासँ म.म. महेश सुत म.म. महाराज शुभंकर ९२/०३
म.म. शुभंकर सुत म.म. रघुराम ९२/०३
पुदे नरउन सँ राय रघुदेव पदां मोहन ९२/०४
सुल्हनी नरउनसँ महिपाणि सुत सरसकवि कुलपति ९२/०६
सिंहौलिमाण्डर रूद्र हरपति ९२//०२
भौर खण्डबलासँ गोपालसुत ज्यो. हेमाङ्गद ९३/०२
मलियाम नरउन सँ भवदेव सुत सदु. शधर ९३/०३
कन्होली सोदरपुरसँ स्वयं पाधी यदुनाथ ९३/०४
माड़रि वलियाससँ सदु वुढ़व ९३/०८
मंगरौनी पालीसँ यशोधर सुत म.म.सदु. पाँ रमापति ९३//०५
पवौलीसँ चाण सुत कविमोलन ९४/०२
खांगुड सरिसव सँ पाँ महिपतिसुत पाँ हेमाङ्गद पाँ हिरेश्वर ९४/०६-७

बेहट करमहासँबनाईसुत कविमहिनाथ कवि ९४//४
कविजयकृष्ण सुत सदु जगन्नाथ ९४//०६
बेहट करमहासँ सदु. जगन्नाथ सुता कवि वेणीदत्त महोदार रमादत्त ९४//०८
दरिहरासँ रघुनाथ सुत म. माधव वैदिक विरेश्वर ९५/०६
खण्डवलासँ म.म. ठ. विश्वम्भर सुत म.म. विश्वनाथ म.बालकृष्ण ९५//०९
खण्डवलासँ म.म. ठ. रघुराम म.म. ठ. परशुराम म.म. शिवराम ९६/१
दरिहरासँ म. माधव सुत वैदिक भगीरथ ९६/०९
दरिहरासँ वै. भगीरथ सुता सदु. आनन्द वै. नित्यानन्द
दिवान जयानन्द ९६/०१
रजौरा माण्डरसँ भवेश सुत म.म. वामदेव
सरिसवसँ रुचिसुत पाँ कारी ९८//०२
दरिहरासँ म.म. बन्धु ९८//०४
दरिहरासँ भिखारीसुत वै. विश्वनाथ १००/०२
विविध विरूदाबलि विराजमान मानो सुत माना
प्रतिज्ञापद पाँ. विवेक परशुराम समस्त प्रक्रिया विराजमान
महोग्रप्रताप मिथिलालंकर महाराजाधिराज १००//०२
खण्डबलासँ मणिनाथसुत म.म. रूपनाथ कविश्यामनाथ १०१/०९
सरिसवसँ पाँ देवकीनन्दन पाँ उँमाइ १०१//०४
सरिसवसँ पाँ होरील १०२//०५
पालीसँ धौंधेसुत कवि कृष्णपति १०३//०१
दरिहरासँ कीर्तिनाथ सुत वैदिक धननाथ १०३//०३
मलिछाम नरउनसँ भवदेव सुत ज्यो. नरेश सुत पौराणिक मनबोध १०३//७-८
सरिसवसँ कृष्णपति सुत पाँ लक्ष्मीपति पाँ हरिजीव १०३//०९
सरिसव सँ पाँ हरि श्रीकान्त पाँ बदनू सुत पाँ लक्ष्मी पति १०४/०१
अनलपुर कामहासँ रमानन्दसुत सर्वज्ञान म.म. बालकृष्ण सर्वज्ञ
सरस्वती पदां. म.म. रूचिपति पण्डित राज पदां. म.म. रतिपति १०४/०२
दरिहरासँ रामसुत वैदिक भगीरथ गण पजियाड़ सोने प्र. रमापति १०४/०७
हरिअमसँ म.म. सचल प्र. भवानीरत वैया म.म. मोहन १०४//०५-६
पुडेनरउनसँ गंगादत्त सुत वैया राधानाथ १०६//०५
परियाम्ब वुधदानसँ मोहन सुत कवि कृष्णानन्द १०७/१०
सरिसवसँ पाँ वावूसुता पाँ हृषिकेश पाँ नारायण पाँ राधादित्य १०९/०२
सरिसवसँ गोविन्द सुत पाँ गदाधर १०९/०८
नाहस खौआल गोशाँइ सुता ज्यो. हृदयदत्त पाँ. राम म.ईश्वरदत्त म. नेनमणि १०९//१६
सरिसवसँ भवदेव सुत पाँ लक्ष्मीपति १०९//०८
मंगरौनी पालीसँ भिखूसुत उपाध्याय रमापति पाँ बधाई ११०/०५
मंगरौनी पालीसँ उपा. रमापति सुत पाँ धर्मङ्गद ११०/०६
पाँ धर्माङ्गद सुता पाँ हिरा पाँ मोती पाँ अधारी ११०/०६
पालीसँ पाँ मोती सुत पाँ वेणीमाधव ११०/०८
एकहरासँ माधवसुत सन्यासी काशी ११०//०३
खण्डबलासँ शुभंकर सुत महोग्रप्रताप पुरूषोत्तम ११०//०४
सकराढ़ीसँ नकटू सुत वैदिक चन्दरक्त ११०/१०
करमहासँ राघव सुत ज्यो. नीलकंठ १११//०१
पालीसँ गोशाँइ विश्वेवर १११//०२
पबौलीसँ रंजन सुत पाँ हरिसेन ११२/०९
माण्डर सँ मेधापतिसुत वै. च्छपति ज्यो. बतहा ११२//०७
माण्डर सँ वै. अच्छपति सुत वैदिक जीवपति ११२//०८
सोदरपुरसँ म. वाराहनाथ ७८/०१ ११२//०२-०४
नरउन सँ सरसकविकुलपति सुत वाँका उमानाथ ११३//०२
माण्डर सँ विद्वी सुत उपाध्याय काशीनाथ ११३//०५
बेहट करमहा सँ कृष्णानन्द सुत कविधर्मानन्द ११३//०६
पबोलीसँ कृष्णपति सुत सर्वज्ञान गारीद ११४/०९
माण्डरसँ शोभाकर सुत पाँ हियन सुता सदु. भोलानन्द ११४//०१
पाँ. दयानाथ पाँ भवनाथ
माण्डरसँ हरिशिव सुत दरोगा हृदयनन्दन ११५//०४
खण्डवलासँ मिथिलाराज कुलभूषण वाबूतुलापति सिंह ११६/०२
गंगोरा बुधवाल सँ देवकृष्ण सुत म.देवनाथ सुत म.म. कृष्णदत्त ११८/०६
खण्डवलासँ मिथिलेश्वर नरपति सुत सर्वस्वदाता वाबू धर्मकर्मदता ११८//०७
बाबू नन्दन सिंह शौर्यार्जुन ठ. ठाकुर सिंह ११८//०८
पुड़ेन नरउनसँ जनार्दन सुत म. लोकनाथ
मंगरौली पाली पाँ. हिरा सुत पाँ. मनबोध १२०//०२

खण्डबलासँ जगतसिंह सुत म.म. कृष्णसिंह १२०//०३
कन्हौली सोदरपुर रामेश्वर सुत वैया. परमेश्वर १२१/०१
सरिसवसँ भवानीनाथ सुत पाँ विश्वनाथ १२१/०३
पण्डुआसँ पाँ हरिश्वर सुत पाँ कृष्णपति पाँ
बोध, पाँ कुढ़ाई १२१/०७
सरिसवसँ दशरथ सुत पाँ हेटू सुत पाँ. चाण १२१//०१
वलियाससँ भवेश सुत म.म. सीना
तरौनी करमहासँ दुखन सुत ज्यो. कलानाथ १२२/०३
रूपौलि करमहा सँ महोपाध्याय लान्हि १२२//०१
पबौलीसँ शुश्री सुत वैया. मनसरण १२२//०२
सोदरपुरसँ वैदिक होरी सुत वै. कुलमणि वै. वंशमणि १२३/०८
पालीसँ महोजगर्द्धर १२३//०१
सोदरपुरसँ म. जयनाथ १२३//०४
माण्डरसँ गोखूल म.म. उ. चन्द्रकर १२४/०२
सरिसवसँ धर्मपति सुत पाँ कमलनयन १२४//०६
पण्डुआसँ पाँ पशुपति सुता पाँ नन्दीश्वर पाँ
विकूप्र रमानाथ १२४//०७
पाँ नन्दीश्वर सुता पाँ चाण पाँ गरीव पाँ भैया १२४/०८
सकराढ़ी सँ पाँ गोनू १२५/०१
जगौर माण्डर सँ सुभान सुत नवलसाधिपति मातक १२६/०६
ओइनि सँ राज पण्डित कामेश्वर १२७/०६
ओइनि सँ कुमर मतिदर सुत राजा हरिसिंह १२७/०४
दरिहरासँ बलभद्र सुत कवि रामभद्र सुतक कविशंकर १२८/०२३
बलियास सँ धराधर सुत म.म.उ. मिरिदत्त १२८//०२
हरडी सकराढ़ीसँ म.म. हरिहर सुता सदु. नान्द प्र. नन्दीश्वर
सदु भद्रेश्वर प्र. भादू सदु. सूपे सदु. चांड़ो १२८//०४
सरिसवसँ म. जयादित्य १२८//०५
सकराढ़ीसँ डालू सुत पाँ कुलपति १२८//०६
हरडीसँ कराढ़ी सँ पाँ वेणी सुत पाँ रामभद्र १२६//०७
हरहरिसँ करादीसँ पाँ नरपति सुत पाँ जगन्नाथ १२८//०७
पाँ रघुनन्दन पाँ कमलनयन
सरिसबसँ म.ब. भैयन १२९/०१
फनन्दहसँ म.म. रतीशसुत म.म. इन्द्रभान १२९/०३
सतलखासँ पुरन्दर सुत म.म. बच्चू. १३०/०१
पबौलीसँ रघुनाथ सुत कविहट्ठी १३०/०३
करमहासँ रतन पतिसुत वैया. हरपति १३०/०६
कटका सोदरपुर सँ अच्युत सुत कवि महिनाथ १३१/०३
सोदरपुरसँ लक्ष्मीनाथ सुत म.म. दामोदर १३१//०१
अलयसँ हचलूसुत म. ज्ञानपति १३१//०१
अनलपुर करमहासँ चित्रधर सुत म. गौरीदत्त वैया. रज्जो
पाँ. नेया प्र. हेमनाथ वैयाऋदि पाँ राम १३२//४
खौआलसँ भूषणसुत कवि हेमनाथ १३४/०६
रूचौलिए कटरा सँ कविनन्दन सुतो ज्यो. हरिश्वर १३४/०८
रू. एकहरासँ ज्यो. हरिश्वर सुत म.म. ज्यो. गुणीश्वर
म.म. वृन्दावनचन्द्र १३४/९
जमरौली पालीसँ ज्यो. चिकू प्र. रूपनाथ
ज्यो. (भूवदानन्द कुमुदानन्द परमानन्द) १३४//०१
ज्यो. कुमुदानन्द सुत ज्यो सोनमणि १३४//०२
ज्यो. सोनमणि ज्यो. मनबोध ज्यो. भैयन कविलाल १३४//०४
करमहासँ हेमकर सुत वैया. रामनाथ १३४/०५
करमहासँ हेमकर सुत वैया. रामनाथ १३४//०५
बहेराढ़ीसँ प्रद्युम्नसुत सदु. रामेश्वर १३५/०२
पण्डुआसँ पाँ. रतिदेव सुत पाँ हाड़ी १३५/०९
बलियाससँ धराधर सुत वैया. खुशिहाल १३५//०१
पालीसँ ज्यो. परमानन्द १३५/०४
खण्डवलासँ मोहन सुत कविगंगाधर १३६/०४
पण्डुआसँ पाँ श्रीधर १३६/०९
पबौलीसँ कवि जीवनाथ १३६/१०
करमहासँ केशव सुत कविन्द्र पदां. रतिदे १३६//०६
दरिहरासँ भगीरथ सुत गिरमिटिया रमाकान्त १३७/१०
सरिसवसँ मधुसूदन सुत पाँ. पशुपति १३८//०८
पालीसँ ज्यो. उमानाथ १४०/०२
तोधरा नरउनसँ विश्वनाथ सुत कवि जामू १४०//०८

ई पोथी जीनोम मैपिंगक प्रयास अछि, संगहि ई हुनको लेल छन्हि- जे पञ्जीशास्त्रक विद्वान् नहि छथि मुदा हुनकर एहिमे रुचि छन्हि।हुनका सभ लेल जिनकर

पञ्जीशास्त्रमे प्रवेश नहि छन्हि मुदा परिस्थितिवश एहि शास्त्रक उपयोग अपन जीविका लेल कए रहल छथि।संगहि सभ जिज्ञासु आ शोधकर्ताक लेल तँ ई उपयोगी अछिये।

प्राचीन पञ्जीमे समस्त मैथिल ब्राह्मणक विवरण अछि। नग्राममे पछबारिपार(श्रोत्रिय छोड़ि बाकी सभ)क गाम सहित वर्णन अछि, जे प्राचीन पञ्जीमे नहि अछि। कारण ओतए गामक द्योतक मूल अहि छल। उपटीप (उप-लग, टीप-टीका)- गामक वर्णन सहित प्राचीन पञ्जीकेँ आगाँ बढ़बैत छलाह।

डी.वी.डी.क तालपत्रपर लिखल मिथिलाक्षर अंक डायरेक्ट्रीक सोझाँक अंकमे अछि। एहि पोथीक मिथिलाक्षर अंकन जाहि दस हजारसँ ऊपर तालपत्र/ बसहा पत्र/ आधुनिक कागजपर लिखल मिथिलाक्षर पञ्जीक ४०० वर्षसँ ऊपर पुरान पाण्डुलिपि मध्य वर्णित साढ़े पन्द्रह सए वर्षक (४५०-२००९ ए.डी.)क जीन मैपिंग वर्णित अछि।डिजिटल इमेजिंगक समस्त फाइल डी.वी.डी. पर एहि पोथीक अनुलग्नक रूपमे मात्र एक हजार भा.रु.मे जिज्ञासु पाठकक लेल क्रेयार्थ अलगसँ उपलब्ध अछि। पुस्तकक कारण आवरण देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा पञ्जीकारजीक हस्ताक्षर जे १७६६ केर अछि, केर सेहो प्रयोग भेल अछि आ हुनक पितामह पञ्जीकार रघुदेव झाक लिखल माण्डर मूलक पोथीक प्राचीनतम डिजिटल इमेजिंग सेहो अछि।

पोथीक टंकणक लेल मोहतरमा नाजरीन, मोहतरमा जीनत, श्री प्रदीप आ श्री अजय आ प्रूफ-रीडिंग लेल श्रीमती रचना डोगरा, देवेश वर्मा आ राकेश रंजनकेँ धन्यवाद दैत छियन्हि। एतेक कम समयमे आ मोटा-मोटी अशुद्धि रहित परिणाम बिना हिनका लोकनिक सहयोगक सम्भव नहि छल। डिजिटल इमेजिंगक गुरुतर कार्यमे श्री उमेश कुमार महतो, बहादुरगंज, जिला किशनगंज, केर योगदान शब्दमे करब सम्भव नहि अछि। अन्तिम प्रूफकालमे श्री आशीष चौधरी, गाम चरैया, जिला अररियाक योगदान भेटल।

पाठ-प्रवेश:जीन मैपिंग (४५०-२००९ ए.डी)

शाखा पुस्तक देखबाक अवगति :शाखा पुस्तकमे सभसँ पहिने -वर्णाक्रमसँ अ सँ ऐ धरिक पातमे पत्र पञ्जी अछि। जकर विषय थिक कतेक गोत्र- गोत्रक अधीन कतेक मूल, मूलक विभेद मूलग्राम ओ तकर- ताहि मूलग्रामक अछि पुरुष। खण्ड १ मे शाखाक विस्तार अछि, प्रारम्भ भेल अछि शाण्डिल्य गोत्रक गंगोली मूलसँ आ जकर आदि पुरुष थिकाह गंगाधर। अगिला पीढीमे हुनक एक विवाहक दू संतान १.वीर झा आ २.नारायण। वीरक सन्तान पर्व पल्ली/ पवौली मूलक बीजी। आ नारायणक संतान आगाँ संकर्षणसँ खण्डवला (खडौरे) मूलक संस्थापक भेलाह। एहिना क्रमे प्रायः प्रत्येक मूलक बीजी पुरुष ठाम-ठाम भेटताह-

यथा पृष्ठ-संख्या १/३- गंगोली बीजी गंगाधर

पृ.सं. १/१२- एकमा वलियारु वीजी धरनीधर

पृ.सं. १/१४- वरुआली मराढ़ वीजी- दिवाकर

पृ.सं.- १/१७- मंगरौनी माण्डर वीजी त्रिनयन भट्ट इत्यादि।

शाखा पुस्तकक मुख्य विशेषता अछि- प्रयोजनक अनुसार विस्तार, पूर्वापरक ज्ञान हेतु अंकनक व्यवस्था कएल गेल अछि।यथा पृष्ठ संख्या- ८३/०६ आ १८१-६

उदाहरण- कमल मणि ठाकुरक विवाहक उल्लेख अछि- हुनका एक बालक- कुलमणि प्रसिद्ध फेकन ठाकुर। कमलमणि ठाकुरक विवाह दरिहरा मूलक रतौली शाखामे अभयनाथ झाक बालक भीखर झाक पुत्रीसँ। आब पढ़निहारकेँ समस्या हेतन्हि जे ई अभयनाथ सुत भीखरक पूर्व परिचय की छन्हि तँ हम देखैत छी जे भीखरक आगाँ मे ३८/५ लिखिकऽ हरिनन्दन झाक पिता रामचन्द्र झा छथि, जिनकर विवाहक उल्लेख ३८ पत्रक पहिल पारमे ५म पंक्ति रामचन्द्र झाक विवाह लिखल छन्हि। रामचन्द्र झाक दू गोट बालक रघुनन्दन आ दोसर हरिनन्दन। ई दुनू भाय खण्डबला मूलक रतिनाथ ठाकुरक दौहित्र छथि। एहि रतिनाथक परिचयक हेतु ३३॥२ अर्थात् पात संख्या ३३क दोसर पृष्ठ पर तेसर पंक्तिमे जीवे छथि खण्डबला मूलक। एहि जीवेकेँ उठाकऽ ३८ पातक पहिल पारक पाँचम पंक्तिमे अनैत छियन्हि। एहि ठाम देखैत छी जे जीवेक बालक छथि रामनाथ आ पाँथू। एहि पाँथूक बालक छथि रतिनाथ। एहि रतिनाथक विवाह छन्हि महिषी बुधवाल मूलक डालूक पौत्री ओ श्रीदत्तक पुत्रीमे। रतिनाथक विवाहक वर्णन एहि ३८ पातक पहिल पारक आठम पंक्तिमे। अस्तु एहि प्रकारेँ सभटा अंकक सहारासँ परिचय आगाँ बढ़ैत अछि। जाहि ठामसँ उद्धरण लेल जाइत अछि, ताहि ठाम नामक ऊपरमे माथपर (आगाँ) अंक लिखल जाइत

अछि। ई अंक थिक, जतऽ नाम लए जएबाक अछि ओहि पातक संख्या ओ पंक्ति जतऽ नाम आनल जाएत अछि। ओहि ठाम नामसँ पहिने जतऽ सँ नाम आनल गेल ओहि पत्रक संख्या ओ पंक्ति।यदि परिचय पूर्ण अछि तऽ नाम अनबाक प्रयोजन नहि, मात्र जतऽ पूर्व परिचय लिखल अछि, ओहि पातक संख्या ओ पंक्तिक अंक मात्र लिखि देल जाइत अछि। जेना ११४ पातक पहिल पृष्ठपर चारिम पंक्तिमे अर्थात् ११४/४ मे वलियास मूलक राव शंकरक विवाहक उल्लेख भेल अछि। हुनक विवाह छल पवौली मूलक प्रितिनाथक कन्यामे। प्रितिनाथक विवाहक वर्णन १०३/२ मे भऽ चुकल अछि। हुनक विवाह छल कुजौली मूलक गोपीनाथक कन्यामे तँ मात्र १०३/०२ लिखि परिचय पूरा कऽ देल गेल, आब जिनका परिचय बुझबाक होएतन्हि तँ ओ १०३/०२ मे जा कऽ देख लेताह, अस्तु।

बहुत ठाम पूर्ण परिचय नहि रहलासँ अंकक उपयोग नहि कएल गेल अछि। एहि प्रकारेँ अंक लिखबाक प्रयोजन सिद्ध होएत अछि।

किछि सांकेतिक शब्द:

दौ- अर्थात् मातामह (नानाक नाम)

सँ- मूलक परिचायक

दौहित्र दौ (द्दौ.) माइक (मायक) नाना मातृ मातामह

सदु.- सदुपाध्याय

म.म.उ.- महामहोपाध्याय

वैया.- वैयाकरण

वै.- वैदिक

ज्यो.- ज्योतिष शास्त्रक ज्ञाता

बीजी- अर्थात् कोनो मूलक प्रारम्भिक ज्ञात पुरुष

छापामे पातक संख्याक हिसाबसँ टंकण आ अंकन भेल, मुदा एतए पातक संख्या तँ अक्षुण्ण रहल मुदा पाँतिक संख्या मे एकाध ऊपर नीचाँ भए गेल।जिज्ञासु पाठक पाँतिक निर्देश जे पातक संख्याक बाद अछि मे एकाध ऊपर देखि अल्प-प्रयत्नसँ अपन जिज्ञासा शान्त कए सकैत छथि।

## खण्ड १ : विवरण

पत्र पंजी- खण्ड १ – पृष्ठ १-१४ (मूलग्रामक विभाजन कोन पुरखासँ)

गोत्र पंजी- खण्ड १ पृष्ठ १४-१५ (कतेक गोत्र आ ओकर अन्तर्गत कतेक मूल)

मेघापत्यः खण्ड १ पृष्ठ १७-३३७

दामोदरापत्यः खण्ड १ पृष्ठ ३३८-४५४

महेशापत्यः खण्ड १ पृष्ठ ४५५-६१०

माने गादू- खण्ड १ पृष्ठ ६११-६९०

ठाकुर चन्द्रपति [महादेव (थेघ), भगीरथ (मेघ), दामोदर, महेश- महेश ठाकुरक भाए सभक नामपर अध्याय सभक सिम्बोलिक नामकरण, सभटा मूल (१६७) क वर्णन।

पत्र-पञ्जी-(मूल ग्रामक विभाजन कोन पुरखासँ तकर विवरण)- ०१-४०

गोत्र-पञ्जी- (कतेक गोत्र आ तकर अन्तर्गत कतेक मूल)- १४-१५

महेश ठाकुरक सभसँ जेठ भाएक नामपर सिम्बोलिक अध्याय-नामकरण- मुदा एतए सभ मूलक विवरण (१७-३३७ मेघापत्य- मेघ ठाकुरक सन्ततिक विवरण)

महेश ठाकुरक पैघ भाएक नामपर दामोदरापत्य (३३८-४५४)

महेश ठाकुरक नामपर महेशापत्य (४५५-६१०)

माने-गादू (माने आ गादू दुनू भाएक सन्तान ६११-६९०)

गंगोली पं. गंगाधर, गंगाधरक दू सन्तान वीर (पर्वपल्ली-पवौली) आ नारायण, नारायणक पुत्र शूलपाणि, शूलपाणिक पुत्र हाले (प्रसिद्ध साँई प्रसिद्ध संकर्षण-खण्डवला ग्रामोपार्जक), संकर्षणक छह पुत्र- भद्रेश्वर,दामोदर, वैकुण्ठ, नीलकण्ठ, श्रीकण्ठ, ध्यानकण्ठ; श्रीकण्ठक छह पुत्र- श्यामकंठ,हरिकंठ,नित्यानन्द,गंगेश्वर, हरदत्त आ हरिकेश।

गंगेश्वरक तीन पुत्र- हल्लेश्वर,चक्रेश्वर आ पक्षीश्वर।

चक्रेश्वरक एक पुत्र-पद्मनाभ।

पद्मनाभक एक पुत्र पुरुषोत्तम।

पुरुषोत्तमक एक पुत्र ज्ञानपति।

ज्ञानपतिक दू पुत्र-उमापति आ सुरपति।

सुरपतिक तीन पुत्र- दूवे(प्रसिद्ध श्रीपति), लाखू, महिपति।

दूवे(प्रसिद्ध श्रीपति)क तीन पुत्र-हरपति,नरपति,चन्द्रपति(प्रसिद्ध चान)।

नरपतिक दू पुत्र-माने आ गादू।

चन्द्रपति(प्रसिद्ध चान)क चारि पुत्र-महादेव प्रसिद्ध थेघ(म.प्र. निवास), भगीरथ प्रसिद्ध मेघ, दामोदर, महेश।

**खण्ड २**

उपटीप

**खण्ड ३**

नगराम

मिथिला पञ्जी-विज्ञान प्रोन्नयन संस्थान, पचही हाउस, मिर्जापुर रोड, दरभंगा द्वारा मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक अतिरिक्त आन जाति मध्य सेहो पञ्जी व्यवस्था लागू कएल जएबाक गप छल (आचार्य भोलानाथ झा, १८.१०.१९८२), मुदा ई संस्थान स्वयं विलीन भऽ गेल। पञ्जीक उद्देश्य जे छल तकर विपरीत ई ब्राह्मण आ कायस्थ समुदायक मध्य आन्तरिक स्तरीकरण आनलक, मिथिलाक लोकतांत्रिक मूल्यमे कमी आनलक, पञ्जीकारक निःस्वार्थ सेवा, सत्यनिष्ठा, आ विश्वासी होएबामे कमी आएल, बिकौआ वर्गक उत्पत्ति भेल आ बाल-विवाहक प्रथा आएल(जकर कारणक पूर्वमे वर्णन भए चुकल अछि), विधवाक संख्यामे अभूतपूर्व वृद्धि भेल आ आइ धरि समाज एहिसँ देखार भऽ रहल अछि कारण विधवा-विवाहक पक्षमे आ बाल-विवाहक विपक्षमे कोनो समाज-सुधार आन्दोलन मिथिलामे नहि दृष्टिगोचर भेल आ मैत्रेयी सन विदुषीक मिथिलामे उत्पत्ति पुरान गप भऽ गेल।

अपन सुझाव आ योगदान ई-पत्र द्वारा ggajendra@gmail.com पर पठाऊ, दूरभाषसँ ०६४५४-२४००११. मोबाइल न० ०९४७००२२१६३ पर । पञ्जीकार विद्यानन्द झा “मोहन जी” मैथिल टोल, पूर्णियाँकेँ सेहो सूचित कए सकैत छी। ई आग्रह समस्त पाठक आ विशेष कऽ सौराठ, ककरौड़, ननौर, बनौली (नेपाल) आ आन-आन ठामक पञ्जीकार लोकनिसँ अछि। ई लोकनि अन्तर्जालक माध्यमसँ सूत्रबद्ध होथि।

*गजेन्द्र ठाकुर*-अपन माता श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर, पिता स्वर्गीय कृपानन्द ठाकुर, पत्नी श्रीमती प्रीति ठाकुर आ दुनू बच्चा ओम (८ साल) आ आस्था (४ साल)केँ। भाए कुमार जितेन्द्र, भौजी शालिनी (सुनीता), भतीजी स्वास्तिका, बहिन नीलिमा (नीलू दीदी), बहनोइ श्री श्रीमोहन चौधरी आ भगिनी तूलिका आ मधूलिकाक सम्बल सदैव रहल।

*नागेन्द्र कुमार झा*-पिता श्री प्रद्युम्न कुमार झा, पितामह स्व. श्री सूर्य नारायण झा आ वृद्ध पितामह स्वर्गीय श्री मंगल झाकेँ।

*पञ्जीकार विद्यानन्द झा*-अपन पिता ओ गुरूवर पञ्जी शास्त्र मार्तण्ड स्व० मोदानन्द झा ओ ज्येष्ठ भ्राता श्री युत्तलाल भायक चरण कमल मे ई शब्द-पिण्ड।माता स्वर्गीया श्रीमती रामेश्वरी देवी आ धर्मपत्नी श्रीमती गीता झाकेँ। इशहपुर ग्रामवासी माण्डर सिहौलि मूलक श्रीमान गौरीनाथ झा प्रसिद्ध "घटक" भाय सँ जे सम्प्रति नवरत्न हाता पूर्णियाँ मे सदाचार मे रहि निवास करैत छथि आ खौवाड़े महुआ मूलक रानी ढोल कर्म स्व० उपेन्द्रनाथ झाक पुत्र श्री अमित कुमार झाजीक प्रति सस्नेह। हमर पुत्री चि० सौ० प्रज्ञा ओ चि० जया केँ आ पुत्र चि० अभिनव मुरारीकेँ।

१४.०१.२००९

मकर संक्रान्ति

**-गजेन्द्र ठाकुर/ नागेन्द्र कुमार झा/ पञ्जीकार विद्यानन्द झा**